लोक वाणी के फूल

पुआम

Digitised by
Tharah Kardu

पुस्तक परिचय

कुलूत जनपद में जहां वेदकालीन, प्रागैतिहासिक, पौराणिक साहित्य एवं संस्कृति का अक्षुण्ण भण्डार मौखिक–गीत परम्परा के रूप में विद्यामान है, वहां देव–वाणी (भारथा), लोक–वाणी (स्थानीय भाषा),लोक कथा, लोकगीत, 'भँवरू' (लामण,वामणु आदि), 'बुझारतें' (पहेलियां) एवं 'पुआम'(लोकोक्तियां) आदि लोकप्रिय साहित्य की भी विपुल सामग्री भरी पड़ी है।

लेखक 'पंकज' जी ने कुलूत–जनपद के बन्जार क्षेत्र (भीतरी सराज) की लोक–वाणी में रचित पुस्तक **'लोक वाणी के फूल'** के नाम से प्रकाशित पुस्तक में **'पुआम' 'बुझारतें', भँवरू एवं कुल्लू की लोक–वाणी में संस्कृत के तत्सम एवं तद्‌भव शब्द** आदि विस्मृत हो रहे बहुमूल्य साहित्य की खोज एवं संकलन करके 'कुलूत लोक वाणी का साहित्यिक भण्डार' भरने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इस पुस्तक में अपने समाज की लोक–वाणी में लोकप्रिय शब्दावलि के माध्यम से अपनी पूर्ण देवास्था के साथ अपने पावन भावों को व्यक्त करके इस देवभूमि से सम्बन्धित भावी पीढ़ी के ज्ञानार्थ एवं स्मरणार्थ जो विपुल सामग्री प्रस्तुत की है वह व केवल स्थानीय, अपितु अन्य सभी साहित्यिक जिज्ञासुओं को भी अपनी ओर आकर्षित करेगी।

प्रकाशक

tharahkardu.in

लोक वाणी के फूल

भीतरी–सराज की 'लोक–वाणी' में प्रचलित

'पुआम' (लोकोक्तियां)

लेखक

लालदास 'पंकज'

प्रकाशक

कुलूत सांस्कृतिक मञ्च

Digitised by
Tharah Kardu

सर्वाधिकार : कुल्लूत संस्कृति प्रकाशन(पंजीकृत)
: विपाशा परिसर–बबेली, कुल्लू (हि० प्र०)
लेखक : लालदास 'पंकज'
प्रकाशक : कुल्लूत संस्कृति प्रकाशन(पंजीकृत)
सम्पादक : तेजराम नेगी
शब्द संयोजक : अश्वनी ऑटो प्रिंटिंग' एवं टाईप सैटिंग,(पंजी.)
विपाशा परिसर–बबेली, कुल्लू (हि.प्र)१७५१३८.
आवरण एवं
साज–सज्जा : ईशान नेगी
मुद्रक : ......
प्रथम, संस्करण : २००५
मूल्य : ५०/– रुपये

LOK VANI KE FOOL

by LaL DASS PANKAJ

tharahkardu.in

प्राक्कथन

"लोक वाणी के फूल"

पुआम (लोकोक्तियां)

किसी भी भाषा की प्रभावशाली वक्तृत्व–शक्ति एवं सशक्त अभिव्यक्ति का अनुमान उसमें प्रयुक्त लोकोक्तियां व मुहावरों से लगाया जा सकता है। अर्थात् लोगों के द्वारा बताई गई युक्ति, लोकोक्ति अनुभव के आधार पर जीवन की वास्तविकता और सच्चाई को परिलक्षित करती है। इससे भाषा में चमत्कार, रोचकता, एवं प्रभावोत्पादकता आ जाती है। मनुष्य को क्या उचित है तथा क्या अनुचित है, ऐसे तथ्यपूर्ण–शब्द एवं भावार्थ लोकोक्तियों द्वारा स्पष्ट किए जाते हैं। लोकोक्ति के पीछे जीवन की सच्ची घटना का समावेश रहता है। यह 'पुआम' (लाकोक्तियां) लोकवाणी के विद्वान अपने विगत जीवन–अनुभवों एवं यर्थात तथ्यों के आधार पर समयानुसार रचित उनके मुखारविन्द से प्रस्फुटित 'लोक–वाणी के फूल हैं'। इस विशेष गुणवता के अभाव में कोई भी भाषा एवं लोक–वाणी बेजान सी लगती है। इन घटनाओं के परिणाम स्वरूप भावी पीढ़ी का मार्ग प्रशस्त होता है। पुआम लोकमानस को सही दिशा और शिक्षा प्रदान करती हैं। इस लेख में कुल्लू क्षेत्र में प्रचलित कुछ लोकोकितयों का वर्णन है। इन लोकोक्तियों का मनन–शीलन एवं अध्ययन से लोक–वाणी में अपने विचारों को अभिव्यक्त करने से हमारी लोकवाणी में अधिक रोचकता एवं रसिकता आ जाती है।

ठाकुर लालदास 'पंकज'

Digitised by
Tharah Kardu

१.पाणी पीणा मूळा, व्याह करेना कुळा:—

पानी मूल—स्रोत से ही पीना चाहिए तथा विवाह अच्छे कुल से करना चाहिए। इस उक्ति का आधार 'लोक—रामायण' का एक प्रसंग है—जब राम और लक्ष्मण सीता की खोज में वन—वन घूम रहे थे, तब एक बार राम को अधिक प्यास लगी। एक नाले में सीमित मात्रा में पानी बह रहा था। राम ने उस पानी को पीना चाहा, परन्तु लक्ष्मण ने उन्हें रोका और कहा—"आप को ऐसे लघु और निकृष्ठ स्थान का पानी नहीं पीना चाहिए, थोड़ा आगे चलकर पी लेना।" आगे चलकर उन्हें एक लोहे की बावली मिली। राम ने वहां पानी पीना चाहा तो लक्ष्मण ने फिर रोक कर कहा—"यहां भी पानी बहुत कम मात्रा में है अत: आप को यहां का पानी भी नहीं पीना चाहिए। थोड़ा आगे चलकर पी लेना।" आगे चल कर उन्हें एक चान्दी की बावली मिली, वहां भी अल्प मात्रा में जल पड़ा हुआ था, अत: लक्ष्मण ने वहां भी राम को पानी पीने से रोक दिया और कहा—"हे भ्राता! थोड़ा और धीरज करो और आगे चलकर मूल—स्रोत से ही पानी पी लेना।"आगे चलकर उन्हें एक सोने की बावली मिली परन्तु उसमें एक बन्दर मरा पड़ा था, इसलिए राम को वहां भी प्यासा ही रहना पड़ा। अपने प्रिय भ्राता की प्यास से व्याकुल अवस्था देखकर लक्ष्मण ने सीता और उसके वंश पर क्रोधित हो कर लाञ्छन लगाते हुए कहा—"पाणी पीणा मूळा रा, व्याह केरना कूळा रा।"

२.ओह! तेरी नेई सीता—राणी, मेरी नेई तारा—राणी—

यह पुआम भी उपरोक्त 'लोक—रामायण' के एक प्रसंग पर आधारित है। जब सुग्रीव अपने ज्येष्ठ—भ्राता बाली द्वारा पीड़ित तथा अपनी प्रिय रानी तारा के वियोग से सोने की एक बावली में मूर्छितावस्था में पड़ा हुआ था, उसे राम ने वन की जड़ी—बूटी सुंघाकर होश में ला दिया। जब उसे पता चला कि राम की भार्य काभी कोई ले गया है, तब उसने 'पुआम' की सूरत में यह कहा—

"तेरी नेई सीया—राणी,मेरी नेई तारा—राणी।"

३.एक डाळ नी जौळा, एक भाई नी बौळा—

tharahkardu.in

जिस प्रकार चूल्हे में पड़ा हुआ लकड़ी का एक ही डाळ प्रज्ज्वलित नही हो सकता, ठीक उसी प्रकार अकेला व्यक्ति भी कुछ नहीं कर सकता। इस उक्ति का आधार भी लोक रामायण का ही एक प्रसंग है। सीता हरण के समय जब लक्ष्मण सीता को कुटिया में अकेली छोड़कर राम की खोज में वन की ओर चल पड़े, तब रावण ने पीछे से सीता को अकेली पाकर उसका अपहरण कर लिया, इसपर राम लक्ष्मण पर अति क्रोधित हुए, तब लक्ष्मण ने अति क्षुब्ध होकर कहा—"हां मेरे भ्राता! जिस उद्देश्य एवं कर्त्तव्य निभाने के लिए मैं आपके साथ वन—गमन किया था, उसे पूर्ण करने का दायित्व मैं नहीं निभा सका, अत: अब मेरा जीवित रहने का कोई अधिकार नहीं हैं, तब राम ने अपने लघु—भ्राता का क्रोध शान्त करने हेतु कुटिया के चूल्हे में अधजले लकड़ी के एक डाळ की ओर इंगित करते हुए कहा—"हे भाई! अपने क्रोध को शान्त करो, तुम इस अधजले डाल की ओर ध्यान आकर्षित करो, जिस प्रकार चूल्हे में पड़ा हुआ एकेला डाल अग्नि प्रज्ज्वलित नहीं कर सकता, ठीक उसी प्रकार मैं भी शक्ति—सम्पन्न होते हुए भी अकेला कुछ नही कर सकता, तभी हमारे स्याणे कहते हैं—

"एक डाळ नी जौळा, एक भाई नी बौळा।"

४.हौणू रा लिंघणा, बौणी सराळ, एसा लंका आई डूवण—काळ—

लंका में जब राक्षस—समुदाय हनुमान की पूंछ को जलाने के लिए कपड़ा और ज्वलनशील तेल डालने का यत्न कर रहे थे, यह देखकर तब विभीषण ने भविष्य वाणी की थी कि हनुमान की पूंछ एक लम्बी 'सराळ'(नागिन) की भान्ति बन गई है, इससे लगता है कि यह लंका नष्ट होने जा रही है। जब किसी वस्तु के नष्ट होने के आसार हों, तभी यह फिकरा कसा जाता है—

"हौणू रा लिंघणा, बौणी सराळ, एसा लंका आइ डूवण—काळ"

५.रघुनाथा रै नाएं:— किसी प्राणी को भगवान के नाम पर बन्धन—मुक्त करना ताकि ईश्वर ही उसकी रक्षा करे।

६.राम भरोसे:—

Digitised by
Tharah Kardu

किसी से सहायता लिए विना ही कोई कार्य करना।

७.राम—बाण:—

किसी कार्य को करने के लिए ऐसे साधन जुटाना जिन से कार्य की सिद्धि अवश्यम्भावी हो।

८. गुणी बान्दरे री संगत:— असभ्य मनुष्यों का सतसंग करना।

९. राम भज :—

किसी मनुष्य को कोई काम न करने के लिए प्रेरित करना।

१०.रौहे रामा रा नाओं :— किसी बात पर आश्चर्य प्रकट करना।

११.राम नाम सत्य :— किसी की मृत्यु होने पर 'मृत्यु' घोषित करना।

१२.**कामा बै नी बोलणा काल, झगड़े बै नी देणी चाल** :—यह काम कल करेंगे, ऐसा नहीं कहना चाहिए और झगड़े के लिए भी प्रोत्साहित नही करना चाहिए।

१३.**कौतली—पिंजली केरली खेऊ, वौर देआ सा खोखणी देऊ**:—

जनश्रुति है कि एक वार एक महिला खोखणी—देवता के मन्दिर में जाकर कोई वर मांगने की प्रार्थना किया करती थी। एक दिन उसके पति ने देवता की प्रतिमा के पीछे छुप कर देवता की ओर से कहा—"कौतली—पिंजली केरली खेऊ, 'वौर'(वर) देआ सा खोखणी देऊ।"

१४.**मौता री ताईं नाठे शुरू—परीणी,तेथ भी मिली काऊणी—चीणी** :—

अधिक परिश्रम करने के उपरान्त भी सुफल एवं मन वांछित फल प्राप्त न होना।

१५.**छाही री ताईं मुछा काटी, न छाह मिली न रौही मुछा** :—
किसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए भारी हानि उठाई परन्तु १४ और १५ का भावार्थ एक जैसा ही है।

१६.**बुढलू मामा री दुई नूशा, एक मनाणी ता दूजी रूशा**:—स्पष्ट है कि एक मनुष्य एक ही समय में प्रत्येक को प्रसन्न नही कर सकता। १७. **मुशैबै मिली हौळजा री पूड़ी, सौ बणू पनसारी** :—

तुच्छ मनोवृति के मानव को यदि थोड़ा सा भी धन प्राप्त हो तो वह अपने आप को बड़ा धनवान समझने लगता है।

tharahkardu.in

तुच्छ मनोवृति के मानव को यदि थोड़ा सा भी धन प्राप्त हो तो वह अपने आप को बड़ा धनवान समझने लगता है।

१८.काळे—काळे नी बोलणा, माह बोलणा :—

जो कुछ भी बोलणा हो तो स्पष्ट कह देना चाहिए।

१९.दसा री लकड़ी एकी रा बोझा :—

संगठन में अपूर्व शक्ति होती है।

२०.मृग काँडे, बाँडी मुकी गाडा लाई :—

इस उक्ति का भावार्थ है फल की प्राप्ति से पहले ही लक्षित वस्तु का बँटवारा आरम्भ करना। स्थानीय क्षेत्र की यह प्रथा थी कि जब सर्दियों में हीऊँ (बर्फ) अधिक पड़े तो सारे गांव वाले अपना—अपना शस्त्र लेकर शिकार खेलने निकलते थे, यदि कोई मृग मारा जाता तो उसका मांस सब लोगों में बांटा जाता था, भले ही एक के हिस्से में किलो या आध किलो आ जाए। इसी खेल में एक बार उन्हें उच्च—शिखर पर एक मृग दिखाई दिया तो उसे मारने से पहले ही उसका बँटवारा आरम्भ कर दिया।

२१.एक पुत्र नी लोड़ी सिंहरा भी हुआ :—

ऐसी धारणा है कि सिंह का एक ही बच्चा होता है। शक्तिशाली होने पर भी यदि दुर्भाग्य से उसकी मृत्यु हो जाए तो वह भी निःसन्तान को प्राप्त होकर अधिक दुःखी होगा। भावार्थ यह है कि इकलौता बच्चा अधिक दुःखदायी ही होता है।

२२.किछ गेहूं शील्हे (गीले) किछ घौर्ठ ढीलै :—

आटा तभी बारीक पीसा जाता है जब घराट की फिटनैस (अवस्था) अच्छी हो, इसके साथ—साथ गेहूं (कोई भी अन्न) गीला न हो। भावार्थ यह कि ढीले और असावधानी से किया कार्य मे
सफलता प्राप्त करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

२३.घौरा आगै तीर्थ, गँगा किजीबै जाणा :— जिस गृह में पूजनीय कुल—देवता, माता—पिता, आदरणीय ज्येष्ठ भ्राता तथा पत्नि के लिए देव—तुल्य पति हो तो उसे गंगा जाने की कोई आवश्यकता नहीं रहती।

२४.खादळी बौही, निम्बळी भी फिरा सा :—

Digitised by
Tharah Kardu

यदि कभी नदी का जल गंदला हो जाता है तो वह कभी न कभी निर्मल भी हो जाता है। यदि कभी मुसीबत का पहाड़ टूट जाता है तो वह स्थाई नहीं रहता,सुख की हसीन घड़ियां भी प्राप्त होंगी। बुरे दिन समाप्त हो जाने पर अच्छे दिन भी लौट आएंगे। कोई भी वस्तु इस संसार में स्थाई नही रहती।

२५.माहूं क्षिश्टा, मौखर मीठा :—

मधु—मक्खी को कोई नहीं खाता क्यों कि वह अभक्ष्य है, किन्तु उसके द्वारा बनाए हुए मधु को मीठा होने के कारण सब कोई खाते हैं। मानव का स्वभाव ही ऐसा है कि वह मन—वांछित वस्तु का उपभोग तथा अवांछित वस्तु का त्याग करता है।

२६.गोबर—गणेश :—

कुछ धार्मिक कार्यों में गोबर से गणेश की मूर्ति बनाकर उसकी स्थापना की जाती है। कार्य सम्पन्न होने पर उसे फैंक दिया जाता है। फिर उसका कोई महत्व नहीं रहता। इसी प्रकार प्रभावहीन और महत्वहीन व्यक्ति को गोबर—गणेश कहा जाता है।

२७.एक घौर छाडा डायण भी :—

यह लोक मान्यता है कि यदि किसी गांव में डायण की नज़र लगी हो तो वह उस गांव का एक घर छोड़कर शेष सब घर को नष्ट कर देती है। इसलिए सार्वजनिक शत्रु से अपना परिवार बचाने के लिए ऐसा कहा जाता है।

२८.होरे रै घाघरे मेरे लटोरे, आज की जातरा ओरे कि पोरे :—

एक दीर्घ—सूत्री ने ऊन कात कर उसके रेटु (गोले) तो बना रखे, आलस और दीर्घ—सूत्रता के कारण कपड़ा तैयार सका। जब मेला आया तब अन्य लोगों के नये और अच्छे कपड़ैदेख कर ऐसा कहने लगा। समय आने पर आलसी और दीर्घ—सूत्री पछताने लगते हैं।

२९.एकी रा दूध खाईया एकै बुध :—

बकरी चराने वाले गडरिए प्रतिदिन झुण्ड की बकरी का ही दूध प्रतिदिन पीते हैं, वे एक ही लय में चलने बाले और भोले—

tharahkardu.in

भाले तथा एक ही सुध–बुध वाले होते हैं। इसी प्रकार के मानव को ही लक्ष्य करके ऐसा कहा जाता है।

३०.राजा–सुखी ता परजा–सुखी :–

कुशल राज्य प्रशासन से यदि प्रशासक सुखी और सन्तुष्ट है तो उसकी प्रजा भी उसी प्रकार सुखी और सन्तुष्ट रह सकती है–'यथा राजा तथा प्रजा'।

३१.नांढा की नाचा, फाळ्वा पाट :–

गूंगा–व्यक्ति प्रथम तो वह नाचेगा नहीं, यदि वह नाचने पर तुल जाए तो रुकेगा नहीं और ऐसा नाचेगा कि आंगन में लगा पत्थर का स्लेट भी फोड़ देगा। ऐसा उस व्यक्ति के विषय में कहा जाता है कि जो किसी विवाद में पड़ता नहीं, यदि कभी ऐसा अवसर आ भी गया तो वह कभी पीछे हटेगा नहीं।

३२.बिझै–सरगै बीज :–

निर्मल आकाश से बिजली गिरने की कोई आशंका एवं सम्भावना नहीं की जा सकती। यदि किसी पर अचानक कोई आपत्ति आ पड़े तो उसे ऐसा आभास होता है कि निर्मल आकाश से बिजली गिरी हो–"बिझै सरगै री बीज"

३३.बारी उठदी, बारी बेशदी :–

संसार में मनुष्य सांसारिक कार्य निभाते हुए बृद्धावस्था को प्राप्त होकर मृत्यु को वरण करते हैं। फिर उनकी सन्तान स्थानापन्न होती है। उनके साथ भी ऐसा ही होता है। प्रकृति का यह नियम युगों–युगों से यथावत है।

३४.भूआ रै भाए :–

भूसा–घास का मूल्य सब से कम आंका जोता है (परन्तु आजकल नहीं)। यदि कोई वस्तु हमें बहुत सस्ती प्राप्त होती है या बिक जाती है तब यही कहा जाता है कि–"भूआ रे भाए"

३५.काली बकरी रा काळ्जा नी :–

किसी स्थान पर काली बकरी की बलि (बौळी) दी गई थी। जो लोग बकरी का मांस पकाने वाले थे, उन्होंने

Digitised by
Tharah Kardu

चोरी से बकरी का कलेजा स्वयं खा लिया। प्रथानुसार बकरी का कलेजा उपस्थित लोगों में प्रसाद के रूप में बांटना पड़ता है, परन्तु रसोंइए कहने लगे कि'काली बकरी का कलेजा था ही नहीं'। जो इस प्रकार का झूठा बहाना बनाता है तभी ऐसा कहा जाता है।

३६.स्याणा नेणा ढोला आन्दरै भी :—

एक विवाह में सभी वाराती युवक थे। वे किसी बृद्ध—सज्जन को अपने साथ वाराती नहीं ले जाना चाहते थे, परन्तु किसी ने चुपके से एक बृद्ध को एक ढोल के अन्दर छिपा कर ले गए। वधु—पक्ष ने वर—पक्ष के लिए कोई समस्या खड़ी कर दी जिसका समाधान कोई नहीं कर सका। अन्त में उस ढोल के अन्दर से उस बृद्ध की आवाज़ आई और उस बृद्ध ने उस समस्या का समाधान चुटकी में कर दिया। तभी कहते हैं कि अनुभवी बृद्ध पुरुष को सदैव साथ रखना चाहिए।

३७.शणोर—डुआर सौभी बै :—

एक बार एक वृद्ध के वहू—बेटे ने उसे घर से दूर बनी एक गुफा में जाकर रख दिया। वह बेचारा नंगा—भूखा उस गुफा में तड़प रहा था। एक दिन कोई पुण्यात्मा—दम्पति अपने एक अबोध बालक के साथ उस वृद्ध को खाना लेकर वहां पहुंचे तथा उसे खाना और पहनने—ओढ़ने का बहुत सा सामान दिया और उससे आर्शीवाद प्राप्त किया। तब उनके बच्चे ने उनसे पूछा—"पिता जी! यह बुड्ढा इस गुफा में क्यों रहता है।"इसपर उसके पिता ने कहा—"बेटा! यह
'शणोरे—डुआर' सब बृद्ध आदमियों के लिए बना है, वृद्ध होने पर हमें भी शायद यहीं रहना पड़े।

३८. खाखी आन्दरै दान्द, खाखी बाहर हाड़कै:—

किसी गोपनीय बात को गुप्त रखने हेतु यह उक्ति प्रयोग में लाई जाती हैं। घर की गुप्त बात, घर के अन्दर रहने से ही उस घर का सम्मान है।

३९. माली मांगे गाश, धोबी बीझा :—

दो परस्पर विरोधी—पक्ष के एक साथ प्रसन्न रखना असम्भव है।

tharahkardu.in

४०.माटी री देवी स्नाना बै :—

यदि मिट्टी की देवी (प्रतिमा) को बार—बार स्नान कराया जाए तो वह गलकर नष्ट हो जाती है। इसी प्रकार जो चीज़ अल्प मात्रा में हो तो उसे भी यदि बार—बार व्यर्थ में ही व्यय किया जावे तो वह शीघ्र ही समाप्त हो जाती है।

४१.पीपला बागर नी मुकदी :—

पीपल के पत्ते हर समय हिलते रहते हैं, ऐसा आभास होता है कि जैसे उन पत्तों को हर समय हवा हिलाती रहती हो। ऐसा ही उस व्यक्ति के विषय में कहा जाता है जिसे हर समय कोई न कोई रोग लगा रहता है।

४२. मणिकर्णा ! गेहूं रै डूबणा ता ज़ौ रै तौरणा :—

मणिकर्ण के तप्त एवं खौलते हुए जलकुण्ड में किसी भी आटे की सीडें (बड़े आकार के समोसे) बनाकर छोड़ दें तो कुछ ही क्षण में वे पक कर जलकुण्ड के ऊपर उभर कर आते हैं। एक बार किसी गांव के व्यक्ति ने गेहूं के आटे की सीडें बना कर तप्त—जलकुण्ड में छोड़ दीं, उससे पहले किसी अन्य व्यक्ति ने भी जौ के आटे की सीडें डाली हुई थीं जो गेहूं की सीडों से पहले ही पक कर ऊर आ गई। उसने उन जौ की सीडों को अपनी समझ कर जब वह एक किनारे बैठ कर खाने लगा तो उसने देखा कि यह तो जौ की सीडें हैं, तब वह अचम्भित हो कर कहने लगा—"मणिकर्णा ! गेहूं रै
डूबणा ता जौ रै तौरणा।"

४३.घोण घुशिया कराहड़ा बणाणा :—

एक बार कुछ ग्रामीणों ने (जो मलाणे के बताए जाते हैं) किसी अन्य गांव में जाकर रात व्यतीत करने के लिए एक कमरा मांगा। उस कमरे में एक चारपाई और एक 'घण'(लोहे का ४—५ किलो वज़नी बड़ा हथौड़ा) रखे हुए थे। जब उन्हें लकड़ी चीरने के लिए कुल्हाड़ी की आवश्यकता पड़ी,तब उन्होंने समझा कि कमरे में रखा घण ही लकड़ी फाड़ने के लिए रखा हुआ है। तब वे उस घण को बारी—बारी से पत्थर पर घिस कर तेज़ करने लगे।

Digitised by
Tharah Kardu

जब स्थानीय ग्रामीण ने पूछा कि तुम यह क्या कर रहे हो, तो वे कहने लगे कि हम इसे लकड़ी काटने के लिए घिस कर कुल्हाड़ी बना रहे हैं। तब उस ग्रामीण ने कहा—"घौण घुशिया कराहड़ी नी बणदी। मैं तुम्हें कुल्हाड़ी लाकर देता हूं। तत्पश्चात् जब वे सोने लगे तो उन्होंने देखा कि चारपाई तो एक ही है और सोने वाले बहुत हैं, तब उन सब ने चारपाई की ओर मुंह करके और अपनी दोनों टांगों को चारपाई पर रख कर सो गए। जब भी कोई असम्भव कार्य करना पड़े, तभी यह उक्ति चरितार्थ होती है।

४४.फेटी कुल्हा रा पाणी :—

जिस कूहल (छोटी—नहर) का पानी समतल भूमि पर फैल कर निर्विघ्न बह रहा हो और कोई रुकावट न हो, ठीक इसी प्रकार किसी के प्यार के मिलन में कोई रुकावट न हो, तथा उनका प्यार निर्विघ्न चल रहा हो, तभी यही कहा जाता है कि इनका प्यार तो 'फेटी—कूहल का पाणी' है।

४५. फीम फूलणी :—

किसी समय कुल्लू में अफीम की अथाह उपज होती थी। जिससे अच्छी—भली आय होती थी। यदि किसी को किसी भी स्त्रोत से अधिक आय होने की सम्भावना हो तो तब कहा जाता है कि इसकी तो खूब 'फीम फूली' है।

४६.दूध रा दूध, पाणी रा पाणी :—

ठीक न्याय करना, ईमानदारी वर्तना।

४७.पराणे पाथे फूटे/पूरना :—'पाथा' अनाज मापने का एक पराणा उपकरण है, जब पुराने आचार—व्यवहार, रीति—रिवाज़ ही समाप्त हो जाऐ तो पुरानी बातों का कोई महत्व नहीं रहता।

४८.सूने रै तोले/भाव :—

जब उत्पादन कम हो तथा मांग अधिक हो तो वह वस्तु अधिक दाम देने पर भी बहुत कम मात्रा में ही प्राप्त होती है, तभी वह वस्तु सोने के भाव बिकती है।

tharahkardu.in

वस्तु अधिक दाम देने पर भी बहुत कम मात्रा में ही प्राप्त होती है, तभी वह वस्तु सोने के भाव बिकती है।

४९.नाके निसरदा केरना :—

नाक में यदि अति सूक्ष्म पदार्थ भी पड़ जाए, तो वह छींक ला देता है। यदि वह पदार्थ इतना प्रभावहीन हो जाए जो कि छींक लाए विना नाक में से गुजर जाए, तो उसे नाके निसरदा कहते हैं। अति उदार और प्रभावहीन व्यक्ति को ऐसा कहते हैं।

५०.नाके बुलाके सित :—नाक सम्मान का चिन्ह है और बुलाक नाक का एक आभूषण है, अतः यह दोनो सम्मान के द्योतक हैं। जब किसी का सम्मान समाप्त होता है, तब कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति नाके बुलाके सित गया।

५१.नाक काटणा/कटाणा :—अपमानित करना/कराना।

५२.नाके धूं देणा :—तंग करना, अति दुःखी करना।

५३.नाके री सीधे:—विलकुल सीधे चलना,इधर—एधर न देखना।

५४.नाक डाहणा:— अपनी इज्जत—आबरू रखनी।

५५.नाका हेठे:—विलकुल निकट, पास ही।

५६.नाकै छींटा छूटणा:—तंग आना, उदासीन होना।

५७.माथै चुळकदै, पेट खळकदै:—

बाहरी ठाठ—बाठ तो अच्छे हैं परन्तु घर/पेट खाली है, ऐसे मिथ्याचारी लोगों के प्रति ऐसा ही फिकरा कसा जाता है।

५८.लोऊदा भाळा सी सेब कोई, खाऊदा नी भाळदा कोई:—

पहरावे से ही व्यक्तित्व की पहचान होती है, खाना क्या खाया है, इसकी पहचान कोई नही कर सकता।

५९.माण्हू री पछियाण—पहनाण:—पहरावे से ही पता लगता है कि किसी की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति कैसी है।

६०.जौसे री बेटी, तेइरी मूछ फेटी:—

बेटी के लिए योग्य वर ढूंढना, उचित दहेज़ देना, कौमार्य/सतित्व की रक्षा करना इत्यादि कई प्रकार की समस्याएं आती हैं।

Digitised by
Tharah Kardu

पिता को विनीत भाव ही रखना पड़ता है, अतः उसके स्वाभिमान को ठेस पहुंचने की सम्भावना बनी रहती है।

६१.सराही बेटी, चमारले पेठी:—

यदि बेटी पर नियन्त्रण न रखा जाए और मनमानी करने दी जाए तो वह अनुचित मार्ग अपनाती है, जिससे पिता के स्वाभिमान को ठेस पहुंचती है।

६२.बेटी वौरदै गंगा तौरदै एज़ा कई :—

युवा बेटी का रिश्ता जोड़ना एक पवित्र गठबन्धन है, यदि कोई बेटी का 'हाथ मांगने' (सम्बन्ध बनाने) माता—पिता के पास आए तो प्रथम दृष्टि में ही उस पवित्र सम्बन्ध को ठुकराना नहीं चाहिए। माता—पिता का कर्त्तव्य है कि वर—पक्ष की स्थिति एवं योग्यतानुसार यह पवित्र सम्बन्ध बनाने का यत्न कर लेना चाहिए। ठीक इसी प्रकार गंगा जैसी पवित्र नदी में भी अवश्य स्नान करना चाहिए, इस से तन—मन की पवित्रता के साथ—साथ एक पुण्य का कार्य भी माना जाता है।

६३.घासरी चौरनी, तेईरी मौरनी :—

जिस गृह—स्वामी के पास घास चरने एवं अन्य आहार खाने वाले पशु—धन हों जिस से उसे लाभ भी होता है। समय आने पर पशु—धन की हानि होने की भी पूरी सम्भावना बनी रहती हैं, अर्थात जिस के पास वस्तुऐं हैं उसी की हानि भी होती है, यदि किसी के पास कुछ भी न होतो उसकी हानि भी क्या होगी।

६४.एई रै नी कुप्पू शुण्हिना :—

वसन्त—ऋतु के आगमन पर एक कुप्पू नाम की चिड़िया प्रकट होती है जिसका आगमन और मधुर—आवाज़ किसी शुभ कार्य के लिए शुभ और अशुभ—कार्य कार्य करते हुए अशुभ ही मानी जाती है। किसी भी काम करते हुए यदि इस पक्षी की आवाज़ सुनाई दे तो वह कार्य पूर्ण होने की पूरी—पूरी सम्भावना बनी रहती है। यदि कोई पशु स्वस्थ अवस्था में अपना आहार का सेवन कर रहा होतो उसके पूर्ण स्वस्थ रहने की पूरी—पूरी सम्भावना होती है परन्तु यदि कोई जीव अस्वस्थावस्था में हो

tharahkardu.in

और उसके जीने की सम्भावना कम हो तो कहा जाता है कि 'एई रै नी कुप्पू शुण्हिना' अर्थात कुप्पू की आवाज़ सुनने से पूर्व ही मृत्यु को प्राप्त होगा।

६५.छेल्ही निपटी कि बाकरी लागी पटिकदी :–

जब कोई बूढ़ी स्त्री हार–शृंगार करके फुदकने अर्थात उछल–कूद करने लगे, तभी उसके लिए ऐसा कहा जाता है अर्थात जब युवावस्था में थी तब तो उसकी उछल–कूद दिखाई नहीं दी, जब बूढ़ी हो गई तब उसे उछल–कूद करने का शौक पैदा हो गया।

६६.ब्रघ्यही दी जा ब्रागा लोड़ी :–

जो पशु बाघ द्वारा डराया हुआ होता है वह बाघ को अचानक देख कर तथा उसे अच्छी तरह पहचानने के लिए उसी की ओर जाता है। यह पशु की स्वाभाविक विवशता है, अर्थात जो मनुष्य पहचानते हुए भी अपना अहित करने वाले के पीछे–पीछे दौड़ता है, उसी के लिए ऐसा कहा जाता है।

६७.बांदरै रै नी गूणी री छाळा–छाळ देईंदी :–

गूणी (लंगूर) एक पेड़ से अधिक दूरी पर खड़े दूसरे पेड़ पर लम्बी छलांग लगाने की जो क्षमता होती है वह बन्दर में नहीं होती। भावार्थ यह है कि जो कार्य एक बलवान कर सकता है वह कार्य निर्बल से असम्भव है।

६८.कुत्ते बराळे रा घौर :–

अर्थात! कुत्ते और बिल्लियों का घर। कुत्ते और बिल्लियों में स्वाभाविक बैर होता है, जिस घर में इन दोनों का बोलवाला हो वहां सदैव ही कलह की आशंका बनी रहती है। ऐसा उस घर के लिए कहा जाता है जिस घर में सदैव कलह होता है।

६९.बांढे–डागे रा खुड़ :–

यह ऐसी गौशाला होती है। जिस में बैल ही बैल होते है, अर्थात ऐसा घर जिस में सब भाई अविवाहित होते हैं।

Digitised by
Tharah Kardu

७०.कुत्ते हौळ नी धीशा :–

हल में बैलों के स्थान पर कुत्ते जोते जाऐ तो खेत में हल एक इंच भी आगे नहीं खिसक सकता। अर्थात सामर्थ्यवान का काम निर्बल से सम्भव नहीं।

७१.जौसरै धौण, तिन्हा रै बौण :–

धौण पशु–धन को कहते हैं। जिस के पास पशुधन होता है वही वन (चरागाह) का लाभ उठा सकता है।

७२.भालू साही एकै आंज :–

भालू जब मक्की आदि फसल को खाने और उजाड़ने लगता है तो खाने के साथ–साथ उसे दस्त भी होने लगते है। अतः लोगों की धारणा है कि भालू की एक ही आंत होती है उसका अमाशय नहीं होता। इसलिए खाया–पिया उसके पेट में नहीं ठहरता। ऐसे आचरण वाले व्यक्ति के लिए ऐसा ही कहा जाता है।

७३.जेतरै गौभ, तेतरै लौढ़ :–

'लौढ़' उस भेडू को कहते हैं जो गर्भाधान के लिए उपयुक्त हो और जो गर्भाधान के लिए अण्डकोष–रहित कर दिया गया हो, उसे 'रुभ' कहते हैं अर्थात उसे पौरुषविहीन (नामर्द) की संज्ञा से विभूषित किया जाता है। जिस घर में सब अपने आपको बलवान एवं पौरुष से सम्पन्न (लौढ़–मर्दानगी से परिपूर्ण) समझते हैं, उन पर ही ऐसी उक्ति प्रयोग में लाई जाती है।

७४.कुत्ते बै लागा हाडी रा स्वाद :–

मांस–रहित हड्डी को चाटने से कुत्ते के अपने मुंह से ही हड्डियों के रगड़ से खून टपकने लगता है। वह अपने ही खून को हड्डी से निकला हुआ खून समझ कर बड़े स्वाद के साथ चाटने लगता है। यह उक्ति उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो सदैव विषय–भोग में संलिप्त रहता है।

७५.काळे काओ मांझै शेता काऔ :–

यह उक्ति उस के लिए प्रयुक्त होती है, जिसके आकार,

tharahkardu.in

विचार एवं रूप—रंग में स्थानीय मानव एवं जीव से सर्वथा भिन्न दिखाई देते हो।

७६.काळी भेड़ :—

जिस प्रकार सफैद—भेड़ों के रेवढ़ में काली—भेड़ अलग सी दिखाई देती है ठीक उसी प्रकार सज्जनों के मध्य में दुर्जन—व्यक्ति भी अलग ही दिखाई देता है।

७७.न हौळा बै, न खौळा बै :—

बैल के दो ही काम होते हैं, या तो वह हल जोतने के काम आता है या खलिहान में अनाज गहने (अनाज का मण्डन) के काम आता है। जो बैल एक काम भी न कर सके तो उसके लिए कहा जाता है कि 'यह न हौळा बै, न खौळा बै'।

७८.बाशदी बै गाळ :—

जो भेड़ अथवा गाय बोलती है उसे ही गालियां पड़ती हैं। ठीक इसी प्रकार जो व्यक्ति अधिक बोलता है उसी की अधिक आलोचना होती हैं।

७९. भेड़ा री खाळा भेड़िया :—

एक भेड़िए ने भेड़ की खाल पहनी और भेड़ों के झुण्ड में घुस गया। उसे तब पहचाना गया जब बहुत सी भेड़ें काट कर खानी आरम्भ कर दी। ऐसा शत्रु जो मित्र के भेस में आकर अधिक हानि पहुंचाना आरम्भ कर दे अर्थात विश्वासघाती।

८०.कानू—काळ :—

आटा छानकर निकले हुए 'कानू'(छिलके वाला आटा जो मनुष्य के उपयोग का न हो) जिसे 'तूश' भी कहते हैं, के आटे से उस कुत्ते को रोटी दी जाती है जो न पहरा करता है और न ही पशुओं की रक्षा करता है। निकम्मे कुत्ते और व्यक्ति के लिए ऐसा ही कहा जाता है— 'कानू—काळ'।

८१.गाधे री गौऊ नी बणदी :—

आकार, प्रकार, विचार, जाति एवं रूप—रंग में जो सर्वथा भिन्न हो, उसे

Digitised by
Tharah Kardu

उसे एक समान रूप—रंग एवं जाति में परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

८२.गधा रोआ बोझा बै :—

जब गधे पर बोझ न हो तो वह ज़ोर—ज़ोर से हींगने लगता है। जब उस पर बोझ लादा जाए तभी वह शान्त रहता हैं। यह उस व्यक्ति के लिए कहा जाता है जो किसी न किसी कार्य में लगा रहना चाहता है।

८३.कुत्ते रै काने केऊंटी, बान्दरै हाथै नरेळ :—

केऊंटी कान का एक गहना होता है, उसे यदि कुत्ते के कान में पहनाया जावे तथा बन्दर के हाथ में 'नरेल' (हुक्का) दिया जावे तो ये दोनों बातें हास्यप्रद होंगी। ठीक उसी प्रकार किसी व्यक्ति को ऐसे कार्य पर लगाया जावे, जिसे वह जानता ही न हो तो भी वह काम हास्यास्पद का विषय बन जाता है।

८४.फिटदी लागा माटे :—

जिस भेड़ की मृत्यु शीघ्र होने वाली होती है, वह मिट्टी खाना आरम्भ कर देती है। इसी प्रकार जिस मनुष्य के बुरे दिन आने वाले हों, वह उपद्रव खड़े करता रहता है। 'विनाश काले विपरीत बुद्धि'।

८५.भेड़ चाल :—

भेड़ों का यह स्वभाव है कि वे विना सोचे—विचारे एक दूसरे के पीछे चल पड़ती हैं। इसी प्रकार जो लोग विना सोचे समझे अनाड़ी नेता के पीछे चल पड़ते हैं, उन की ऐसी मानसिकता को ही भेड़—चाल कहा जाता हैं।

८६.टुटळू रै घौरै गरोझण स्याणा :—

टुटळू (कठफोड़ा) एक छोटी सी चिड़िया होती है। वह पेड़ के तने में छेद करके उसके भीतर अण्डे देती है। एक दूसरी हरे रंग की चिड़िया भी उसी कोटर (खोल) में अण्डे देती है क्योंकि वह स्वयं पेड़ में छेद नहीं डाल सकती। जब अण्डे पर बैठने(गावा—सेने) का समय आता है, तो वह स्वयं उस पर बैठ कर उन्हें सेती है। तब वह टुटळू को उसके अण्डे के पास तब तक फटकने भी नहीं देती जब तक बच्चे उड़ने योग्य नहीं होते,

tharahkardu.in

उन बच्चों को वह हरे रंग की चिड़िया जिसे 'गरोझण' कहते हैं, पालती है। जिस प्रकार कोयल के बच्चे कौए के घौंसलों में पलते हैं। ये दोनों चिड़ियां केवल पेड़ के खड़े तने या शाखा पर चिमट कर रहती हैं और उन्ही शाखा पर थोड़ा–थोड़ा आगे खिसकती रहती हैं। यदि किसी के घर के स्वामी के स्थान पर अन्य कोई आकर कर्त्ता–धर्त्ता बन जाए, तो उसपर यह उक्ति चरितार्थ होती हैं।

८९.जौसरे धौण, तैरा वौण :–यदि चरागाह पर्याप्त हो तो पशु–धन की बढ़ोतरी अपने आप हो जाती है।

९०. कूखड़(कुक्कड़) लड़ाई :–

जिस प्रकार दो कुक्कड़ आपस में लड़ते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी लड़ पड़ें तो उसे कुखड़ लड़ाई कहते हैं। कुक्कड़–लड़ाई लम्बी चलती है।

९१.सर्पा रा निर्विषा नहीं होन्दा :–

अपने वंश का प्रभाव कभी भी कम नहीं होता। दुष्ट–वंश की सन्तान भी प्राय: दुष्ट ही निकलती है।

९२.बीछू काटे रा मन्त्र ढाई गुळै :–

छोटे शत्रु को जीतना सुगम होता है।

९३.समुद्रा रौहणा, ता मगरमच्छा संगै बैर नी डाहणा:–

जिस स्थान पर रहना है वहां के प्रभावशाली व्यक्ति से दुश्मनी रखना हानिकारक है।

९४.बाकरै व्याली :–

विना कारण बकरे काट कर रात्रि का भोज प्रस्तुत करना। अनावश्यक एवं अपनी क्षमता से अधिक व्यय करना।

९५.मगर माछा रे आछू :–

छद्म वेश धारण करना। कपटपूर्ण आचरण अपनाना।

९६.खच्चर रौहा मरने बै गभण :–

खच्चरी गर्भ धारण नहीं करती, यदि वह गर्भ धारण करती भी है तो वह

Digitised by
Tharah Kardu

तो वह मर जाती है। अयोग्य मनुष्य द्वारा कोई कठिन व असम्भव कार्य हाथ में लेना।

९६.खच्चर रौहा मरने बै गभण :-

खच्चरी गर्भ धारण नहीं करती, यदि वह गर्भ धारण करती भी है तो वह मर जाती है। अयोग्य मनुष्य द्वारा कोई कठिन कार्य हाथ में लेना।

९७.बोहू बरालै नी मूशै मारिदै :-

यदि बहुत सी बिल्लियां चूहे मारने के लिए एक स्थान पर रखी जाएं, या तो वे आपस में ही लड़ती रहती हैं या खेलती रहती हैं। चूहे मारने की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। ठीक इसी प्रकार यदि बहुत से लोग किसी काम पर लगाए जाएं, तो वे काम कू अतिरिक्त गप्पे मारने में ही सारा समय लगा देते हैं।

९८.रिखी रै बोल, टांगी रै घाओ :-

पत्थर, लकड़ी, और धातु पर खुदाई करने वाले को टांगी कहते हैं। जिस प्रकार टांगी की खुदाई अमिट होती है, ठीक उसी प्रकार ऋषि के बोल (बचन) भी कभी नहीं मिटते। सदा सत्य रहते हैं।

९९.गडछुम्बू-जमाणी हौआ बुरे :-

देवता के रथ को उठाने और सहारा देने वालों को क्रमशः जमाणी और गडछुम्बू कहते हैं। यह लोग कभी-कभी रथ से झूठे संकेत भी कराते हैं।किसी व्यक्ति के सलाहकारों को भी इन्ही नामों से पुकारा जाता है।

१००.ग्रोष्टू री आग :-

जब किसी पर देवता का प्रकोप होता है तो वह तत्काल प्रकट नहीं होता, अपितु ग्रोष्टु की आग की तरह धीरे-धीरे सुलगता रहता है। तभी उसे ग्रोष्टु री आग कहते हैं।

१०१.ताता दोष :-

जब देवते का प्रकोप तत्काल अपना प्रभाव दिखाए, तो उसे 'ताता-दोष'

tharahkardu.in

कहते हैं।

१०२.हेरी दोष चाली, 'तूश' जा निकली :—

छाने हुए आटे को कितनी ही बार छानते जाओ, हर बार 'तूश' निकल ही जाता है। इसी प्रकार जब दोष की खोज की जाए तो कुछ न कुछ दोष निकल ही जाता है।

१०३.म्हारे परमेशरा छाड़ :—

जब सूरज अथवा चन्द्रमा को ग्रहण लगता है, तब लोग जोर—जोर से पुकारते हैं—"म्हारे परतशरा छाड़" उनकी यह मान्यता है कि उस समय राहू एवं केतु नामक दो अछूत—ग्रह हाथ में
चमड़े कील 'यंग' लेकर उन्हें स्पर्श करने का प्रयास करते हैं। क्योंकि उन्हें उनका कुछ ऋण देने को है। लोगों की यह चीख—पुकार व्यर्थ होती है। इसलिए हर व्यर्थ की चीख पुकार को ऐसा ही कहा जाता है।

१०४.घोषे दोष :—

जिस पाप के विषय में कानाफूसी होने लगे,वही दोष बन जाता है, अन्यथा किसी पाप को पाप नहीं माना जाता।

१०५.पाप होर पून गझियाए बढ़ा, बखाणिए घटा:—

अपने पाप को जितना अधिक बखान किया जाए, उतना ही वह घटता जाएगा और पुण्य को जितना छुपाए रखोगे, उतनी ही उसकी कीर्ति बढ़ती जाएगी। पुण्य और पाप को जितना छुपाओ उतनी ही उनकी बढ़ोतरी होती जाती है परन्तु उनका अधिक प्रचार करने पर घटते हैं।

१०६.परमेशर हौआ सौभी रा :—

भगवान सभी सच्चे मानव के साथ होता है। किसी के साथ अनदेखी और अशिष्टता का व्यवहार नहीं करना चाहिए।

१०७.ठारा—करडू रा कुळू—मकड़सा :—

ऐसा कहा जाता है कि महाभारत के पश्चात् विदुर जी ने कुलूत—जनपद की ओर प्रस्थान किया था। यहां उनके दो पुत्र हुए, एक का नाम 'भोट' था जिसे स्पिति का राज मिला, दूसरे का नाम 'मकड़' था, उसे कुल्लू का राज मिला, जिसकी राजधानी मकड़ाहर' थी जो हुरला नामक गांव के पास व्यास नदी के छोर पर बसा हुआ था।

Digitised by
Tharah Kardu

आधुनिक 'कुल्लू–जनपद को कुलूत और उसकी राजधानी 'मकड़ाहर' के नाम से प्रसिद्ध थे। यहां हर गांव में अनेक देवता प्रकट हो गए। उनको जमदग्नि–ऋषि एक करड़ू (एक टोकरी) में डाल कर अपने साथ लाया था। इसीलिए इन देवताओं को 'ठारा–करड़ू कू नाम से ही पुकारा जाता है।

१०८. धर्मा री दासी लक्ष्मी :–

जो व्यक्ति धार्मिक कार्यों में संलग्न रहता है उसके पास धन–लक्ष्मी और पशु–धन स्थाई रूप से रहता है।

१०९.देऊ भाषणी नी केरनी,गंगा नाशणी केरनी :–

देवते को कुछ भाषणा (भेंट) की प्रतिज्ञा नहीं करनी चाहिए,क्योंकि प्रतिज्ञा काफी समय व्यतीत होने पर भी पूरी नहीं हो सकती। इससे तो गंगा–स्नान की कामना करनी चाहिए, किसी कारण से यदि गंगा न भी पहुंच सके तो कोई आपत्ति नहीं आती।

११०.खड़ी गूंठी कराणी :–

किसी बात की सच्चाई को सिद्ध करने के लिए,
ईश्वर को साक्षी बनाकर ऊपर आसमान की ओर उंगली उठाकर
अपनी सच्चाई प्रकट की जाती है।

१११.ठाण्डी–आग :–

ठण्डी आग देवताओं के पास होती है, क्योंकि वे यदि किसी को नष्ट करना चाहें तो वे विना ताप के ही किसी को नष्ट कर सकते है।

११२.गंगा रा नाई :–

किसी के शोक (दु:ख) में हरिद्वार जाकर अपने सिर के बाल (मुण्डन) काटे जाते हैं। बाल काटने के लिए वहां के नाई मुंह–मांगे दाम वसूलते हैं। इसलिए अनधिकृत रूप से दाम वसूलने वाले व्यक्ति को हरिद्वार के नाई से तुलना की जाती है।

११३.भांगर झाणी :–

उजाड़ स्थान पर भांग ही अधिक पैदा होती है। यदि किसी को उजाड़ने की धमकी देनी हो तभी ऐसा कहा जाता है। वह घर नष्ट होकर

tharahkardu.in

उजाड़ स्थान पर भांग ही अधिक पैदा होती है। यदि किसी को उजाड़ने की धमकी देनी हो तभी ऐसा कहा जाता है। वह घर नष्ट होकर वहां भांग ही उपजती है।

११४.ज़ौ त्राम्बळे जलाणे :—

सूक्ष्म से सूक्ष्म यज्ञ को जौऊ जलाणा कहते हैं। यह यज्ञ प्रायः घर की शुद्धि के लिए किया जाता है। जाम्बळे चावल की तरह उवाले (उपाले) हुए गेहूं को कहते हैं। इस शब्द को जोड़ने से अल्पाहार देने का संकेत मिलता है।

११५.नारायण/देऊ जाणे :—

खड़ी—उंगली करने के स्थान में नारायण या देऊ जाणे या किसी अन्य देवी—देवता का नाम लिया जाता है। इस का अर्थ भी वही है जो खड़ी उंगली करने का है। यदि जाणे शब्द को पहले बोला जाए तो उसका अर्थ अपनी अनभिज्ञता दर्शाना है।

११६.जय—जय शिवशंकर, कांटा लागे न कंकर :—

यह वाक्य भांग पीने वाले लोग भांग पीने से पहले बोलते हैं। अर्थ स्पष्ट है।

११७.लगे दम, मिटे गम :—

यह भी भांग पीने वालों का वाक्य है।

११८. पांजुआ—वेद :—

व्यर्थ और अनुचित बात को पांजुआ—वेद कहते हैं। वैसी बात वेद के विपरीत होती है।

११९.सूरजा बेठे सजीवा :—

'सजीवा' दीपक को कहते हैं। सूरज के रहते दीपक जलाना व्यर्थ है। उच्च—स्तर के लोगों के होते हुए निम्न—स्तर के लोगों से सम्पर्क रखना उचित नहीं।

१२०.बीझै—बादळै बै पूछणा देऊ, होरी कामा बै केरना खेऊ :—

वर्षा करने अथवा अधिक वर्षा रोकने के लिए देवी—देवताओं से प्रार्थना करनी चाहिए। शेष सभी कामों के लिए स्वयं परिश्रम करना चाहिए।

Digitised by
Tharah Kardu

१२१.चार वेद, पांजुआ लवेद :–

चार वेदों में सभी अच्छी बातें होती है। परन्तु उटपटांग बातें वेदों में नहीं पाई जाती। ऐसी बातों को ही लवेद कहते है।

१२२.लिण्ड–बखुण्ड झाकड़े,दाढ़ी आळे पाकड़े :–

जिन लोगों का मान–सम्मान कुछ भी नहीं होता, उनको कोई नहीं पूछता, वे अक्सर छुप जाया करते हैं परन्तु जिम्मेवार लोग ही पकड़े जाते हैं। उन्हें सरकारी अधिकारियों के साथ सहयोग करना पड़ता है।

१२३.लिण्डा रै ज़भाने, शाहूकारा रै खज़ाने :– गैर ज़िम्मेवार व्यक्ति कई कुछ ऊटपटांग बातें करते हैं, उसकी बातों का कोई अन्त नहीं होता।इसी प्रकार धनवानों के खज़ाने एवं धन–दौलत का भी कोई अन्त नहीं होता।

१२४.होछणी चौ़ड़ी, वाशदी बौड़ी :–

छोट–छोटी चिड़ियां बहुत चहकती और कोलाहल करती हैं। ठीक इसी प्रकार निम्न–स्तर के व्यक्ति अधिक बोलने लगे, तभी उस के लिए यह उक्ति प्रचलित है।

१२५.पांजे भी ऋणी, पजाहे भी ऋणी :–

ऋण चाहे थोड़ा हो या अधिक, ऋणी तो ऋणी ही होता है।

१२६.लाळै (लार) पेट नी भौरीदा :–

यदि अपने मुंह की लार को ही पीते जाएं, तो उससे पेट नहीं भरता। इसी प्रकार छोटी–छोटी बातों से किसी गंभीर समस्या का समाधान नहीं होता।

१२७.दाढ़ीन् लामी मूछा :–

यदि दाढ़ी से मूछें लम्बी हो जाएं तो वह व्यक्ति कुरूप लगता है, क्योंकि दाढ़ी सदैव मूछों से लम्बी होती हैं। यदि पुत्र पिता से अधिक प्रभाव दिखाने लगे, अर्थात कनिष्ठ व्यक्ति अपने बष्ठि से अधिक निर्देश देने लगे, तभी ऐसा कहा जाता है।

१२८.जेहड़ा रब्बी, तहड़ा पब्बी :–

यदि दो व्यक्ति एक समान स्वभाव के हों, तो उनकी समानता दर्शाने केलिए ऐसा कहते हैं।

tharahkardu.in

१२९.सुखी कराड़, दुःखी बराबर, दुःखी कराड़, मूए बराबर :—

कराड़ दुकानदार को कहते हैं। वह अपनी दुकान में बैठा रहता है। श्रम का कार्य नहीं करता। इसीलिए उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वह सुखी लगने पर भी दुःखी समान होता है। यदि वह विमार हो जाए, तो मृत्यु के समान होता है।

१३०.निष्टा वशां :—

जब कोई बोझा उठाने वाला थक जाता है तो वह बोझे का भार हल्का करने के लिए किसी ऐसे ऊँचे स्थान की तलाश करता है जहां वह अपने बोझे को थोड़ी देर के लिए, टिका सके और आराम कर सके, इस तनिक आराम के लिए 'वशां' कहते हैं जो स्थान अधिक ऊँचा न हो, जहां वह आसानी से अपना बोझा टिका सके, उसे ही 'निष्टा बशां' कहते हैं। ऐसा उस निर्धन मनुष्य के लिए भी कहा जाता है जिसे हर कोई धमकाता है।

१३१.जौलदै घौरै री बुहार है सही :—

यदि घर आग से जल रहा हो, तो जलते घर से अन्य कोई वस्तु उपलब्ध न हो सके तो एक झाडू भी हाथ लग जाए तो उसी से सन्तोष कर लेना चाहिए। अर्थात अधिक हानि हो रही हो,
तो जो कुछ भी बचाया जा सके, उसी पर सन्तोष कर लेना चाहिए।

१३२. लिपड़ी—शिपड़ी अपणी मां, ऊबड़—खाबड़ अपना देश :—

अपनी मां गन्दी—मैली जैसी भी हो, वह फिर भी मां है। अपना देश कैसा भी ऊबड़—खाबड़ क्यों न हो, वह फिर भी अपना देश है। इन दोनों की जी—जान से सेवा करनी चाहिए।

१३३. लीपड़ी नाठी लीपड़े काने,दुळकी नाठी तेसरे साने :—

एक मूर्ख दूसरे मूर्ख के साथ गया और तीसरा मूर्ख उनके इशारे पर नाचा। मूर्खों के कार्य पर ऐसा ही कहा जाता है।

१३४.गौळा रा गिल्हडू :—

गले का घैंघा (गिल्हड़) दुःख का ही कारण होता है। यदि कोई व्यक्ति या कोई वस्तु दुःखदायी बने तो उसे 'गौळै रा गिल्हडू' बनना कहते है।

Digitised by
Tharah Kardu

१२९.सुखी कराड़, दु:खी बराबर, दु:खी कराड़, मूए बराबर :-

कराड़ दुकानदार को कहते हैं। वह अपनी दुकान में बैठा रहता है। श्रम का कार्य नहीं करता। इसीलिए उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता। वह सुखी लगने पर भी दु:खी समान होता है। यदि वह विमार हो जाए, तो मृत्यु के समान होता है।

१३०.निष्ठा वशां :-

जब कोई बोझा उठाने वाला थक जाता है तो वह बोझे का भार हल्का करने के लिए किसी ऐसे ऊँचे स्थान की तलाश करता है जहां वह अपने बोझे को थोड़ी देर के लिए, टिका सके और आराम कर सके, इस तनिक आराम के लिए 'वशां' कहते हैं जो स्थान अधिक ऊँचा न हो, जहां वह आसानी से अपना बोझा टिका सके, उसे ही 'निष्ठा बशां' कहते हैं। ऐसा उस निर्धन मनुष्य के लिए भी कहा जाता है जिसे हर कोई धमकाता है।

१३१.जौलदै घौरै री बुहार है सही :-

यदि घर आग से जल रहा हो, तो जलते घर से अन्य कोई वस्तु उपलब्ध न हो सके तो एक झाडू भी हाथ लग जाए तो उसी से सन्तोष कर लेना चाहिए। अर्थात अधिक हानि हो रही हो,
तो जो कुछ भी बचाया जा सके, उसी पर सन्तोष कर लेना चाहिए।

१३२. लिपड़ी-शिपड़ी अपणी मां, ऊबड़-खाबड़ अपना देश :-

अपनी मां गन्दी-मैली जैसी भी हो, वह फिर भी मां है। अपना देश कैसा भी ऊबड़-खाबड़ क्यों न हो, वह फिर भी अपना देश हैं। इन दोनों की जी-जान से सेवा करनी चाहिए।

१३३. लीपड़ी नाठी लीपड़े काने,दुळकी नाठी तेसरे साने :-

एक मूर्ख दूसरे मूर्ख के साथ गया और तीसरा मूर्ख उनके इशारे पर नाचा। मूर्खों के कार्य पर ऐसा ही कहा जाता है।

१३४.गौळा रा गिल्हडू :-

गले का घैंघा (गिल्हड़) दु:ख का ही कारण होता है। यदि कोई व्यक्ति या कोई वस्तु दु:खदायी बने तो उसे 'गौळै रा गिल्हडू' बनना कहते है।

tharahkardu.in

१३५.गौळा रा घुंघरू :—

गले के हार का प्रत्येक दाना बड़ा प्यारा होता है। यदि कोई व्यक्ति अत्यन्त प्रिय बन जाए, तब कहा जाता है कि यह मेरा 'गौळा रा घुंघरु' है।

१३६.अपणी छाही बै कोई नी बोल्दा खाटी :—

अपने द्रव्य को कोई भी खोटा नहीं कहता, भले ही वह घटिया हो।

१३७.जैबै गाहणे धीनी, तैबे भीगणे'न' की डौरना:—

जब नदी में प्रवेश कर लिया तब भीगने से क्या डरना? अर्थात जब कोई खतरा मोल लिया तो कष्ट से क्यों घबराए?

१३८.बीझू बोणै चरना, मौरने'न' की डरना :—

यह उक्ति मृग के लिए है,वह कहता है कि जब मैं भयंकर वन में चरता हूं तो मरने से नहीं डरता। जब कोई व्यक्ति विपत्ति से भरा जीवन जी रहा हो तो वह मरने से कभी नहीं घबराता। मृगरूपी मारीच ने रामचन्द्र को ऐसा ही कहा था।

१३९.हींगा रै खाल्ड़ै वास :—

जिस खाल में हींग (वासला) भरी रहती थी, अब तो उसमें हींग समाप्त हो चुकी है परन्तु उसमें हींग की केवल वास ही रह चुकी है। जब किसी सम्मानित परिवार की प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है और अब केवल नाम ही रह गया है।

१४०.भले रै घौरै बरैघड़ै :—

जब किसी अच्छे घर में कोई दुष्ट जन्म लेता है तो उसके लिए ऐसा कहा जाता है।

१४१.दूई जीऊ, खिचड़ी घीऊ, जैबै लागी दाह, न छीड़ी न गाह :—

यदि परिवार में केवल पति—पत्नी दो ही जीव हों तो वे घी—खिचड़ी खाते हैं,यदि वे विमार हो जाएं तो न जलाने के लिए लकड़ी होती है और न पशुओं के लिए चारा। अर्थात अच्छे समय में छोटा परिवार सुखी रहता है परन्तु विपत्ति में दुःख उठाता है।

Digitised by
Tharah Kardu

१४२. **शाह—शकेणा** :—अति तंग करना।

१४२.(क) **शाह—शुकणा** :— अति तंग होना।

१४३.**शाह आळा** :—स्वस्थ, बलवान।

१४४.**शाह—प्राणा होणा**:—कठिन स्थिति को प्राप्त होना।

१४५.**"ऊना धीरै पाथर पाऊ, लाहुळै यारै पता नी लाऊ"**

कुछ समय पूर्व लाहौल/स्पिति के लोग ऊन का व्यापार करने के उद्देश्य से कुल्लू की ओर आते थे। एक बार कुल्लू क्षेत्र के एक ग्रामीण ने लाहौल से आए एक व्यापारी से ऊन खरीदी। उसने ऊन तोलते समय तराजू के ऊन वाले पलड़े में व्यापारी की नज़र बचाकर ऊन के बीच में पत्थर डाल दिया। व्यापारी सब कुछ देखकर मचला बन कर चुप रहा। ग्रामीण अपने घर जाकर अपनी घरवाली के सामने जाकर अपनी चालाकी की डींगें मार कर कहने लगा—"ऊना धीरै पाथर पाऊ, लाहुळै यारै पता नी लाऊ।"तब उसकी पत्नी ने कहा—"हे मेरे भोले भण्डारी! आप तो स्वयं ही ठगे गए हैं, आपने जितना वज़नी पत्थर डाला, उतनी ऊन आपको कम प्राप्त हुई।

१४६. **दुबळी—भेड़, दराम—ऊन** :—

जो भेड़ दुर्बल हो, उसकी ऊन भी घटिया होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि निर्धन मनुष्य द्वारा निर्मित उत्पादन चाहे कितना ही साफ—सुथरा और दृढ़ क्यों न हो, परन्तु सामाजिक मानसिकता उसके विपरीत ही रहती है।

१४७.**स्याणे री बुध, आंवळे रा स्वाद एज़ा सा फिरी—**

आरम्भ में खाते समय आंवळे के स्वाद में कुछ कड़वाहट होती है परन्तु खाते—खाते अन्त में उसका स्वाद मिठास में परिवर्तित होता है। ठीक इसी प्रकार बुद्धिजीवियों (स्याणों) की बात सुनते समय कुछ कड़वी अनुभव होती हैं परन्तु उसका परिणाम अन्त में सुखद और हितकर होता है।

tharahkardu.in

१४८.ज़ौखै राच, तौखै थाच :–

वन में भेड़ों आदि पशुओं के चरागाह और रात्रि–शयन के लिए प्राकृतिक रूप से बने कुछ ऐसे स्थल होते हैं, जिन्हें 'थाच' कहा जाता है। जहां भी गड़रिए को भेड़ें चराते–चराते रात हो जाए, वहीं पर कुठ समतल एवं सुरक्षित स्थान देख कर रात्रि शयन कर लेते हैं पर उनका कोई भी निश्चित स्थान नहीं होता। अर्थात जिस यात्री का कोई लक्ष्य नहीं होता, उसकी कोई मंज़िल भी नहीं होती।

१४९.पेट माण्डी शूळ :–

पेट को मल–मल कर शूल (पीड़ा) पैदा करना। जान बूझकर समस्या खड़ी करना।

१५०.ठारा खाखी, ठारा भाखी :–

जितने मुंह उतनी बातें। 'मुण्डे–मुण्डे मतिर्भिन्ना'। अर्थात सब का एक मत नहीं होता।

१५१.जौसरा लूण खाणा, तेईरा गुण गाणा :–

जिससे रोज़ी–रोटी प्राप्त होती है, उसके हित में ही कार्य करना चाहिए।

१५२.वेटड़ी आगै बुध, चीड़ी आगै दूध नी होन्दा :–

यह नारी जाति पर कटाक्ष है। जिस प्रकार चिड़िया के पास दूध नहीं होता, उसी प्रकार नारियों के पास भी बुद्धि की कमी होती है, परन्तु यह सब पुराने ज़माने की बातें हैं। उस समय के निरंकुश–शासन में नारियां प्राय: अनपढ़ हुआ करती थी, तभी यह उक्ति उनपर ही लागू होती थी,परन्तु आज की नारी–जाति ने चान्द–लोक पर भी अपने झण्डे गाड़ने आरम्भ किए हैं।

१५३.वेटड़ी री बुध घुण्डी हेठे :–

'घुण्डी' एड़ी को कहते हैं। नारी जब वेशभूषा धारण करने लगती हैं तब वह स्वभाव से ही अपनी एड़ी की ओर बार–बार देखने लगती है।

Digitised by
Tharah Kardu

१५४.वेटड़ी बुध उम्बळी, घौर्ठ चौकणा कुम्भड़ी :–

स्त्रियां कभी–कभी पुरुष को किसी असम्भव कार्य के लिए उकसाती हैं। अर्थात वे ऐसा उल्टा परामर्श देती हैं कि घराट का पत्थर अपनी 'कुम्भड़ी'(गोद) में उठाओ, जो असम्भव है।

१५५.वेटड़ी री बुध, म्हेंशी रै शींग हौआ पीछै बै :–

स्त्रियां हमेशा बीती बातों को दोहराती और उसपर अधिकटीका–टिप्पणी करती हैं। इसी लिए यह उक्ति उनपर कसी जाती है।

१५६.सीउणी पीछे धागा :–

कुछ तामसी–लोग भूत–प्रेत और राक्षसों को भी पूजते है जिस परिवार में कोई राक्षस पूजा जाता हो वह वहां की कन्या के साथ उस घर में भी जाता है जिस की वह वहू बन गई हो, ऐसे राक्षस को सीउणी पिछला धागा कहते हैं।

१५७.काळे (गूंगा)बै धीनी सान,चौकीया आणी ज़ान:–

गूंगे को इशारा किया,उसने इशारा न समझ कर एक बड़ा पत्थर उठा लिया, गूंगे ने इशारे का अर्थ मार–पीट समझा। जो इशारे का अर्थ न समझ कर उसके विपरीत कार्य कर ले, उसी के लिए ऐसा कहा जाता है।

१५८.मौरदी घेरे घीऊ खाणा :–

जब मृत्यु का समय निकट हो तो घी खाना और खिलाना व्यर्थ है। यदि समय रहते कोई कार्य न किया जाए तभी ऐसा कहा जाता है।

१५९.घौरा रा घौरठ बणाणा :–

घर का ढांचा बरबाद करना। सब कुछ नष्ट करना। घर खाली करना।

१६०.घौरठी भूखा, पणिहारी शोखा नी होन्दा :–

चक्की चलाने वाला घौरठी कभी भूखा नहीं रह सकता तथा पानी भरने वाला पणिहारी कभी प्यासा नहीं रह सकता। कहने का भावार्थ यह है

tharahkardu.in

कि जिस के पास जीवनोपयोगी संसाधन उपलब्ध हों, वह कभी निर्धन नहीं होता।

१६१.माण्हू माउळै, भेड़—बौकरी साउळै :—

मानव—सन्तान की आकृति एवं आकार प्रकार 'नाने' 'मामे' से मिलती है तथा भेड़—बकरियों की नस्ल उन 'मेंढों' से मिलती है जिनसे संसर्ग किया गया हो।

१६२.बाझी बागरी डाळ नी हिलदा :—

जिस प्रकार हवा के विना पेड़ों की टहनियां नहीं हिल सकती, ठीक उसी प्रकार विना किसी कारण से कोई भी कार्य नहीं होता।

१६३.'झूठ दूणना, 'पोला पूणना, एक बरोबर :—

जब किसी अनाज को उसके पौधे के सूखे घास—फूस से अलग करना हो तो उस अनाज को घास से अलग करने के लिए सूप के द्वारा किसी ऊँचे स्थान से हवा में विखरा कर अनाज से घास एवं किसी कूड़े—कर्कट को अलग किया जाता है, इसी क्रिया को 'पूणना' कहते हैं। जिस घास और कूड़े—कर्कट में अनाज का एक दाना भी न हो, उसे हवा में उछाल कर पूणना व्यर्थ है इसी क्रिया को ही 'पोला'(खोखला) कहते हैं। इसी प्रकार झूठ बोलना भी कभी हितकर नहीं हो सकता। तभी कहा जाता है कि 'झूठ' बोलने और 'पोला' पूणने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

१६४.'तुर्त—दान, महापून :—

किसी भी शुभ कार्य में विलम्ब नहीं करना चाहिए।

१६५.चीड़ी रा उठणा, पाथरा रा उंघ :—

चिड़िया तो स्वयं ही उड़ना चाहती थी, किसी दूसरे द्वारा पत्थर मारने का तो उसे उंघ (बहाना) मिल गया। जो कार्य स्वतः ही होने वाला हो, उसे दूसरे व्यक्ति द्वारा प्रेरित करने बहाना मिल जाता है।

१६६. चोर नी मारना, चोरै री मां मारनी :—

दुष्ट व्यक्ति को मारने से कोई लाभ नहीं, परन्तु उसका श्रेष्ठ अवगुण दुष्टता को समाप्त करना चाहिए।

Digitised by
Tharah Kardu

१६७.दान्दे कीश :—

दान्तों के मध्य में यदि कोई तिनका फंस जाता है तो जब तक उसे न निकाला जाए तब तक वह तिनका बड़ा कष्ट देता रहता है। ठीक इसी प्रकार कोई अवाञ्छनीय व्यक्ति किसी सन्त—समूह के मध्य में आजाए तो उस सन्त—समूह की शान्ति भंग होती है। जब तक उस अवाञ्छनीय व्यक्ति को उस समूह से बाहर न निकाला जाए तब तक वहां शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

१६८.दाँद पीशणे :— अति क्रोधित होना।

१६९.दाँद पेटा बै पाणै :— बुरी तरह पीटना।

१७०.ढोगा रा पाथरु काळ्ळ :—ढंकार (दुर्गम—पहाड़) पर जाना खतरनाक होता है, जहां से गिरने का भय रहता हैं।

१७१.ऊटा कोशा खड़ा नी केरू :—

लेशमात्र भी कार्य नहीं किया।

१७२.आछी पाछ नी लाऊ :—

एक क्षण भी नहीं सोया।

१७३.बौडै बै वद्दी नी लागदी :—

महापुरु यदि गलती भी करे तो उसे दोषी नहीं ठहराया जा सकता।

१७४.बौडै भाण्डे रा ठीकर भी एज़ा सा कामे :—

यदि बड़ा वर्तन टूट भी जाए तो उसके टुकड़े भी किसी न किसी काम आही जाते हैं। इसी प्रकार किसी अच्छे कुल का छोटा व्यक्ति भी किसी न किसी अच्छे काम में सहायक होता है।

१७५.एकी पासै सारी 'हार',एकी पासै काळी खम्हार:—

एक देवता को मानने वाले सभी लोगों को उसकी 'हार' (देव—क्षेत्र) कहते है। किसी काळी नामक कुम्हार ने सारे देव—क्षेत्र के साथ टक्कर ली थी, तभी यह कहावत प्रचलित हुई। जब कोई एक व्यक्ति अधिक लोगों के साथ टक्कर ले, तभी ऐसा कहा जाता है।

tharahkardu.in

१७६.रोज़–साजा नी होन्दा :–

'साज़े' (सक्रान्ति) के दिन घरों में विशेष पकवान बनते हैं। सक्रान्ति के दूसरे दिन एक बालक ने पूछा कि आज भी विशेष पकवान क्यों नही बने? तब उसे बताया गया कि विशेष पकवान सक्रान्ति के दिन ही बनते हैं और रोज़–राज़ सक्रान्ति नहीं होती। अर्थात रोज़ ही खुशी मनाने के दिन (साज़े) नहीं होते।

१७७.देशै–भेष :–

जिस देश में जैसी वेश–भूषा पहनी जाती है, वहां जाकर वैसी ही वेश–भूषा पहननी पड़ती है।

१७८.लोहे री धाणा चबाणी :–

लोहे के चने चबाना बड़ा कठिन कार्य होता है। किसी कठिन कार्य को करने एवं कराने के लिए ही ऐसा कहा जाता है।

१७९.सनियारा री शौऊ,लोहारा री एक:–

सुनार की सौ चोटों के बराबर लोहार की एक ही चोट ही काफी होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि सौ दुर्बलों का कार्य एक ही बलवान पुरुष (भीमसैन की भान्ति) में ऐसी क्षमता पाई जाती है।

१८०.बेल्हा–कराड़ पात्थर तोलदा :–

जिस बणिए के पास कोई ग्राहक नहीं आता, वह बैठे–बैठे पत्थर तोल कर ही समय व्यतीत करता रहता है जैसे किसी कवि ने ठीक ही कहा है–

"कुठ नहीं है तो, कुछ किया कर,
कपड़े उधेड़ कर सिया कर।"

१८१.पैर पसारने चादर भाळी :–

जितनी लम्बी चादर हो, तो अपने पैर चादर देख कर ही पसारने चाहिए ताकि वे ढके रहें। अर्थात अपनी जमा–पूंजी अनुसार व्यय करना चाहिए ताकि दिवालिया न निकले।

१८२.जौस थाळीन् खाणा, तेसान् छीण्डा नी पाणा:– जिस घर का अन्न–जल खाया जाता है उस घर का कभी हानि नहीं पहुंचानी चाहिए।

Digitised by
Tharah Kardu

१८३.एक्का मारा बादछाहा :-

ताश-पत्तों के खेल में यक्का बादशाह को मात करता है। भावार्थ यह है कि एकता में बड़ी शक्ति होती है। संस्कृत के किसी कवि ने भी कहा है-"संघे शक्तिः कलौयुगे"।

१८४.कुळू वसेरा-दार्न पाणी :-

जब राजा जीतसिंह को 'तुङ्ग-क्षेत्र' में सिक्खों के अधिकार से छुड़ाया गया था, तो उसे कोठी 'नोहाण्डा' के 'दार्न-गांव' के रास्ते से कुल्लू की ओर लेजाया जा रहा था। राजा को दार्न-गांव का पानी बहुत पसन्द आया। राजा ने अपने पीने के लिए दार्न-गांव का पानी कुल्लू पहुंचाने का आदेश दिया। तब स्थानीय लोगों को ऐसा असम्भव कार्य के लिए बड़ा आश्चर्य हुआ। तभी से किसी भी कठिन एवं अनुचित कार्य के लिए ऐसा कहा जाता है कि-

"कुल्लू वसेरा, दार्न पाणी"

१८५.सूत्र सुआरना-राज बचारना, एक बरोबर :-

जब सूत का धागा आपस में उलझ जाए तो उसे सुलझाना अति कठिन हो जाता है। ठीक इसी प्रकार राजतन्त्र को सुचारू रूप से चलाना बड़ा कठिन कार्य है।

१८६.झगड़े रा मुंह काळा :-

लड़ाई-झगड़ा करना किसी भी अवस्था शोभा नहीं देता।

१८७. मां मुंई, बौहुटी-सूई,फेर भी त्राई री त्राई :-

मां मर गई, पत्नी प्रसूता हुई, तब भी इस परिवार में तीन के तीन सदस्य बने रहे। जीवन में कई उतार-चढ़ाव आने पर भी स्थिति यथावत रहे,तभी ऐसा कहा जाता है।

१८८.जौसरी पहल, तेईरी सहल :-

जो किसी कार्य को सब से पहले निभाने का यत्न करता है, उसी को सर्वप्रथम सफलता प्राप्त होती है। वही लाभ में रहता है।

१८९.बारह पाथरू बाहर :-

किसी गांव में पृथक-पृथक जाति एवं वर्ग के लिए बारह

bharatkardu.in

सीमाएं निर्धारित की गई थी। प्रत्येक सीमा पर एक पत्थर रखा गया, यदि कोई गांव में घोर अपराधी पाया जाता है तो दण्डस्वरूप उसे उन बारह पत्त्थरों से बाहर कर दिया जाता था, अर्थात गांव की जाति एवं वर्ग से वहिष्कृत किया जाता था।

१९०.नारी चळित्र जाणे न कोए, खस्म मारिया सती होए :—

किसी कुल्टा स्त्री ने अपने खस्म को मार कर और उसके साथ सती होने का ढौंग रचाया। क्योंकि वह जानती थी कि लोग उसे सती होने नहीं देंगे और अन्त में ऐसा ही हुआ।

१९१.आछी छार छाडणा :—

धोखा देना, ठगी करना।

१९२.आगे नोए, पीछे ढोग :—

जब कोई ऐसी जगह में फंस जाए, जहां सामने नदी बहती हो और पीछे भयंकर पहाड़ खड़ा हो। इन दोनों कठिनाईयों से बाहर निकलना असम्भव हो। कठिनाईयों में फंस जाना।

१९३.गंगा जाई गंगाराम, जमना जाई जमनादास :—

बहूरुपिया वेश धारण करना। बार—बार पक्ष बदलना।

१९४.खादा—पीता लाहेदा, वाकी अहम्मदशाहे दा :—

अहम्मदशाह एक क्रूर मुसलमान बादशाह था। वह प्रजा को केवल भोजन—मात्र के लिए धन छोड़ता था, शेष सारा धन उनसे छीनता था। तभी प्रजा कहती थी कि जो कुछ खाएं पीएं वही अपना है, शेष सब कुछ अहम्मदशाह का है।

१९५. बीझे बागै काटणै :—

खेत में बीज डाल कर उसके चारों ओर वर्षा के अधिक पानी के निकास के लिए नालियां बनाई जाती हैं। जिनको 'बागै' कहा जाता है। जब आकाश निर्मल हो तो बुद्धिमान लोग समय रहते बागे बनाकर रख छोड़ते हैं। वर्षा आरम्भ होने पर यह बागे (नालियां) नहीं बनाए जा सकते। कहने का भावार्थ यह है कि विपत्ति आने से पूर्व ही अपना बचाव करना चाहिए।

Digitised by
Tharah Kardu

१९६.कौखै राजा भोज, कौखै गंगू तेली :—

यह हिन्दी की प्रसिद्ध उक्ति है, भावार्थ यह है कि एक निर्धन की तुलना राजा से नहीं की जा सकती।

१९७.नाई रै घौरै घौर—घरात, सौहै कतीरा सौहै कात:—

'कतीरा' चिमटे को कहते हैं और 'कात' बाल काटने एवं भेड़ों की ऊन काटने की लोहे की धातु से बनी एक कैंची होती है। अर्थात नाई के घर में सम्पत्ति के नाम पर केवल एक कात है,उसी से वह चिमटे का काम भी करता है और बाल काटने के लिए कैंची का काम भी करता है। अति दरिद्र व्यक्ति के लिए ऐसा ही कहते हैं।

१९८.शाई ज़िमी रा कारा :—

जिस भूमि को जोता न जाए, उसे शाई ज़िमी कहते हैं, उसका लगान (कर) व्यर्थ देना पड़ता है। व्यर्थ के व्यय के लिए ऐसा कहते हैं।

१९९.काओ रा मास खा सा काओ :—

जो कौआ मर जाता है, उसके मास को दूसरे कौउए खा जाते हैं। जो वस्तु किसी के भी उपयोगी न हो,उसके लिए ऐसा कहते हैं।

२००.मूई महेंषी चमारा बै :—

यह उक्ति लड़कियों के विषय में कही जाती है। इसका अर्थ यह है कि लड़की परए घर के लिए होती है।

२०१.नौ—काणै :—

यह जूए में एक पासे पड़ने की एक स्थिति होती है। ऐसा पासा पड़ने पर जुए में हार हो जाती है।

२०२.पौबारह और नौ सतारह :—

यह भी एक ऐसी ही स्थिति होती है जिसमें ऐसे पासे एवं दाओ पड़ने पर जीत होती है।

२०३.ऐ जुआ, कासी रा नी हुआ :—

जुआ किसी पर कृपा नहीं करता, यह सब को ही नष्ट करता है।

tharahkardu.in

२०४.आठा–छटा, दुआ–बारुआ शनि हौआ बुरा :–

यदि शनि जन्म राशि से आठुएं, छटे, दूसरे और बारहवें घर में पड़ा हो, तो उसका फल अनिष्ट कारी होता है।

२०५.शुक्रै शौईरी, मुंगळै माघ, भाटा–खमारा बै लाग:–

यदि असौज की सक्रान्त (साजा) शुक्रवार को आए, और माघ की सक्रान्त मंगलवार को हो तो ब्राह्मणों और 'खमारों'(कुम्हारों)के लिए अनिष्ट कारी होता है।

२०६.द्रेहढ़ दूर ता गाश नेड़, द्रेहढ़ नेड़ ता गाश दूर:–

जब बादल पतला–पतला हो और सूर्य अथवा चान्द के गिर्द कभी–कभी एक वृत सा बनता है, उसी को 'द्रेहढ़' कहते हैं। इसी द्रेहढ़ की गतिविधि अनुसार वर्षा की स्थिति निर्भर है।

२०७. **"सर्ग लाल हुआ 'दोती'**
'हौळ–जूं' डाहणै 'कोती''

"सर्ग लाल हुआ ऊंडै,
हौळ–जूं डाहणै खूण्डै"

'सर्ग लाल हुआ सान्हा,
हौळ–जूं डाहणै कान्हा"

हौळ–जूं डाहणै 'कोती' का अर्थ है कि वर्षा कुछ ही दिनों में होगी अत: हल और जुंगड़े को बनाकर और मुरम्मत करके रखो। 'हौळ–जूं डाहणै खूण्डै' का अर्थ हुआ कि वर्षा नहीं होगी और हल और जुंगड़े को सम्भाल कर रखो। 'हौळ–जूं डाहणै कान्हा' का मतलब हुआ कि वर्षा होने वाली है और अपने हल और जुंगड़े को लेकर अपने खेत की ओर चल पड़ो।

२०८.हाड़ पुराण्हिया, शाह रौहा बाळे रा बाळा :–

शरीर जीर्ण–शीर्ण हो जाता है, परन्तु आत्मा अमर और तरुण रहती है।

२०९.चींटा लागा मौरने बै फियाख :–

जब च्यूंटी के पर निकल आते हैं तो वह शीघ्र ही मर जाती है। शक्तिहीन

Digitised by
Tharah Kardu

मनुष्य जब अपनी शक्ति से अधिक डींगें मारने लगता है तब उसका विनाश शीघ्र ही हो जाता है।

२१०.धारा री कायल, जिसै बागर तिसै :–

जो पेड़ पहाड़ की चोटी पर होता है, वह हवा के रुख के अनुसार ही हिलता–जुलता रहता है। उसका अपना कोई अस्तित्व नहीं होता।

२११. नहले पांदै दहला मारना :–

किसी के तर्क पर उससे अच्छा तर्क देना।

२१२.तुर्प देना :–

किसी की बात को रद्द करके अपनी बात कहना।

२१३.शह देना :–

शतरंज के खेल में मोहरों की ऐसी स्थिति पैदा करना, जिससे प्रतिद्वन्दी का राजा मार खा रहा हो। तब उसको उस स्थान से हटाना आवश्यक हो जाता है। किसी को उकसाना ही शह देना कहा जाता है।

२१४. मात देना :–

शतरंज में जब पक्ष के राजा को हटाने के लिए कोई सुरक्षित स्थान न रहे, तब उसको मात मिलती है।

२१५.पातला फैम्बड़ा ध्याड़ा लामा :–

ऐसा भोज्य पदार्थ जिसमें पानी की मात्रा अधिक और अन्न की मात्रा बहुत कम हो, उसे फैम्बड़ा कहते हैं। यदि काम करने के दिन लम्बे हों और खाने के लिए फैम्बड़ा मिले तो भूख शीघ्र ही सताने लगती है और पूरा दिन काटना कठिन हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि दु:ख के दिन लम्बे होते हैं।

२१६.याणा–स्याणा एक बरोबर :–

अति वृद्ध एवं अबोध बालक की भावनाएं एक समान होती हैं।

२१७.बाह लम्बी होना :–

tharahkardu.in

जिस की पहुंच बड़े लोगों तक हो, तब ऐसा कहा जाता है कि उसकी बाह लम्बी है।

२१८.होरै रै तोते सीखै, म्हारै तोते केरा सी टैं—टैं:—

जब अपनी सन्तान मन्द बुद्धि की हो, तभी ऐसा कहा जाता है।

२१९.लोहू रा पाणी बणाणा :—

अधिक परिश्रम करना।

२२०.भ्याणसर साही होणा :—

भोर के तारे को 'भ्याणसर' कहते हैं। यह ब्रह्ममुहूर्त में उदय होता है और सूर्य के उदय होने पर मध्य आकाश में अदृश्य हो जाता है।यह अति सुन्दर होता है। जो शिशु अति सुन्दर हो तो उसे 'भ्याणसर' कहते हैं।

२२१.दुष्टा आगै ज़ीवाणी बेकार :—

'अति नम्रता' से बात करने को 'ज़ीवाणी' कहते हैं। दुष्ट व्यक्ति पर 'ज़ीवाणी' का कोई प्रभाव नहीं होता।

२२२.भोट—साल :—

जिस भूमि में साल में एक ही फसल होती है। उस फसल को 'भोट—साल कहते हैं। क्योंकि भोट देश में एक साल में एक ही फसल होती है।

२२३.दूजे रा चाबूदा नी चबाणा :—

किसी अन्य व्यक्ति की नकल नहीं करनी चाहिए। अर्थात दूसरों द्वारा कही हुई बात को अपनी न कहें।

२२४.जैसा को तैसा, ब्राह्मण को नाई :—

जो इनसान जैसा व्यवहार करता है उसके साथ बैसा ही व्यवहार करना चाहिए। ब्राह्मण—जाति अपने आप को बड़ी होशियार और चालाक समझती है परन्तु जब उसे नाई से पाला पड़ता है तब नाई ब्राह्मण से भी चालाक निकलता है। अर्थात चालाक ब्राह्मण अधिक चालाक नाई से मात खा जाता है।

Digitised by
Tharah Kardu

२२५.मीठा—मीठा चट, कड़वा—कड़वा थू :—

मीठी वस्तु हो सभी चट कर जाते हैं, परन्तु कड़वी वस्तु को थूक देते हैं।

२२६.दाई री दियाणी, भाई रा भगियाळ जा बौणी:—

बड़ी बहन को दाई कहते हैं, समय आने पर वही दाई सौकन (दियाणी) बन जाती है। भाई भी अलग होकर भगियाळ बन जाता है। इस प्रकार 'दियाणी और भगियाळ समय आने पर ईर्ष्यालू बन कर दु:ख देते रहते हैं।

२२७.लैणे रै देणे पड़ना :—

लाभ होने की सम्भावना से यदि कोई कार्य किया जाए, परन्तु लाभ होने के स्थान पर हानि उठानी पड़े, तभी ऐसा कहते हैं।

२२८.लोहू रै ज़ोरै :—

जिस कार्य को अपणे बलबूते पर तथा अधिक परिश्रम से करना पड़े, तभी ऐसा कहते हैं।

२२९. "सूना हौळै न पत्रे, मोती लगे न डार,
कर्म मिले न बांडणे, पुत्र मिले न धुआर।"

हल चलाकर सोना पैदा नहीं किया जा सकता, तथा मोती पेड़ों पर नहीं लगते, कर्मफल को बांटा नहीं जा सकता। पुत्र भी उधार नहीं मिलता।

२३०.नौकरी बाबा री भी बुरी :—

नौकरों को दूसरों के अधीन रहना पड़ता है,चाहे वह नौकरी अपने पिता की ही क्यों न हो। पराधीनता सदैव दु:खदायी होती है। गोवामी तुलसीदास जी का कथन है—"पराधीन सुपने सुख नाहीं।"

२३१.चट मंगणी पट व्याह :—

किसी कार्य को हाथ में लेने पर उसे तुरन्त ही कार्य रूप में लेनौ।

२३२.भाई भला साथ का, शस्त्र भला हाथ का :—

भाई वही है जो सुख—दु:ख में सदैव साथ दे, तथा शस्त्र

tharahkardu.in

वही जो समयानुसार उपलब्ध हो, अच्छा होता है।

२३२.भाई भला साथ का, शस्त्र भला हाथ का :–

भाई वही है जो सुख–दुःख में सदैव साथ दे, तथा शस्त्र वही जो समयानुसार उपलब्ध हो, अच्छा होता है।

२३३."हुक्का तेरा गुड़गुड़ान्दा, नौदी तेरी किसमी,
गांठी नी एक चिलम, तू भी कोए विसमी।"

जो आदमी हुक्का तो खूब गुड़गुड़ाने वाला रखता हो, और 'नोदी'(तम्बाकू का धुंआ लेने वाली नली) भी कई किसम की रखी हैंश परन्तु गाँठ में तम्बाकू की एक चिलम भी नहीं है, तो भी बड़ा हुक्कानरेश बना फिरता है। यह बात उस पर लागू होती है जो ठाठ–बाट तो खूब रखता है, परन्तु पल्ले में कुछ नहीं। ऊँची दुकान, फीका पकवान।

२३४.उन्नी–इक्की रा फर्क :–

यदि किसी एक वस्तु के चालीस भाग बनाए बनाए गए हों, तो उसके बीस–बीस के दो बराबर भाग बनते हैं। तनिक अन्तर रखने के लिए एक भाग को 'इक्कीस तथा दूसरे भाग को उन्नीस रखा गया हो, जो कि थोड़ा ही फर्क है, तभी ऐसा कहा जाता है।

२३५.तीन–पांज करनी– हीला बहाना करना।

२३६.तोळा–माशा करना :–

किसी वस्तु के भाग को चालाकी और बदनीयती से घटाना–बढ़ाना। बन्दर बांट करना।

२३७.केर पंची, शुण मेरी :–

किसी का पक्ष लेकर फैसला करना।

२३८.काणी–पंची केरनी :– अन्याय करना।

२३९.पंच–मुखे परमेशर :–

सच्चा पंच जो कहता है वह ईश्वर–वाक्य के समान होता है, उसपर श्रद्धा रखनी चाहिए।

२४०.ताता खाई जौळा जीभ :–

विना–सोचे समझे शीघ्रता करने से लाभ के स्थान पर हानि

Digitised by
Tharah Kardu

ही होती है।

२४१.बाबे नी मारी पिदड़ी, बेटा तीरन्दाज़ :—

यदि बेटा झूठी डींगें मारता फिरे कि मैं बड़े—बड़े काम कर सकता हूं, तब उसे ऐसा कहकर ताना दिया जाता है कि बाप तो एक पिद्दी नहीं मार सका, तो बेटा तीर—अन्दाज़ कहां से हो गया।

२४२.घौरै री मुर्गी, दाळ बरोबर :—

जिस पुरुष को अपने घर से बाहर अवांछनीय भोजन एवं आचरण की लत पड़ गई हो, उसे अपने घर की अच्छी से अच्छी वस्तु भी अप्रिय लगती है।

२४३.फूल जूठा बणा सा, भौंरा जूठा नी बणदा :—

भौंरा कई फूलों पर बैठता है, परन्तु वह जूठा (अपवित्र) नहीं होता, फूल ही जूठा (अपवित्र) हो जाता है।

२४४.खार खाइया, भार नी भौरू :—

आम तौर पर २४ छटांक का एक पत्था (अनाज मापने का एक पात्र) होता है। इस प्रकार १६ पत्थे का एक 'भार' और बीस 'भार' का एक 'खार' होता है। यदि कोई किसी से एक खार अनाज लेकर उसका बीसवां—भाग एक 'भार' अनाज भी न लौटा सके, तो उसको अपमानित करने के लिए ऐसा कहा जाता है।

२४५.जूब बांडणा :—

कुल्लू—जनपद में यह प्रथा है किसी परिचित के यहां से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो तो उसके प्रति अपनी प्रसन्नता प्रकट

करने के लिए उसके घर जाकर एक विशेष प्रकार की पवित्र 'द्रुब—घास' कें दो या तीन तिनके फूल की भान्ति उसके हाथ में पकड़ा कर अपनी प्रसन्नता प्रकट की जाती है।

२४६.जेंतरा गुड़, तेतरा मीठा :—

किसी कार्य की सफलता के लिए, यथोचित धन का उपयोग ही सफलता की कुंजी मानी जाती है।

tharahkardu.in

२४७.ज़ीभा रा दलिद्री :–

यदि कोई कार्य किसी के कहने मात्र से होता हो, और वह फिर भी कुछ न कहे तब उसको 'ज़ीभी रा दळिद्री' (जुबान का आळसी) कहा जाता है।

२४८.लामी ज़ीभा रा :–

अधिक अंट–शंट बोलने वाले को ऐसा कहा जाता है।

२४९.तलुआरी रै घा भौरिया सी, ज़ीभा रै घा नी भौरिदै :–

किसी शस्त्र के काटे का घाव समय आने पर भरपूर हो जाते हैं, परन्तु चंचल–जीभा के कटाक्ष कभी नहीं भरते।

२५०.एतरी शिखा नी भरयाळा खाई :–

शिकार चोरी होने पर पूछा गया कि शिकार कहां गया। चोरों ने कहा कि सारा शिकार बिल्लियां खा गईं। तब उन चोरों पर सन्देह प्रक्ट किया और कहा कि 'एतरी शिखा नी भरयाळा खाई'।

२५१.भौरी भाण्डा नी छलकदा :–

ज्ञान से भरपूर मानव अपने आप को कभी भी ज्ञानवान होने का भौण्डा प्रदर्शन नहीं करता। वह न ही अपनी प्रशंसा करता है और न ही अपनी प्रशंसा सुनने का इच्छुक होता है। अज्ञानी मनुष्य ही अधजल–गगरी की भान्ति अपनी ही प्रशंसा की डींगें मारता है।

२५२.भर्ठ खाए पाणी पीए, खापरा माण्हू जुग–जुग जीए :–

किसी की बहू को अपना वृद्ध–ससुर अच्छा नहीं लगता था तब उसने अपने वृद्ध ससुर को धीरे–धीरे मारने की इच्छा से

अपना परामर्श दिया–"भर्ठ खाए पाणी पीए, खापरा–माण्हू जुग–जुग जीए।"

२५३.तातृ भडीत, बुढळे री मरीत :–

घटिया मानसिकता वाली बहू अपने ससुर को सलाह देती है कि गर्म–गर्म भात खाने से वृद्धजन मृत्यु को प्राप्त होते हैं। इसलिए गर्म–भात नहीं खाना चाहिए। उसकी कूटनीति यही थी कि ठण्डा–भात

Digitised by
Tharah Kardu

खाने से बुढा शीघ्र ही विमार होकर मृत्यु को प्राप्त होगा।

२५४.मुंहें—लाणा :—

अपनी इच्छा—पूर्ति के लिए किसी का साथ निभाना या अपने साथ मिलाना। किसी के साथ व्यर्थ प्यार करना।

२५५. पुराणे पाथे पथियाणा :—

अन्ध विश्वास के कारण पुरानी प्रथाओं को प्रचलित करना। परन्तु युक्ति—युक्त प्रथाओं के लिए ऐसा नहीं कहा जाता।

२५६.पाथरे—रेख :—

पत्थर पर डाली हुई रेखाएं सदैव के लिए अपनी अमिट छाप छोड़ती हैं, हमें भी इन पत्थर की रेखाओं की भान्ति पक्की बात करनी चाहिए, जो कभी मिट न सके।

२५७.मूछ मरोड़नी :—

अपनी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए प्रण करना। किसी बात का दावा पश करना। कोई प्रतिज्ञा करना।

२५८.टळींढा लौटा :—

जिस लोटे का पैंदा गोल—मटोल हो, वह सीध खड़ा नहीं रह सकता। वह इधर—उधर डोलता रहता है। उस मनुष्य की मानसिकता भी वेपैंदे लोटे के समान होती है जिसका नियम कभी स्थिर नहीं रहता।

२५९.बाझी ओछू रा रोणा :—

दिखावे के लिए आंसू बहाना या रोना।

२६०.भाड़ा मिला सा पिशिया :—

चक्की में अन्न की पिसाई के पश्चात् ही उसका 'भाड़ा'(पिसाई—भाग) प्राप्त होता है,पिसाई से पहले नहीं। अर्थात पारिश्रमिक, कार्य सम्पूर्ण होने के पश्चात् ही मिलता है।

२६१.चन्द्रे री पन्द्रह, भोळे री सोळा :—

अधिक चालाकी दिखाने वाला प्राय: घाटे में ही रहता है और अन्त में भोले—भाले मनुष्य ही सदैव फायदे में रहते हैं।

tharahkardu.in

२६२.पापा रा भाण्डा :–

कन्या अथवा असहाय का पालन, रक्षा, व्याह, शिक्षा आदि कार्य करना माता–पिता, भाई एवं अन्य सम्बन्धियों का कर्त्तव्य बनता है। यदि वे समय रहते यह पुण्य कार्य नहीं करते तो उन्हें पाप लगता है। उन असहाय व्यक्तियों की 'हाय' से 'पापा रा भाण्डा' कहते हैं।

२६३. रोशै बैरी नी मौरदा :–

केवल मात्र क्रोध का दिखावा करने से शत्रु का कुछ नहीं विगड़ता, उसके लिए कोई सार्थक कार्यवाही अमल में लानी पड़ती है।

२६४.एकी हौथै रोटी नी बणदी/पौकदी :–

लड़ाई झगड़े में प्रायः दोनों पक्ष का थोड़ा–बहुत दोष होता है। विल्कुल सच्चा और निर्दोष कोई भी पक्ष नहीं होता ।

२६५.छाही मौंगदै जाणा, पारू डाहणा गझियाई :–

'पारू' मिट्टी का एक छोटे से घड़े के आकार का वर्तन होता है जो प्रायः दूध, दही, लस्सी रखने के उपयोग में लाया जाता है। यदि कभी अपने घर में लस्सी न हो तो पारू को छुपाकर अन्य घर में जाते हैं और अपना मन्तव्य स्पष्ट न बता कर उनकी बातों से अन्दाज़ा लगाया जाता हैं कि उनके घर में लस्सी है या नहीं। यदि यह पता लग जाता हैं कि उनके पास वह वस्तु उपलब्ध है तब वे पारू को आगे करके लस्सी मांगने का कष्ट करते हैं, यदि वह वस्तु उपलब्ध नहीं है तो अपने वर्तन को चुपचाप ही छुपा कर वापिस आ जाते है। इसका भावार्थ यह हुआ कि अपना उद्देश्य स्पष्ट न बता कर अन्य के विचार उपलब्ध एवं प्राप्त करना।

२६६.कोहरी बौहा नौई :–

कुछ नदी की धाराएं एक ही ओर बहती हैं। इसी प्रकार कुछ स्वार्थी–तत्वों को केवल अपनी ही इच्छा से उनका स्वार्थ निहित होता है। ऐसा तब कहा जाता है जब किसी को भलाई के बदले बुराई मिले। नदी एक ही ओर बहती है, वापिस नहीं हटती। भलाई का बदला भलाई से देना चाहिए।

Digitised by
Tharah Kardu

२६७.पिन्दळा छूटा नौई, पात्थर चाटी कि झौई :–

पिन्दला गफ्फे को कहते हैं। गफ्फा तो नदी में छूट गया, पत्थर की झाई चाटने से क्या तृप्ति होगी। अर्थात गई वस्तु के लिए नहीं पछताना चाहिए।

२६८.गूठा रिहाणा :–

वायदे से इनकार करना। किसी वस्तु को लेकर मुकर जाना।

२६९.जिण्ढा पटाणा/पुटणा:– जड़–मूल से नष्ट करना।

२७०.ज़ीभा रा गन्दा :–

गाली–गलोच एवं गन्दी बातें करने वाले को ही ऐसा कहते हैं।

२७१.चौहे कूल्हा बगदी होणा :–

खेती, व्यापार, उद्योग एवं नौकरी– यह चारों किसी भी गृहस्थ–आश्रम के आय के साधन हैं। जिस परिवार में ये चारों स्त्रोत हों, उन्हें ही ऐसा कहते हैं।

२७२.कलार खाइया ब्याली नी होणा:–

नाश्ता (ब्रेक–फास्ट) को 'नुहारी' 'दोपहर के भोजन '(लंच) को 'कलार' तथा तीसरे पहर के अल्पाहार को 'दपौहरी'/तपोहरी' तथा रात का खाना'(डिन्नर) को 'ब्याली' कहते हैं। अमीरों के लिए तो चारों समय का भोजन आसानी से सुलभ होता है परन्तु उनके पास 'भूख' की कमी है और जिन के पास 'भूख' अधिक है उन्हें केवल एक समय का भोजन भी उपलब्ध होना कठिन है। एक समय का खाना तो जैसे–कैसे खा लिया, फिर उसी समय दूसरे समय(डंग) की चिन्ता करना।

२७३.नबियाळा :–

ऊपर लिखित दशा वाले को 'नबियाला' कहते हैं।

२७४.शुका–काठ हौरा नी फिरदा :–

पौष्टिक–भोजन से बुढ़ापा दूर नहीं हो सकता।

२७५.घौर फुकिया तमाशा :–

अपनी सम्पत्ति को नष्ट करके मौज–मस्ती करना।

tharahkardu.in

बने–बनाए घर–वार को बर्बाद करके तमाशा देखना या दिखाना।

२७६.काठा री हाँडी चढ़ा एक बार :–

जिस प्रकार काठ की हण्डिया बार–बार चूल्हे पर (आग) नही चढ़ सकती, ठीक उसी प्रकार झूठे व्यक्ति का विश्वास एक बार में ही समाप्त हो जाता है।

२७७.काण्डे रा मुंह हौआ सा तीखा :–

'होनहार वीरवान के होत चिकने पात'।

२७८.दुधारी तलवार :–

ऐसा व्यक्ति जो प्रत्येक परिस्थिति में चोट एवं रक्षात्मक प्रक्रिया निभाने की क्षमता रखता हो। दोगला मनुष्य।

२७९.शाउण–भादर नी सदा रांहदे :–

मानव की सुख–दुःख की अवस्था एवं प्रक्रियाएं सदैव एक समान नहीं रहती।

२८०.खाखी छूटी जुबान, हाथा छूटा बाण वापिस नी होंदा :–

एक बार जब कोई शब्द मुंह से निकल जाता है उसे लौटाना बड़ा असम्भव होता है, ठीक इसी प्रकार हाथ में पकड़े हुए धनुष से जब एक बार बाण (तीर) छूट जाता है उसे भी वापिस लौटाना कठिन होता है। भले ही वे शब्द एवं बाण अपने लक्ष्य पर पहुंचे या न पहुंचे।

२८१. पहले तोला, फिरी बोला :–

बोलने से पहले अच्छी प्रकार सोच–विचार कर लेना चाहिए कि हम जो कुछ भी बोलने जारहे हैं उसका परिणाम क्या होगा?

२८२.कोए दिन, कोए दिनड़ी :–

दुःख–सुख का समय सदा एक समान नहीं रहता। कोई दिन दुःख भरे होते हैं और कोई सुख के।

२८३.पेटा धीरे पीठ फेरनी :–

अपने वायदे के विपरीत कार्य करना। धोखा देना, विश्वासघात करना।

Digitised by
Tharah Kardu

२८४.नौऊई फकीरी, ठूठे रा काळ :–

फकीर लोग ठुठे (चिलम) में भांग पीते हैं। आरम्भ में उन्हें ठूठे में भांग पीने का ढंग नहीं आता, अक्सर अनजाने में उनसे वे ठूठे ही टूट जाते हैं। अर्थात अनजान आदमी से कोई नया काम सम्भालते हुए हानि होने की सम्भावना भी बनी रहती है।

२८५.जो आप, सो न माई–बाप :–

जितना अच्छा कार्य व्यक्ति स्वयं कर सकता है, उतना अच्छा कार्य उसका परम हितेषी भी नही कर सकता ।

२८६.खून हौआ पाणिन गाढ़ा :–

जिस के साथ खून का रिश्ता हो, उसके साथ स्वत: ही सहानुभूति होती है। दिल में दर्द उठता है, प्यार उमड़ता है।

२८७.धारा लुम्बरू लाणा :–

किसी के दु:ख–सुख में भागीदारी न लेकर अपनी ही मौज–मस्ती में रहना। स्वार्थी होना।

२८८.खूना रा रिश्ता :–

अपनी सन्तान, चाचे, ताए की सन्तान तथा बुआ एवं बहिन आदि जिनके साथ सात पीढ़ियों तक खून मिलता हो। धर्म और देश के सम्बन्ध में भी ऐसा ही होता है।

२८९.खून–पसीना एककरना :– घोर परिश्रम करना।

२९०.मुण्डी रै परसै(पसीना) घुण्डी पजाणा :–

कठिन परिश्रम से पसीना बहा कर काम करना ।

२९१.हाथ रांगणै :–

बहुत धन कमाना, अधिक लाभ उठाना।

२९२.हाथ पीऊँळे करना :–विवाह करना ।

२९३.हाथ पांधै हाथ डाही बेशणा :–

बेकार बैठे रहना।

२९४.हाथों–हाथ चकणा :–

अत्यन्त सम्मान करना। प्रशंसा करना।

tharahkardu.in

२९५.हाथ पसारने :—याचना करना। भिक्षा आदि मांगना।

२९६.हाथ पैर मारने :'

प्रयत्न करना, चेष्टा करनी।

२९७.हाथ ढाकणा :—

सहायता मांगनी, सहारा लेना।

२९८. हाथों हाथ बिकणा :—

शीघ्रता से बिक्री होना।

२९९.मूठ चलाणी :—

जादू—टोना करना।

३००.मुट्ठी आन्धरै रखणा :—

अपने वश में करना।

३०१.मूठी कशणी, बाही फशणी :—

हाथापाई के लिए तैयार होना, मार—पीट के लिए उद्यत होना।

३०२.नांगै रा की नचोड़ना, टूण्डै रा की मरोड़ना:—

जिसके पास पहनने के लिए वस्त्र ही नहीं, उसका क्या निचोड़ें तथा जिस के हाथ ही नहीं हैं तो उसका क्या मरोड़ें।

३०३.केरू—कराउदा होणा :—

जादू—टोना की सम्भावना होना।

३०४.चोरा री हीक त्वाउळी :—

अपराधी का मन उतावला होता है।

३०५.चोरी रा कपड़ा, डाँगे रा गज़ :—

कुछ चोरों ने कपड़ा चोरी करके लाया।परन्तु जब आपस में कपड़े का बंटवारा करने लगे तो कपड़े नापने का गज़ तो था नहीं, इसलिए अपने हाथ में पकड़े हुए डण्डे से ही कपड़ा नापने लगे। मुफ्त में मिले माल को बेदर्दी से उपयोग में लाना।

३०६.अहिरण चोरिया सीउणी रा दान करना :—

लोहार जिस मोटे लोहे के टुकड़े पर अन्य लोहा टीपता है

Digitised by
Tharah Kardu

उसे अहिरण कहते हैं। उस लोहे की चोरी करके उस लोहे के मुकाबले सूई का दान करना व्यर्थ है। अर्थात अथाह काला–धन कमाकर कोई लेशमात्र का दान करे, उसपर ही ऐसा कटाक्ष किया जाता है।

३०७.नींजै सोणा :–

निश्चिंत होकर सोना ।

३०८.सुपने भाळने :–

संकल्प–विकल्प करना। विशेषकर अपने सुख केलिए ख्याली पुलाव बनाना।

३०९.चोरा बै बोलणा चोरी केर, मोरा बै बोलणा जागदा रौह :–

दोहरी भूमिका निभाना। किसी से भी बैर न लेना ।

३१०.एकै शाण नी डाहणी ढाकी :–

निरन्तर ज़िद नहीं करनी चाहिए।

३११.काना नी धीजणा, आच्छी धीजणा :–

सुनी–सुनाई बात पर यकीन नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह झूठी भी हो सकती है। आंखों देखी बात ही सच्ची होती है। उसी पर विश्चास करना चाहिए।

३१२.कान खड़े केरने :–

चौकन्न हो जाना। होशियार रहना।

३१३.कान पकड़ना :–

किसी बुरे कर्म को फिर से न करने के लिए अपने मन को प्रेरित करना।

३१४.भाट–भटाई ऊआ बाई :–

जो रुढ़ीवादी पाखण्डी ब्रह्मण बहु क्रियाक्रम वाले कर्मकाण्ड को पूरा करने का आग्रह करता है, उसी के लिए ऐसा कहा जाता है।

३१५.आळू नी अन्न, भेड़ान् नी धन :–

किसी ज़माने में आलू बीजने से विशेष लाभ नहीं होता था, अधिकतर आलू सड़ कर नष्ट हो जाता था। भेड़–बकरियां पालना भी घाटे का सौदा माना जाता था। तभी उपरोक्त उक्ति का प्रयोग इन दोनों पर

tharahkardu.in

चरितार्थ होती थी। परन्तु आज के ज़माने में भेड़ बकरियां पालने वालों का लाखों का बारा–नियारा होता है इसी प्रकार आलू का व्यापार भी अच्छी आय देने वाली सब्ज़ियों में गिना जाता है।

३१६.शाहूरी रा जुआंई, माहूरी रा मूशा नी चूटदा :–

माहूरी 'धान' की एक किस्म है, जिसको चूहा बड़ा पसन्द करता है। जुआई भी ससुराल जाना प्राय: अधिक पसन्द करता है।

३१७.चुटा दिल ता फूटा शीशा नी जुड़दा :–

अर्थ स्पष्ट है।

३१८.काढ़ी ज़ाणी भारी :–

जो आदमी धरती से भारी पत्थर अपने आप नहीं उठा सकता,परन्तु यदि कोई अन्य आदमी पत्थर उठाकर उसपर लाद दे, फिर वह उठाने के लिए उद्यत हो जाता है। इस प्रकार निरुद्यमी स्वयं कुछ भी नहीं कर सकता। वह वही कुछ करता है, जो कोई अन्य व्यक्ति उसे करने के लिए विवश कर दे।

३१९.'मगरु–गौही' जेतरी हाण्डी, तेतरी रौही :–

'मगरु–गौही' मण्डी जिले की एक कन्दरा–नुमा एक घाटी है। यह अत्यन्त ऊँचा और सीधी चढाई वाला मार्ग है। एक दिन
एक व्यक्ति ने जो अपने साथ एक अन्य दुबर्ल आदमी के साथ इस मार्ग से गुज़र रहा था, मार्ग में वह दुर्बल व्यक्ति अधिक थक गया और पूछने लगा कि अभी कितनी चढ़ाई का मार्ग शेष है। दूसरे व्यक्ति ने उत्तर दिया कि जितनी चढ़ाई चढ़कर हम यहां पहुंचे हैं, लगभग उतनी ही चढ़ाई और है। यह सुनते ही उस व्यक्ति की हृदय–गति रुक जाने से वहीं मृत्यु को प्राप्त हुआ। किसी कठिन कार्य के विषय में ऐसा कहा जाता है, जब वह पूरा होने में न आए।

३२०.छाही चिल्हड़ै रा छान्दा :–

विदुर के साग–रोटी का निमन्त्रण अर्थात किसी निधन व्यक्ति का आदरपूर्वक निमन्त्रण।

Digitised by
Tharah Kardu

३२१.भाई—सराजी, मर्द गाजी :—

सराज—क्षेत्र में जब बहुत से मर्द किसी भारी पत्थर या अन्य वस्तु को उठाने का उद्योग करते हैं,तभी उक्त नारे को बार—बार दोरहा कर बोला जाता है। इस क्रिया को 'हेसर' कहते हैं। पुरुषों को अधिक बल लगाने एवं उत्तेजित करने के लिए अश्लील—नारे भी लगाए जाते हैं।

३२२.जाति मौंझै खौश, शिखा मौंझै भौश नी जुड़दै—

शिकार में फेफड़ा और जातियों में खौश किसी से अधिक मेल—मिलाप नही करते।

३२३.मियां—बीबी राजी, क्या करे काजी :—

दो दिल अगर खुशी से जुड़ जाते हैं, तो इसमें कोई कुछ नहीं कर सकता।

३२४. पाणी रौहा निष्टी जागा :—

पानी अभिमान से रहित सदैव निम्न स्थान की ओर बहता है, अर्थात अत्यन्त शक्तिशाली होने पर भी निम्न स्थान की ओर ही बहता रहता है।

३२५. नौई—ढौग देणे री बारी आई :—

इतनी ग्लानी एवं दुःख से भर जाना, जिससे आत्मघात करने की नौवत आजाए। ढौग(पहाड़) से कूदना और नदी में डूब मरना ही आत्मघात के मार्ग हैं।

३२६.बौंहदी कूल्हा हौथ धोणे :—

जब कोई वस्तु सुगमता से उपलब्ध होरही हो, उसका समय रहत लाभ उठाना।

३२७.जौलदी आगी'न' घीऊ पाणा :—

जब आग पहले से ही जल रही हो तो फिर उसमें घी डाल कर उस आग को और अधिक प्रज्ज्वलित किया जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि दुःखी मानव को और अधिक दुःखी नहीं करना चाहिए। हानि पहुंचाने वाली आग में घी के स्थान पर पानी ही डालना चाहिए।

३२८.आरशी रा पाणी नी शोख बशान्दा :—

tharahkardu.in

केवल दम दलासे से दुःख दूर नहीं होता।

३२८.आरशी रा पाणी नी शोख बशान्दा :—

केवल दम दलासे से दुःख दूर नहीं होता।

३२९.झूरी रै वशे बड़—बड़े भी हौरा,
काठा बिन्हदा भौंरा, फूला आन्धरै मौरा :—

भंवरा सख्त—काठ में भी छेद कर देता है परन्तु वही काठ—छेदी भंवरा फूल के अन्दर बन्द होकर अपने प्राण देदता है। यह प्रेम का प्रभाव है। प्रेमी मर जाएगा परन्तु अपनी प्रेमिका को तनिक भी कष्ट नहीं देना चाहेगा।

३३०.मुण्ड—मौथै लागणा :—

कष्ट उठाकर कुछ सीखना। कई प्रकार की ठोकरें खाना।

३३१.घण्टी लाणी :—

शराब पीना। किन्नौर में शराब को घण्टी कहते हैं।

३३२.घण्टी बाज़दै होणा :—

बेकार हो जाना।

३३३.घीऊ खाणा बौला री ताईं,नशा पीणा गौला री ताईं :—

घी खाने से शक्ति बढ़ती है और नशा पीने से मनुष्य अधिक और बेकार की बातें करने लगता है तथा एक ही बात को बार—बार दोहराता रहता है।

३३४.हेसरू लाणा :—

हेसरू की व्याख्या हम ऊपर भी कर चुके हैं। इस क्रिया में लोग किसी भारी वस्तु को घसीटने या उठाने के लिए एक से अधिक लोग अधिक शक्ति न लगाकर सामूहिक रूप से झटका देकर कार्य करते हैं। इसी क्रिया को 'हेसरू' कहते हैं।

३३५.हाथा री चौंए :—

हाथ की मैल,अर्थात धन—सम्पति, विशेषकर अपने पूर्वजों की धन—सम्पत्ति को ऐसा कहते हैं। जैसे हाथ की मैल धुल जाने से कोई दुःख नहीं होता,ठीक वैसे ही अर्जित धन के जाने से विशेष दुःख नहीं

Digitised by Tharah Kardu

होता।

३३६.फाफा कूटण :—

दन्त कथाओं में एक ऐसी स्त्री आती है जो कुल्टा और छल—कपट करने वाली होती है। इस प्रकार के स्वभाव वाली स्त्री को आज भी फाफा कूटण कहते हैं।

३३७.सौ ज़िमी राणी, जौसै रै शीरै पाणी :—

नहरी ज़मीन (आवी—ज़मीन) जहां पर भी हो, वही ज़मीन सब ज़मीनों की रानी है।

३३८.माया तेरे तीन नाम, परसू,परसा, परसराम :—

थेड़े धन वाले को परसू, मध्यम धन वाले को परसा, और अधिक धन वाले को परसराम कहते हैं। अर्थात धन के अनुपात के अनुसार नाम की महत्ता घटती और बढ़ती है।

३३९.निहारै'न' छाळ मारनी :—

बिना सोचे समझे कोई कार्य करना।

३४०.ज़िमी'न' केरना खेऊ,घौर देआ सा मटलेऊ:—

मकान बनाने से कोई लाभ नहीं, उससे तो मिट्टी के टुकड़े ही उखड़कर निकलते हैं। ज़मीन में परिश्रम करने से ही लाभ मिलता है, उससे हमें अन्न—धन की प्राप्ति है।

३४१.गांठी नी दमड़ी, छैउड़ी लोड़ी ती राम्बड़ी :—

अपनी गाँठ में पैसा—धेला तो है नहीं, परन्तु मन में सुन्दर जोरू की कामना संजो रखी थी। अर्थात निर्धन मानव को अच्छी और सुन्दर वस्तुएं प्राप्त नहीं होती ।

३४२.अपणे टक्के बै लाणा खोट :—

दूसरों पर दोष लगाने से पहले अपनों के अवगुणों को देखना चाहिए।

३४३.खोटा पैसा वी एजा कामा :—

कभी निकम्मे व्यक्ति को तिरस्कृत नहीं करना चाहिए। कभी निकम्मा समझा जाने वाला व्यक्ति तथा खोटा पैसा भी काम आ जाता

tharahkardu.in

है।

३४४.देसी जोगी जोगड़ा, परदेसी जोगी सिद्ध :–

घर एवं आस–पास के क्षेत्र का योगी एवं पुरुष चाहे कितना ही विद्वान तथा सर्वगुण सम्पन्न क्यों न हो, स्थानीय जनमानस उसके गुणों एवं विद्वत्ता को विशेष महत्व नहीं देते जितना महत्व वे दूरस्थ–क्षेत्रों से आए हुए योगी को देते हैं जिस में चाहे एक ही गुण की प्रधानता के अतिरिक्त अन्य कोई विशेष गुण न हो।

३४५.शुके रा चोकण लूण :–

जब कोई सालन न हो तो नमक के साथ ही भोजन करना पड़ता है। उस समय नमक ही सालन बन जाता है।

३४६.खापरै बै लाठी रा सहारा :–

वृद्धावस्था में हर समय का सहायक एवं सहारा देने वाली जितनी एक लाठी देती है उतना हर समय का सहायक कोई नहीं होता।

३४७.आन्धे मोंझै काणा राजा :–

मूर्खों अथवा गुणहीनों में थोड़ी बुद्धि का मालिक एवं गुणों वाला ही श्रेष्ठ होता है।

३४८.लेणा एक न देणा दो :–

किसी बात से कोई सम्बन्ध न रखना।

३४९.खाल्हड़े बरयाळा छूटणा :–

बिल्ले को किसी खाल में बन्द करके जब बाद में दूर ले जाकर उसे छोड़ दिया जाता है तब वह इधर–उधार देखे बिना तीर की भान्ति बड़ी तेज़ी से भागता है। पकड़ से अथवा आपत्ति से छूटा हुआ मनुष्य भी इसी भान्ति भागता है।

३५०.गरीब गुण्डा :–

जो प्रत्यक्ष में भला–मानुष बनकर रहता है परन्तु परोक्ष रूप में कोई न कोई षड्यन्त्र रचाता रहता है।

३५१.रींघळा रा कोल्ह कोतणा :–

'रींघळ' भिड़ को कहते हैं।भिड़ जब अपने रहने के लिए

Digitised by
Tharah Kardu

घर—नुमा छजा तैयार करता है तब यदि कोई इस छज्जे से छेड़खानी करता है तब वे रींघळ झुण्ड के रूप में उस छेड़खानी करने वाले पर एकदम से आक्रमण कर उसे बुरी तरह काटना आरम्भ कर देते हैं। ठीक इसी प्रकार सुख—शान्ति से रहने वाले समाज को बिना किसी दोष से कोई दुष्ट छेड़खानी करता है तब समाज भी सामूहिक रूप से उस दुष्ट को दण्ड देने की कोशिश करते हैं। अर्थात किसी शक्तिशाली जीव से छेड़—छाड़नहीं करनी चाहिए।

३५२.कोल्हा रा चेलू :—

बहुत लाड़—प्यार से पलने वाला शिशु।

३५३.हा केरना :—

दुःख से छुटकारा पाकर शान्ति प्राप्त करना। निश्चिंत होना।

३५४.नचाह खोलणा :—

किसी पदार्थ को निचोड़ कर जो सार—तत्त्व निकाला जाता है उसे नचाह कहते हैं।

३५५.धना री त्रै गति, दान, भोग तथा नाश :—

धन के सार्थक उपयोग एवं दान देने से अपना तथा समाज का कल्याण एवं उपकार होता है और उपकार से धन की वृद्धि होती है। जिस धन का दान और सार्थक उपयोग में नहीं लाया जाता तो उस धन का नाश हो जाता है।

३५६.बांस नीति :—

बाढ़ का प्रकोप देख कर बांस झुक जाता है और उसे अपने ऊपर से गुजरने देता है। जब बाढ़ गुज़र जाए तो वह फिर अपनी पूर्वावस्था में आ जाता है। अपने से शक्तिशाली तत्त्व से बचने के लिए ऐसी ही नीति अपनानी पड़ती है।

३५७.ढौबे देये डुआकी :—

शराब ढौबे (पैसे) देकर भूखे गीदड़ की तरह पी जाती है और फिर हज़म न होने पर उल्टियां होने लगती हैं। ऐसे ही एक आदमी

tharahkardu.in

अधिक शराब पी कर उल्टियां कर रहा था। एक पथिक ने दूसरे पथिक से कहा— 'देखो बेचारा कितना कष्ट उठा रहा है।' दूसरे
ने उत्तर दिया— ''छोड़ो इसे, इसने ढौबे देये डुआकी खरीदी है।

३५८.जैबै कान्हा पान्धै जुँगड़ा पौऊ, सौ पड़ा घशीटणा :—

खेतों में हल—बैल जोतते समय जब उनके कन्धों पर जूआ (जुंगड़ा) पड़ता है तब उन्हें वह हल घशीटना ही पड़ता है। कहने का भावार्थ यह है कि जब कभी भारी कार्य का भार कन्धे पर आ पड़ता है तो उसे निभा कर ही छुटकारा मिलता है।

३५९.बेजे रा हीकडू, काले री औड :—

बुद्धिमान मनुष्य की सोच—विचार की शक्ति सराहनीय होती है और मूर्ख की हठ दुःखदायी होती है।

३६०.राज—देउआ री हठ :—

राजा और देवता जो कार्य करना तथा कराना चाहते हैं उसे कर—कराके ही दम लेते हैं उसके विरुद्ध कोई भी तर्क—वितर्क नहीं सुनते।

३६१.बीलै हौळ, कोडी मौळ :—

बील अथवा बीड़ खेत के निचले किनारे को कहते हैं, हल चलाना वहीं से शुरू करना चाहिए। खेत का ऊपर वाला भाग कोड कहलाता है, गोबर कोड वाले भाग से डालना आरम्भ करना चाहिए।

३६२. आगे दाची पीछै हौल :—

ऊँचे क्षेत्रों की भूमि में पहली फसल काटने पर तुरन्त दूसरी फसल बीजनी पड़ती है, तभी उससे वर्ष में दो फसलें प्राप्त होती है। इस प्रकार आगे—आगे दरातीं फसल काटती जाती है और पीछे—पीछे हल दूसरी फसल बीजता जाता है।

३६३.एक मां जौणनाळी, दूजी मां गाए, त्रीजी मां पजदी,चौथी मां धाए :—

पहली मां जीवन देती है, दूसरी मां दूध देती है, तीसरी मां अन्न देती है और चौथी मां देख—भाल करती है।

Digitised by
Tharah Kardu

३६४.नज़ाण विद्या प्राण खेऊ :–

जो कार्य न आता हो,यदि कोई फिर भी उसे करने लगे तो वह कार्य बहुत कष्ट देने लगता है और कार्य भी ठीक से सम्पन्न नहीं होता,जिसे हम यूं भी कह सकते हैं–

"जिसका काम उसी को साजे, और करे तो ढींगा बाजे।"

३६५.गूगळै धूपे आईदी :–

जो बहू विधिवत विवाह करके लाई गई हो, बह गर्व से स्वयं को 'गूगळै–धूपै लाई' हुई कहती है।

३६६.डूघा बाह ता रज खा :–

यदि धरती में हल गहरा और परिश्रम से लगाया जाए तो फसल भरपूर होगी जिससे पेट भर कर खाना प्राप्त होगा।

३६७.गेढू राक्सा री जाच :–

कभी–कभी रात के अन्धेरे में कहीं दूर–पार जलती हुई मशालों की चलती–फिरती हुई पक्तियों का जमघट सा दिखाई देता हैं, ऐसा आभास होता है कि वहां कोई मेला सा लगा हुआ हो, परन्तु जब हम उनके पास जाएं तो वे प्रज्ज्वलित पंक्तियां लुप्त हो जाती है। लोगों की धारणा है कि वह राक्सों की एक जाति है जो अपने सिर पर जलती हुई अंगीठियां लेकर घूमते है। वे किसी को कोई हानि नहीं पहुंचाते। यह अंगीठियां जलती और बुझती रहती हैं।

३६८.सर्पै खाउदा डौरा राशी का भी :–

सांप द्वारा डसा हुआ आदमी रस्सी से भी डरने लगता है। गुण्डे द्वारा सताया हुआ आदमी भले–मानुष सज्जन से भी डरने लगता है।

३६९.लोहा लाल रौहणे तईं टिपणा :–

जब लोहा गर्म होकर लाल होता है, तब वह अपनी कठोरता त्याग कर नरम होता है तभी उस पर चोट मारने से किसी भी रूप में ढाला जा सकता है। किसी कार्य को अपनी इच्छानुसार मोड़ने के लिए उचित समय की चोट ही बेहत्तर होती है।

३७०.लोहे बै लोहा काटा सा :–

tharahkardu.in

बराबर की शक्ति से ही तुलना की जा सकती है।

३७०.लोहे बै लोहा काटा सा :—

बराबर की शक्ति से ही तुलना की जा सकती है।

३७१.पाथरू फेरिया जाणा :—

किसी स्थान से सदैव के लिए प्रस्थान करना।

३७२.पराई पीठिऐ नगारा बजाणा :—

श्री रघुनाथ जी का एक नगारा है जिसे एक आदमी अपनी पीठ पर उठाता है और एक अन्य आदमी उसे बजाता है। छिंज–मेलों में भी ऐसा ही नगारा बजाया जाता है। नगारा बजाने वाला अपनी पूरी शक्ति लगाकर उस नगारे को बजाता है। जो कार्य दूसरे के खर्च एवं शक्ति पर किया जाता है और अपना उसमें कोई खर्च न करना पड़े, तभी ऐसा कहा जाता है।

३७३.मूळा'न' ज़ादा व्याज़ प्यारा :—

साहूकार अपने मूलधन को प्राप्त करने से पहले व्याज़ प्राप्त करता है, अपने मूलधन को उसके बाद लेता है। इसी तरह पुत्रों से अधिक पोते प्यारे होते हैं।

३७४.दूध—भाई एकी जन्मा रै, धर्म—भाई सात जन्मा रै :—

दूध—भाई का प्रेम पितृ—सम्पत्ति तक सीमित रहता है परन्तु धर्म—भाई का रिश्ता प्रेम और आस्था पर आधारित सात जन्म तक साथ निभाता है।

३७५.पहले तोलणा, फिरी बोलणा :—

किसी बात को प्रकट करने से पूर्व उसके परिणात के बारे में अच्छी तरह सोच—विचार करना चाहिए।

३७६.कारदारी रा काठ :—

कारदार को देव—कार्य हेतु अपने सौ काम छोड़ कर भी जाना पड़ता है। देवाज्ञा का उल्लंघन नहीं किया जा सकता।

३७७.दूरे रा ढोल सुहाउणा, नेड़ा रा डराउणा :—

Digitised by
Tharah Kardu

३८५.पढ़–पढ़ के पण्डित मुके, शृंगार कर–करके नारी,
मेरा–तेरा कर–करके, मूके सकल संसारी :–

पण्डित लोग पोथी पढ़–पढ़ करके समाप्त हो गए, परन्तु सार–तत्त्व को प्राप्त न कर सके। नारी भी अपने शृंगारिक प्रसाधन से इस संसार को रिझा न सकी। इस संसार के जन मानस भी, यह मेरा है, यह तेरा है, इसी चक्रव्यूह में फंस कर इस संसार से कूच कर गए। इस प्रकार सभी इस संसार के सभी प्राणी खाली हाथ आए और खाली हाथ गए।

३८६. लागा ता तीर, नी ता तुका :–

किसी कार्य की सफलता के लिए हाथ डाला जाता ह।, यदि उसमें सफल हुए तो कहेंगे कि हमने यह निशाना (तीर) लगाया था, यदि असफल हुए तो कहेंगे कि हमने हंसी–मज़ाक में यह कार्य सम्भाला था।

३८७.राजे रै घौरा मोती रा काळ :–

जब कोई श्रेष्ठ–पुरुष सब कुछ होते हुए भी यह कहता है कि मेरे पास कुछ नहीं है तब उसकी भर्सत्ना के लिए ऐसा कहा जाता है कि वह झूठ बोल रहा है।

३८८. राजा बलि बै बुरी तरह व्यापू काळ,
तेई जाणा ती सरगा बै,पर पड़ी गऊ पताळ :–

काल की गति को कोई नहीं जानता।

३८९.कोयले री दलाली, मुंह काळा हाथ खाली :–

कोई कार्य ऐसे भी होते हैं जिन में हाथ डालने से बदनामी के अतिरिक्त कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

३९०.मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त :–

जब कोई अपने कार्य की सफलता प्राप्त करने में ढील कर रहा हो और उसका सहायक उस कार्य को सफल बनाने में अधिक प्रयास कर रहा हो तभी ऐसा कहा जाता है।

३९१.पत्नी:–**"ए सी बेटड़ी री चाले, सीर मुने ता मुंह कैरै काळै।"**

tharahkardu.in

पति :—"ऐ सा मर्दा री फेरी, मां मेरी कि तेरी।"

सास और बहू की अनबन परम्परा से चली आ रही है। एक बहू ने अपनी सास को अपमानित करने के लिए एक योजना बनाई। उसने एक दिन विमार होने का बहाना बनाया। एक दिन पति से कहने लगी कि मुझे सपने में देवी ने दर्शन देकर कहा है कि यदि तेरी सास अपना सिर मुण्डवा कर मुंह काला करके और भांग का घाघरा लगाकर लोगों के सामने नाचेगी, तब तेरी विमारी दूर हो जाएगी। पति ने कहा कि इस बात की चिन्ता मत कर, मेरी मां तेरी विमारी को दूर भगाने के लिए अवश्य नाचेगी। अत: वह सीधा अपनी मां के पास न जाकर अपनी सास के पास गया और कहा कि आप की बेटी सख्त विमार है, उसे सपने में देवी ने कहा है कि यदि आप अपना सिर मुण्डवा कर मुंह काला करके तथा भांग का घाघरा पहन कर लोगों के सामने नाचेंगी, तो वह स्वस्थ हो जाएगी। पुत्री—स्नेह के कारण उसने इस प्रकार से पहरावा पहन कर नाचना स्वीकार कर लिया। दामाद ने अपनी सास का सिर मुण्डवा कर तथा उसका मुंह काला करके सब लोगों के सामने नचाया। उसकी पत्नी प्रसन्न होकर और उछल कर के बड़े ज़ोर से हंसने लगी और कहने लगी—
''देखा—देखो बेटड़ी री चाले, सिर मुने मुंह केरे काले।"

उसी क्षण पति ने उत्तर दिया—

"ऐ सा मर्दा री फेरी, मां मेरी कि तेरी।"

वास्तविकता देख कर पत्नी बहुत लज्जित हुई।

३१२.काठा रा मुंह आळा :—

फागली के मेले में लकड़ी के बने मुखौटे पहन कर अश्लील शब्द बोलते हुए नाचते हैं। उनको 'मढियाळे' कहते हैं। उस दिन वे अश्लील बकने में लज्जा अनुभव नहीं करते। ऐसे ही निर्ल्लज व्यक्ति को 'काठा रा मुंह आळा' कहते हैं।

३१३.छार्ही :—

साधुओं का एक वर्ग अपने सारे शरीर पर राख मल करके

Digitised by
Tharah Kardu

एक लंगोटी पहन कर घूमते हैं। इसके अतिरिक्त इनके पास कुछ भी नहीं होता। ऐसे ही अकिंचन व्यक्ति को 'छार्ही कहते हैं।

३९४.शाठा बुद्धि आळे रुण्डके–रुण्डके,शौऊ बुद्धि आळै तुआणे, धन भाग तेरे मैण्डकेया,वक्ते पाए भ्याणे :–

एक दिन घनघोर घटा देख कर एक मैण्डक ने जाना कि ओले पड़ने वाले हैं, अत: वह अपने सुरक्षित स्थान की खोज में निकल पड़ा। आगे चलकर उसे एक सर्प मिला तथा उससे कहा कि ओले पड़ने वाले हैं, चलो कोई सुरक्षित स्थान ढूंढें। सर्प ने कहा–' मुझे इस बात की कोई चिन्ता नहीं है, मेरे ओले से बचने के लिए मेरे पास 'साठ–बुद्धियां' हैं तू चला जा। मैण्डक को आगे चलकर एक कौआ मिला और उसे भी ओले आने की चेतावनी दी और कौए ने कहा– 'मेरे पास ओले से बचने के लिए 'सौ बुद्धियां' हैं, इसलिए तू चला जा। मैण्ढक आगे चलकर एक चट्टान की कोख में घुस गया। तभी बड़े जोर–शोर से बड़े–बड़े ओले पड़ने लगे। जब आसमान साफ हुआ तो वह कोख से बाहर निकला। वह कौउए और सर्प की कुशलता जानने के लिए उनके पास गया। उसने देखा कि सांप के टुकड़े–टुकड़े हो गए हैं और कौआ धरती पर औंधे मुंह पड़ा है। तभी उसने उपरोक्त पुआम की रचना की।

३९५. 'नाक सा ता सब किछ, नाक नी आथी ता किछ नी':–

उपरोक्त पुआम के शाब्दिक अर्थ से तो ज्ञात होता है कि सौन्दर्य का प्रथम–अंग नाक ही है। जिस की नाक सुन्दर हो, उसकी आंखें, भवें, ललाट, गाल, ठोड़ी, गला आदि सब अवयव सुन्दर लगते हैं। जिस की नाक भद्दी हो और सब अवयव सुन्दर हों, वह सुन्दर नहीं लगता, फिर भी हिन्दी और उर्दू के कवियों ने सौन्दर्य–वर्णन में नाक की इतनी प्रशंसा नहीं की है जितनी कि अन्य अवयवों की प्रशंसा की है। संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य में नाक की पर्याप्त प्रशंसा है। महाभारत में युधिष्ठिर की नाक की बड़ी प्रशंसा की गई है और उनकी नाक को सुभग की नासिका से तुलना की गई है। फारसी में भी नाक की सुन्दरता को माना गया है।

tharahkardu.in

अंग्रेजी–साहित्य में तो नाक की सुन्दरता को अधिक महत्व दिया गया है। एक कवि ने अपनी प्रेयसी के सौन्दर्य की प्रशंसा इस प्रकार की है:–

Eyes like pearls,cheeks like rose,
O my goodness! what a fine nose.

एक अन्य कवि ने तो यहां तक कहा है कि :–

It is the first ,the nose and then,
The eyes the brows the cheeks the chin.

उपरोक्त उक्ति का भावार्थ यह है कि यदि मान–सम्मान है तो सब कुछ है यदि नहीं तो कुछ भी नहीं।

३९६.बिण्ही फीसा रा वकील :–

जो व्यक्ति अकारण ही किसी का पक्ष लेता फिरे, ऐसे व्यक्ति पर ही यह फिकरा कसा जाता है।

३९७. तौउऐ री तेरी, गेठे री मेरी :–

जब किसी वस्तु को प्राप्त करने के लिए आपा–धापी चल रही हो तभी ऐसा कहते हैं। गेठे की रोटी तवे की रोटी से पहले पकेगी, इसलिए यह मेरी है।

३९८.बान्दर शोटू ढौगै, तेईरा तौखै घौर :–

किसी को ऐसा दण्ड देना, जो उसके लिए वरदान बन जाए।

३९९. भूली गए राग–रंग,भूली गए छकड़ी,
तीन चीज़ें याद रहीं, लूण, दाळ, लकड़ी।

ढलती आयु के जनमानस के मन की भावनाएं ही इस प्रकार की होती है जिन्हें सांसारिक गतिविधियों से अरूचि हो जाती है।

४००.हाथी री छूहा,सौभी री छूह :–

हाथी का पदचिहन् सब से बड़ा होता है। सभी के पदचिहन् उसमें समा जाते हैं। अर्थात सबसे बड़ा प्रभावशाली पुरुष, जिस के साथ सब सहमत होते हैं।

Digitised by
Tharah Kardu

४०१.मूआं हाथी नौलाखा रा :—

कहते हैं कि जब हाथी मर जाता है तब उसका मूल्य बढ़ जाता है। अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि तरने के पश्चात् सब की प्रशंसा होती है, जीते जी चाहे न भी हो।

४०२.गौळे ताई गंगा, तौखै'न' ऊझे जौम्पर :—

गंगा में गले तक डुबकी लगाने से ही पुध्य की प्राप्ति होती है। यदि गले से ऊपर सिर को डुबो कर पानी लांघने लगे, तब गंगा भी यमलोक का द्वार खोल देती है। अर्थात शुभ कार्य भी एक सीमा तक ही अच्छे होते हैं।

४०३.जौखै नी चौले जोर, तौखै चला धोर :—

कई कार्य शारीरिक बल से नहीं चलते, उनके लिए बुद्धि का सहारा लेना पड़ता है।

४०५.छींक जम्हाई बुरी कमाई,पद,डकार गुणाकार :—

यह वैद्य—शास्त्र का नियम है कि यदि छींकें और जम्हाई आने लगे तो यह विमार होने के लक्षण हैं और यदि डकार और अधोवायु होने लगे तो अच्छे स्वास्थ्य के लक्षण हैं। **४०५.जो कढ़ूदा केरासा,सौ नी पौढ़ूदा केरी सकदा :—**

अधिक पढ़ाई मात्र से कुशलता नहीं आती। पढ़ाई के अतिरिक्त अनुभवी होना अनिवार्य है। अनुभव से कार्य कुशलता बढ़ती है।

४०६. नीला—चिट्ठा फिरना :—

बहुत अधिक शारीरिक बल लगाना। अधिक शारीरिक बल लगाने से चेहरा नीला और श्यामल हो जाता है।

४०७.छ: चार होना :—

छ: और चार दस—नम्बर होते हैं। किसी को दस—नम्बरी न कह कर छ: चार के नाम से ही सम्बाधित करते हैं, जो साधारण मानव से अधिक चतुर होते हैं।

४०८. 'अन्धा झूरा एकसा बै, दुहै मिले ता धन भाग :—

अन्धे को एक आंख वाला मिले, तब वह बुछ सन्तोष

tharahkardu.in

करेगा,यदि दोनों आंखों वाला मिल जाए तो धन—भाग। कहने का भाव यह है कि जो थोड़े पर ही सन्तोष करता है और यदि उसे अधिक मिल जाए तो वह दाता की महान कृपा मानता है।

४०९.बड़े बाबा रा बेटा होना :– स्वाभिमानी होना ।

४१०.सीउणी री पाशी बाते निसरना :–

सूई में धागे लगाने वाले सुराख को पाशी कहते हैं, अर्थात बहुत तंग रास्ता। किसी नाजुक स्थिति से बाल—बाल बच कर निकलना।

४११.चार सौ बीह होना :–

धोखेबाज़ इनसान को ही चार सौ बीस कहा जाता है। भारतीय दण्ड संहिता की धारा ४२० में धोखादेही के अपराध के लिए दण्छ का प्रावधान है। इसलिए धोखेबाज़ को 'चार सौ बीह' कहते हैं।

४१२.पाँव गर्म, पेट नरम, सिर ठण्डा :–

यह उक्ति स्वास्थ्य के विषय में है। अपने पांव सदैव गर्म रखने चाहिए। पेट नरम का आशय यह है कि भोजन उतना ही करो,जिसे हम असानी से हज़्म कर सकें।

४१३.हाथी मारा चीट बी :–

कहते हैं कि यदि हाथी के पेट में च्यूंटी चली जाए तो, उसकी मृत्यु हो जाती है। हाथी घास को इसी कारण से मुह में डालने से पहले झटकता है, ताकि मुख में कोई च्यूंटी न चली जाए। बडे लोगों की मान मर्यादा को कोई कोटा आदमी भी नष्ट कर देता है।

४१३.जां तई संक्त तां तई वक्त :–

जब तक मनुष्य में सामर्थ रहजा है, तभी तक कुछ करने का समय रहता है।

४१४.खाई भाती त्रेकडे शाती :–

यदि किसीके यहां भोज खाया जाए तो उससे उस व्यक्ति बदला उपकार होता है।

Digitised by
Tharah Kardu

बदला उपकार होता है।

४१५राह बाह करना :—

समस्या का निपटारा करना।

४१५इटा चूटा केरना :—

लेन—देन चुकता करना।

४१६कामी धामी :—

किसी मन्दिर या देवता के कार्य करता।

४१७औलणा छांदा :—

जो निमन्त्रण सच्चे प्रेम से न दिया जाए, केवल दिखावे के लिए दिया जाए उसे ऐसा कहते है।

४१८शीरे :—

एक परिवार के समस्त पुरूष सदस्य।

४१९काळा मुह केरना :—

अबैध स्त्री समागम करना।

४२०.छांफले केरने :—

चपलता करनी, मिथ्या प्रेम प्रदर्शन।

४२१.डम्रेज लगणा :—

'डम्रेज' अंग्रेजी—भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है किसी असावधानी के कारण हानि उठाना।

४२२.बौळद बेचिया सोणा :—

जिसने बैल बेच दिए हों और हल—जोतने के लिए भूमि न रखी हो और फिर निश्चिंत होकर सो गया हो, ऐसे प्रमादी व्यक्ति के लिए ऐसा ही कहा जाता है।

४२३.जो हौसे सो फौसे :—

यदि किसी अपरिचित व्यक्ति से प्रेम सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपने प्रेम भरे हाव—भाव से उसे प्रसन्न करने का यत्न किया जावे यदि वह वह उसके प्रेम भरे आचरण से हंसने लगे, तो इससे यही निष्कर्ष निकलेगा कि आपके द्वारा किए गए प्रयत्न से सहर्ष स्वीकृति है।

tharahkardu.in

यदि वह वह उसके प्रेम भरे आचरण से हंसने लगे, तो इससे यही निष्कर्ष निकलेगा कि आपके द्वारा किए गए प्रयत्न से सहर्ष स्वीकृति है।

४२४.माण्हू पछियाणियां सा कौले–बचने,
फूल पछियाणियां सा वासै :–

मनुष्यों की पहचान उसके अच्छे आचरण एवं प्रण तथा प्रतिज्ञाओं से लगाया जाता है। फूलों की पहचान उसकी सुगन्धी से लगाया जाता है।

४२५.दौसे सौंघै मौरना भी शोभला :–

सब के साथ सहयोग करना चाहिए। उनके साथ मरना भी पड़े तो अच्छा है।

४२६.अपणी सौह, अपणी जाच :–

अपने गांव, जनपद, एवं अपने देश में पूर्ण स्वच्छन्दता तथा स्वतन्त्रता से आचरण के लिए, जहां हमें कोई भी काम करने से रोकने वाला न हो।

४२७.पोगळै पाणे :–

जब कोई देवता किसी दूसरे देवता के गांव में पहली बार जाता है और जो लोग उसके साथ आते हैं, उनको मेजवान गांव में प्रत्येक घर में बांट कर भेजा जाता है। कौन किसके घर जाए, इसका निर्णय इस प्रकार किया जाता है कि आगन्तुक लोग, मेजवान देवता के 'मेहता' के पास अपने–अपने निशान देते हैं, जैसे छत्री,
लाठी, रुमाल या कोई अन्य वस्तु आदि। इनको ही 'पोगळ' कहते हैं। मैहता उनको गिनकर अपने गांव के घरों में बांट देता है। प्रत्येक घर के भाग में जितने व्यक्ति आते हैं, मैहत उतने पोगळ उस घर में जाने को कहता है। फिर वे अपने–अपने पोगळ पहचान कर उस घर में जाते हैं। जब कभी आज का मेजवान–देवता उस अतिथि–देवता के गांव में जाता है,तो उसके लोग (हारियान) उन–उन के घरों में जाते हैं जो पिछली बार उनके घरों में आए थे। इनको एक दूसरे के 'खिण्डू' कहते हैं और ये सदा के लिए बनते हैं। मेजवान अपने–अपने खिण्डुओं को बड़े आदर और

Digitised by
Tharah Kardu

के लिए बनते हैं। मेजवान अपने—अपने खिण्डुओं को बड़े आदर और सम्मान के साथ अपने घरों को ले जाते हैं।

४२[redacted]ण्डणी नी, सौ पूछणी कीबै :—

जिस विषय से कोई सम्बन्ध ही न हो, उसके बारे में अधिक पूछ—ताछ अच्छी नही।

४२९.एसा नगरी एण्डा हाल, होरहे नाटी होरै ताल :—

जहां लोग मनमानी ढंग से आचरण करते हों उन्हीं के लिए ऐसा कहा जाता है।

४३०.जाच छाडनी, बाच नी छाड़नी :—

'जाच' मेले को कहते हैं और 'बाच'बीजाई के लिए उपयोगी अवसर को कहते हैं। यदि ये दोनों अवसर एक साथ आ जाएं तो जाच को तो छोड़ा जा सकता है परन्तु बाच को कभी न छोड़े।

४३१.बाब बड़ा न भैया, सबसे बड़ा रुपया :—

बाप और भाई भी वह कार्य नहीं कर सकते जो कार्य रुपया (धन) कर सकता है।

४३२.जान जाए पर आन न जाए :—

अपने मान—सम्मान के लिए जान भी देनी पड़े तो दे देनी चाहिए।

४३३.'बाहू' बोलिया पुजू बगाणा :—

'बाहू' और 'बगाणा' बन्जार तहसील के अन्तर्गत दो गांव हैं। कोई व्यक्ति बाहू गांव को जाना चाहता था, परन्तु भूल से बगाणा पहुंच गया। कोई बड़ी भूल होने पर ही ऐसा कहा जाता है।

४३४.होरा बै ज्ञान, आपू बै गौष्टै :—

कोई मनुष्य अन्य को तो ज्ञान और शिक्षा का पाठ पढ़ाते हैं परन्तु स्वयं उसपर आचरण नहीं करते।

४३५.बेटड़ी रै पेटा'न' गल नी पचदी :—

स्त्रियां किसी बात को गुप्त नहीं रख सकती।

४३६.अन्न वाळा बेशा चाउड़ी, ढैउआ आळा खोळी :—

tharahkardu.in

अन्न वाला धन वाले से श्रेष्ठ है।

४३७.काची कणकी ठारा स्वाद :—

आनणीत बात को इच्छानुसार बदला जा सकता है।

४३८.एकी फाटै डाळ नी काटिदा :—

किसी समस्या को एक ही बार कह देने से उसका समाधान नहीं हो सकता।

४३९.ठोला पान्धे लागा ठोला :—

घाव पर ही सदैव चोट लगती है।

४४०.सियास्त लड़ाणी :—

चालाकी जतानी, अधिक चतुराई दिखाना।

४४१.पाथे रा खौलड़ू कौखै मिलणा :—

कोई भी पात्र वाञ्छित माप का कभी नहीं मिलता। या तो अधिक मात्रा का पात्र मिलेगा या कम।

४४२.बागर लागणी :—किसी वस्तु की प्राप्ति से वंचित रहना।

४४३.गजौजै खालड़े पड़ना :— कठिनाई में पड़ना।

४४४.ज़ौसरै भेड़ा तेईबै बखेड़ा :—

जो व्यक्ति संघर्ष करता है, उसी को कठिनाईयां पड़ती हैं।

४४५.काती चूई, हींउद दूई :—

यदि कार्तिक मास में वर्षा हो तो जाड़ा दो वार होता है।

४४६.माघ मघेरा, फागण पेरा :—

यदि माघ में छुटपुट वर्षा हो तो फागुण में बहुत वर्षा होतो है।

४४७.टोटे ज़ोर, पोटै नी किछ :—

वाणी से बहुत बुरा भला कहना, परन्तु मन में कोई दुर्भावना नहीं।

४४८.ज़ौहू नां पौळू तई :—

बचपन से बुढ़ापे तक, अर्थात आयु भर।

Digitised by
Tharah Kardu

४४९.लंका री श्याळ :–

प्रत्येक बात की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को ऐसा कहते हैं।

४५०.ज़रूरता पान्धे, गधे बै भी बाब :–

आवश्यकता पड़ने पर अवाञ्छित व्यक्ति को भी बाबा बोलना पड़ता है।

४५१.म्हीन पीशणा :–लम्बी विमारी काटना।

४५२.गर्ज़ केरा अर्ज़ :–

आवश्यकता पड़ने पर मिन्नतें भी करनी पड़ती हैं।

४५३.ग्रास देणा वास नी देणा :–

किसी अपरिचित व्यक्ति को निसन्देह भोजन खिलाओ, परन्तु उसे निवास मत दो।

४५४.ताऊँदी रै तपस्वी, सौंमे रै दातै :–

निम्न–स्तर का कार्य करने वाले भी कभी–कभी बड़ी–बड़ी डींगें मारते है।

४५५..जो करे जी, तैईरा केरना की :–

विनीत–भावना से ओत–प्रोत मनुष्य सर्वप्रिय होता है।

४५६.घौरा रा घौरठ बणाणा :–

घर की धन–सम्पत्ति नष्ट करना।

४५७. जैसी मां वैसी धी, जैसा चोपड़ वैसा घी :–

नारी को लाञ्छन लगाने के लिए ऐसा कहते हैं।

४५८.धारा लुम्बरू लाणा :–

जिम्मेवारी से बचना।

४५९.नौ नुहाण्डू, दस नरेळा :–

बन्जार में नोहाण्डा–कोठी के लोग एक दूसरे के साथ हुक्का नहीं पीते थे और न ही खाते–पीते समय एक दूसरे छूते थे। एक बार नो नोहाण्डू अपना–अपना हुक्का पी रहे थे। दसुआं हुक्का बेकार पड़ा

tharahkardu.in

था। किसी ने पूछा कि यह दसुआं हुक्का किस लिए है। तो बताया कि यह उसके लिए है जो हमारे हुक्के में तम्बाकू नहीं पीना चाहता। जो मिलनसार न हो उसीके लिए ऐसा ही कहते हैं।

४६०.माण्हू मुखे दूणना :–

यह देवताओं का कथन है। जब गूर में देवता प्रवेश करके बोलता है।

४६१.छौली नाठी कुटळै, बुद्ध नाठी लुठळै :–

पहले पहाड़ी ज़मीन में मक्की नहीं पकती थी जो अब वहां पकरही है। ठीक वैसे ही बुद्धि भी उच्चकों के पास चली गई है।

४६२.धूँ देणा :–

छेड़ना। शहद की मक्खी के छत्ते से शहद निकालने के लिए उन्हें आग का धूँआं देकर हटाते हैं।

४६३.राज जेठा, देऊ कान्हा :–

राजाज्ञा का पालन सब को करना पड़ता है।

४६४.मैं भी रानी, तू भी रानी, कौन भरेगा पानी :–

जब सब अपने आप को सबसे श्रेष्ठ समझते हैं तो सेवा का कार्य कोन करगा।

४६५.एकी कोल्हा रै चेलू :–

एक ही दम्पत्ति की सन्तति।

४६६.काने न मने :–

जो बात न सुनी हो और न ही सोची हो।

४६७.होछणी चौड़ी, बाशदी बौड़ी :– छोटा मुंह बड़ी बात।

४६८.मां–बाबा री चौएं:–

धन को हम हाथ की 'मैल'(चौएं) कहते हैं। मां–बाप के धन–दौलत को प्राप्त करने की सब को लालसा होती है।

४६९.दान्द रिहाणे :– डराना, धमकाना।

४७०.खाखी डाहे ता दान्द, बाहर खोले ता हाड़कै:–

Digitised by
Tharah Kardu

अपने घर के रहस्यों को गुप्त रखने में ही उसकी शोभा निहित है, उन रहस्यों का घर से बाहर प्रचार–प्रसार करने से घर की शोभा में धब्बा लगता है।

४७१.जीवाण करना:–

अत्यन्त विनीत भाव से बात करने से सभी प्रसन्न होते है।

४७२.गौं–भै करना:–

गाय गौं–गौं करके बोलती है और भेड़ भै–भै करके बौलती है। यह दोनों आवाजें बड़ी अमूल्य एवं सादगी से भर पूर होती हैं। क़िसी के आगे प्रार्थना करते समय मुंह में घास का तिनका डाल कर गिड़गिड़ाते हुए ऐसी ही प्रार्थना की जाती है।

४७३.ज़ाक्खणी छूणी:–

ठोड़ी छूकर भी विनीत भाव से प्रार्थना की जाती है।

४७४.टोपी खोलणी:–

अत्यधिक विनीत भाव से मिन्नतें करना।

४७५.बाण्ढे डांगे रा खुड़:– जिस परिवार में पुरुष ही रहते हैं।

४७६.चोछ :–

मरते समय जिस गौऊ का दान किया जाता हैउसे चोछ कहते हैं।

४७७.धोखे के सींग चोरने:–

घौंघे के सिर में दो मांस के सींग लगे होते हैं,जब कभी उसे किसी भय का आभास होता है तो वह अपने सींगों को छूपा देती है।

tharahkardu.in

उपनी, बुझाहुणी, बुझारता, और पहेलियां

१.एक धागा सौ भी लागा:–

सम्बन्ध, रिश्ता। मनुष्य में कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य होता है।इस सम्बन्ध के धागे से कोई भी अछूता नहीं।

२.शोठी ऊपर कोठी, कोठी ऊपर पैसा, बूझणे वाला कैसा :–

अफीम का पौधा। पौधे की डण्डी के ऊपर डोडी होती है जो कोठड़ी के समान होती है। उसके सिरे पर एक गोल ढक्कन होता है जो पैसा जैसा होता है।

३. **पताळै हुआ गड्डू, सरगे लागी आग,**
ब्राघै ढाकी छेल्ही,छेल्ही, छेल्ही ढाकू ब्राघ :–

हुक्का। चिलम के अन्दर तम्बाकू और उसके ऊपर आग होती है। यह चिलम हुक्के के सिरे पर रखी होती है। सिरे पर होने के कारण उसे स्वर्ग की उपमा दी गई है। हुक्के के निचले तले पर अन्दर पानी भरा होता है जो तम्बाकू पीने पर गुड़–गुड़ की आवाज़ करता है मानो बिजली के गड़गड़ाने की आवाज हो रही हो। चिलम हुक्के को पकड़ती है और हुक्का नड़ी को पकड़ता है।

४.कायथ मोटा, कथ्याणी दुबळी, बाझी पाणी सीडा उबळी :–

अनाज के दाने भुनने के उपकरण। भुनने का पात्र (वर्तन) मोटी–धातु का बना होता है। दानों को हिलाने वाला झाडू पतला होता है। सूखे दाने उस भुनने वाले अति गर्म–पात्र में बिना पानी के ही उबल रहे है। सूखे दाने सीडों (समोसे के समकक्ष) की भान्ति बिना पानी के उबल रहे हैं।

५.पार बखाड़ेजोजळू घौर, पाथरा लागी फौरा–फौर :–

रींघळ (भिड़) का छत्ता। भिड़ का छत्ता पुराने खण्डहर मकान जैसा दिखाई देता है। उसमें से निकलते हुए भिड़ ऐसे लगते हैं जैसे उस घर में से पत्थर गिर रही हों।

Digitised by
Tharah Kardu

भरती जाती है और पूंछ—रूपी धागा धरती की ओर छोड़ती जाती है।

१३.पारह'न' ओरू आई तैंगबतैंगी,चार दोहडू छतरी नैंगी :—(तितली—जीऊ)

तितली सदैव टेढ़ी—मढ़ी उड़ती हुई चलती है और उसके चार बड़—बड़े पँख होते हैं जो रंग—विरंगे दोहडू की तरह लगते हैं। परन्तु उसकी पूंछ नंगी रहती है।

१४.माटे हेठै निकता सूआ, ईए बाबा ऐ की हुआ:— (गुच्छी=छुंछरू)

कहते हैं कि गुच्छी चैत—मास में(वसन्त—ऋतु में) वादलों की गड़गड़ाहट के साथ धरती से बाहर फूट पड़ती है और वह निकलते समय सूए के आकार की होती हैं। यह एक आश्चर्य की बात है।

१५.लाहूला भोट श्रीकोट, धौरती आंजा धारा पोट :—(कद्दू और उसकी बेल)

कद्दू का आकार मंगोल—जाति के मनुष्य के सिर की तरह गोल—मटोल होता है। इसीलिए इसे लाहूला—भोट की संज्ञा दी है। कद्दू ऊँचे पेड़ या झाड़ियों पर रहता है, इसीलिए इसे श्रीकोट कहा गया है और उसकी बेल नीचे धरती पर ही उगती है। जो आन्त (आंज) की तरह ही लगती है। कद्दू आदमी के पट (पोट) की भान्ति लगता है।

१६. सूने रै माणछू शुड़क हुड़ने, शुड़क गुहाड़ने :—(आंखें)

अति सुन्दर होने के कारण आंखें सोने के बक्स हैं। उन्हें मूंदते और खोलते समय कोई ध्वनि नहीं उठती। उनको चुपके से खोला और बन्द किया जाता है।

१७.पांज सात नौ तेरह, बड़ी चतर सुती सवेरा :—(मान्दरी)

एक विशेष घास अर्थात धान की पराली को छोटी—छोटी गुछी बनाकर उन्हें पतली सी रस्सी द्वारा बान्ध कर एक कुशासन (मान्दरी) बनाई जाती है। इस मान्दरी को अनेक प्रकार की शैलियों में बान्धा जाता है। इसे पांच, सात, नौ, ग्यारह, तेरह स्थानों में लगभग ८—९ इंच के अन्तर पर सूतड़ियों से बान्धा जाता है। यह कुशासन विछावन के स्थान परे प्रयोग की जाती है।

१८.होछणा फिड़कू,बडड़ा पेट,हाण्डी—फिरी एजा मण्डी सकेत:— (सिक्का)

सिक्के में जड़ी प्रतिमा लघु आकार की होती है। परन्तु उसका

tharahkardu.in

६.इतनी तितली तिनतिनान्दी,बड्डी होन्दी ता राजै बै जान्दी :–

च्युंटी छोटी सी और दुर्बल सी लगती है परन्तु लगातार

परिश्रम करती रहने के कारण अधिक प्रशंसनीय होती है। यदि उसका आकार प्रकार और डील–डौल कुछ बड़ा होता तो राजा उसे अपने यहां ले ताता।

७.इतनी तितली तनेढ़ा, ऊँघे हेरा वासकी नागा रा बेढ़ा :– (दर्पण)

यह छोटा सा एक शृंगारिक–पात्र है परन्तु इसमें बड़े से बड़ा महल भी नज़र आता है। दर्पण में प्रतिबिम्ब नीचे की ओर दिखाई देता है।

८.चीज अपनी बरता होरा :–(नाम)

हम सब का नाम ही अपना होता है परन्तु अन्य लोग ही इसे उपयोग में लाते हैं। अपना नाम स्वयं ही कोई नहीं पुकारता।

९.दूई भाई री एके आंज :–(बूमणी)

यह एक चान्दी की बनी हुई तीन–चार लड़ियों की लगभग डेढ़–दो फुट लम्बी ज़जीरें होती है। जिनके दोनो सिरों पर सूए के आकार के दो हुक जुड़े होते हैं
जैसे दोनो की एक ही अन्तड़ी हो।

१०.लट–फट सब साओ, तीन मुण्ड दा पाओ:–(हाळी, हल–बैल)

हल का सारा सामान है। तीन सिर (एक हाळी का और दो बैल के) दस पाओं (दो हाळी के और आठ बैलों के)।

११.एकै भाई,पेटे दान्द :–(कद्दू)

कद्दू के अन्दर बीजों की लड़ियां होती हैं जो दान्तों की माला के समान लगते हैं।

१२.शुकी काठी लाई शलंका, गुणी उकता लंका :–(ऊन और तकली)

तकली सूखी लकड़ी की बनी होती है, वह अपने अक्ष के गिर्द घूमती हुई आवाज़ करती है। ऊन की पूनी लंगूर की पूंछ की तरह लगती है। ऊन की पूनी हनुमान की भान्ति आकाश की ओर उड़ान

Digitised by
Tharah Kardu

हाला बड़ा होता है जिसकी पेट से तुलना की गई है। यह हाथों–हाथ दूर ए–दूर तक जाकर फिर लौट के भी आ जाता है।

१९.तुबक–तागा, फूल ता शोभला वास न लागा :– (कलगी)

कलगी में लगने वाला फूल बड़ा सुन्दर और बहुमूल्य तो अवश्य होता है परन्तु वह सुगन्धित नही होता।

२०.सौरा रै बीड़ा बाकरू चौरा, सौर शुका ता बाकरू मौरा :– (दीपक)

तेल से लबालब भरा दीपक, पानी से भरे तालाब की भान्ति लगता है। इसी तालाब–रूपी दीपक के किनारे पर प्रज्ज्वलित दीपक की लौ होती है। यह बाकरू रूपी लौ के जीवन का अस्तिव तभी तक है जब तक दीपक तें तेल है।

२१.पारै'न'ओरू आणू लोहे रा ल्हींग, तेई घसीटदै पांज ठींग :– (सूआ या सूई)

किसी कपड़े पर सिलाई करने के लिए सूई को हाथ की पांच उंगलिओं से पकड़ कर ज़ोर लगाकर घसीटा या खींचा जाता है।

२२ तिल भर जोगी, जौ भर जट्टा, है ज्ञान ता बता, नीं ता घर लट्टा–फट्टा :–(आंख)

आंख छोटी सी होती है और छोटे–छोटे ही भवौं और आंखों के बाल होते हैं।

२३.जेतरै गैणी तारे, तेतरै मेरे खौटदै ज्वारै :–(छानणी)

छानणी के छेद आकाश के तारों की भान्ति अनगिनत होते हैं।

२४.बाई रै नाळै छोकरा, मूण्डा पान्दै टोकरा :– (लींगड़)

लींगड़ वनों प्राकृतिक रूप से वसन्त–ऋतु में पैदा होने वाली एक सब्जी है। यह धरती से ऊपर तक एक वालिष्ठ भर ऊँची एक ही डण्डी लगती है। इसका सिरो गोलाकार टोकरे की भान्ति बना होता है। इसकी सब्जी और आचार के स्वादिष्ट पकवान बनते हैं।

२५.एक जण एण्डा घोरी, न खान्दा आपू न देन्दा होरी :– (ताला)

खाने–पीने एवं अन्य बहुमूल्य वस्तुएं किसी बक्से में रखकर बाहर से ताला लगाया जाता है। वह उन वस्तुओं को न तो स्वयं खाता है और न ही दूसरों को खाने देता है।

tharahkardu.in

२६. .चार बहणी चुरपुरान्दी,पांजा भाई केरा टक्क,
जांघ चकणी ऐंहगी—बहंगी, गल बेशणी पक्क :— (रछ)

रछ में चार बरूएँ होती हैं जो बुनते समय चुरपुर—चुरपुर ध्वनि करती हैं। पांचवां हथ्था होता है जो टक्क की आवाज़ करता है। पैरों को बार—बार उठाते—बैठाते हैं, इस प्रकार कपड़ा तैयार होता है।

२७..माणछी कोठै नी आकदा,मूठा आन्थरै आका :— (तूबक—बन्दूक)

बन्दूक को कोठे और बक्से में नहीं रखा जाता, अपितु हाथ और मुट्ठी में पकड़ते हैं। घर में भी दीवार के सहारे टांगकर रखा जाता है।

२८. पारह'न'ओहरू आऊ कायथ कोळा,
शेती सुथणी कोहड़ा चोळा :— (हुक्का)

हुक्के का कोठा चमकदार कांसे का बना होता है और उसके ऊपर का भाग जो काष्ठ निर्मित कलात्मक—शैली से बना हुआ होता है, जिस के सिरे पर तम्बाकू की चिलम रखी होती है,का रंग भूरा होता है।

२९.सौंघा—सौंघा आऊ नानकदास, तैइरै नी हाड़ न मास :— (छाया)

छाया जीवधारी के साथ—साथ चलती है परन्तु उसके पास न ही हाड़ होता है और न ही मांस होता है।

३०.जैबै होन्दा तैबै तू नी खान्दा,जैबै नी ओथी तैबैपै खाऊ :— (बैल)

यदि मेरे पास पूंछ होती, तब तू मुझे न काट सकता, मेरे पास पूंछ नहीं है इसलिए तू मुझे काटता है।

३१.पारा ओरहू आऊ ठेरनू—ठौर,राम ध्रीघड़ी दूधा री रौड :— (मुश्क नाफा)

उसकी चाल ठेरनू (धागा वाटने का तकला) की तरह घूमती सी होती है। उसकी खाल घने और मोटे बालों के कारण मोटी होती है और विछाने के काम आती है।उसकी टांगें सफैद दूध सी होती है। रौड=टांग।

३२. जैंग—बजैंगी बुचकू आळी,नेसरे—तेसरे वासा,
काळू वज़ीरे अपणी धीनी, बुझ दमोदर खौशा :—(घरटणू— 'फिल')

फिल ;ैदंपसद्ध की पीठ पर एक खोल होता है जिस के भीतर वह भयभीत होनेपर छुपती है। यह पहेली किसी कालू वजीर ने दमोदर

Digitised by
Tharah Kardu

खश को सुनाई थी।

३३. **पोरही पेशा झटपटे,ओरहू खोलणा कमाई,**

सिरा खोलणी टोपी,थूक भी लेणा पाई :—(कांटा चुभणा और उसे निकालना)

कांटा तुरन्त चुभ जाता है, परन्तु उसे निकालते हुए समय लगता है। सूई टोपी में रखी होती है। सूई टोपी से निकाल कर तथा कांटा चुभने वाले स्थान पर थूक लगाकर साफ किया जाता है ताकि कांटा स्पष्ट दिखाई दे।

३४.जानू—मानू उकते डाळे, बाब शेते बेटे काळे :— (मींघा)

यह एक जंगली बेल होती है,जिसकी जड़ में एक कन्द होता है।उसे कच्चा एवं भूनकर खाते हैं यह सफैद रंग का होता है। इसकी बेल झाड़ियों पर चढ़ती है और उसपर छोटे—छोटे काले रंग के बीज लगते है। अत: बाप शेते और बेटे काले होते हैं।

३५.चलदी—चलदी दिन—रात,चतुर को पूछो क्या बात:—(नब्ज़)अर्थात 'नाड़ी)—

नब्ज़ दिन—रात चलती रहती है। वैद्य उसे जनने में चतुर होता है। अत: रोग का निदान शीघ्र होता है।

३६. **"घौर चीणू चंगा—चोखा,केलिए लाए दार,**

अष्ट कुळी देवते बेठे, फूला बराबर भार":— (सेहरा)

सेहरा पवित्र फूलों से एवं पक्के धागे द्वारा बनाया जाता है। वेदी की स्थापना करके अष्टकुल के देवताओं को स्थापित किया जाता है। तत्पश्चात् वर को सेहरा पहनाया जाता है। यह सेहरा भी फूलों के समान हलका होता है।

३७. **गौहरू रीछ, हाण्डे बै भात, कनौळी बे पीछ** :— (खनोर)

यह जंगली पेड़ में लगने वाला काले रंग का फल होता है। इस पेड़ व फल का डील—डौल अखरोट के पेड व फल की ही भान्ति होता है परन्तु इसके फल की गिरी का स्वाद कड़वाहट लिए होता है। इसके फल

tharahkardu.in

को कूट–पीस कर किसी वर्तन में रख कर सप्ताह भर ठण्डे पानी में रख छोड़ते हैं, तब तक इसकी कड़वाहट लगभग समाप्त हो जाती है।

पानी में रखने से पूर्व इसे धोकर छाना जाता है। छाने हुए पानी को भी सप्ताह–भर ताजे–ठण्डे पानी में रखा जाता है जिससे इसका सफूफ नीचे बैठ जाता है अऔर पानी को निथार कर फैंक देते हैं। कूटे हुए खनोर के मोटे भाग से 'भात' तथा बारीक भाग से, जो कि पिछ के समान होता है, इसी से 'सीका' बनता है जो व्रत आदि में फलाहर के काम आता है। सीक से बना खाद्य–पदार्थ एक अत्यधिक पौष्टिक आहार होता है।

३८.आछी शांगरी कान टूरे, एसा चीजा रै सी लच्छण बुरे :— (बिल्ली)

बिल्ली की आंखें शांगरी (कालिमा रहित) होती हैं और कान टूरे (खड़े) होते हैं। इस प्रकार के लक्षण वाले जीव हिंसक–वृति के होते हैं।

३९.बौडड़िए बखो–बख, होछणिएं कौठै–केठ:—(कात ता सीउण)—(कैंची और सूई)

कैंची आकार में बड़ी होने के कारण जुड़ी हुई किसी भी वस्तु को काट–ठांट कर अलग–अलग कर देती है परन्तु सूई एक छोटे आकार की होने पर भी टुकड़े–टुकड़े हुए कपड़े या अन्य वस्तुओं को

सिलाई करके तथा जोड़ करक इकट्ठा कर देती है। कैंची बांटने की प्रक्रिया निभाती है और सूई जोड़ने की।

४०.उथळै तौंगे बाण्ढै–मलंगा रा डेरा, पाच नी आथी फूल बहतेरा :— (गीड़ाणा)

बरसात के दिनों में अत्यधिक वर्षा के कारण वनों में कई प्रकार की झाड़ियों पर विभिन्न प्रकार की घास की बेलें उगती हैं। इनमें से एक ऐसी बेल है जो बिना पत्तों की है परन्तु उसमें फूल अधिक मात्रा में लगते हैं परन्तु फल नहीं लगते और इसकी कलमें अन्य स्थान पर लगाने से नहीं लगती। इालिए यह बेलें बेकार और बोझ सी लगती हैं।

४१.सरगा'न' झौड़ी लोहे री लाठ, धरनी मारै शौऊ–शाठ :— (ऊखल और मूसल)

Digitised by
Tharah Kardu

कम से कम तीन–चार फुट लम्बे–चौड़े पत्थर को गोल घेरे में लोहे की छेनी द्वारा लगभग डेढ़–दो फुट गहरा गढा तैयार किया जाता है। इस गड्ढे का सिरे का घेरा (वृत) लगभग दो–अढ़ाई फुट के आस–पास होता है और निचला सिरा केवल तीन–चार इंच के आस–पास होता है। इसे ही ऊखल कहते हैं। इसमें ऐसे अनाज कूटे जाते हें जिन में छिलके होते हैंया कोई अन्य वस्तुओं को बारीक बनाने के लिए कूटा जाता है। कूटने के लिए तीन से चार फुट लम्बा और अढ़ाई–तीन इंच मोटा एक कठोर लकड़ी से बना भारी काठ होता है जिसे मूसल कहते हैं। मूसल को दोनो हाथ से पकड़ कर, ऊपर उठाकर ऊखल में पड़े दानों पर चोट मारी जाती है जिससे अनाज के दानो के छिलके दानों से अलग हो जाते हैं।

४२.तुरकी नाओ मूची–मूची, खोआ देश गराओ :– (जीभ)

मुंह में पानी आता रहता है। उसे हम सब बाहर थूकते हैं। कई असभ्य लोग नियम का उल्लंघन कर जहां–कहीं थूक देते हैं। इसी प्रकार स्थान विशेष का ध्यान न करके प्रत्येक स्थान को गन्दा कर डालते हैं।

४३.ऐ..ऐ..एहः :– (दीपक, बिजली आदि का अचानक बुझ जाना)

जब दीपक, बिजली आदि एकदम बुझने लगते हैं तब हमारे मुंह से स्वतः यह शब्द निकलते हैं–.ऐ..ऐ..एहः ।

४४.बाई रै नाळै बड़ा द्रोल्ही, तीर–कमान निसी धौरनी तौल्हीः– (लींगड़)

यह वन–क्षेत्रों,नदी–नालों एवं सैलाबी स्थानों पर पैदा होने वाली सब्ज़ी है। अधिकतर इसका आचार बनाया जाता है। इसका पौधा धरती से लगभग एक फुट तक ऊँचा उठता है और इसके सिरे पर धरती से उगते ही चक्कर की भान्ति एक गोलाकार घेरा सा बन जाता है। इस प्रकार इसका आकार–प्रकार एक धनुष पर लगे तीर की भान्ति हा जाता है। ऐसा लगता है कि इसका तीर धरती से ऊपर नहीं उठ रहा है।

४५. **छिरबिरी पाची,भुर–भुरे फौळ,जे न बूझे ता चोडनी रौळः**–(धनियां का पौधा)

धनियां के पौधे की पतली और छोटी–छोटी जाली जैसो पतियां

tharahkardu.in

होती हैं और इसका बीज गोल और भुर–भुरा होता है।

४६.**बौंहदी गंगा, बाहुड़ी मिटदा खुड़ा टांगा** :– (घराट)

घर में पहली मंज़िल को खुड़ और दूसरी मंज़िल को बाहुड़ कहते हैं। घराट की पहली मंजिल में बहता हुआ पानी होता है और घराट बाहुड़ी में लगा होता है। घराट की टर्बाइन जैसी टाँगें खुड़ में अधिक शक्ति से बहते पानी में फिट की जाती हैं। पानी की शक्ति से टर्बाइन घूमने लगती है और फिर बाहुड़ में लगा घराट बड़े ज़ोर से घूमने लगता है जिससे बाहुड़ अधिक कम्पन्न–शक्ति से हिलने लगती है। जिस प्रकार देवते के गूर के पास खेल आने से गूर के शरीर में अधिक कम्पन्न–शक्ति पैदा होती है जिस से पूरी बाहुड़ हिलने लगती है। गूर की इस कम्पन्न–शक्ति को छेरना, उभरना तथा मीटना कहते हैं।

४७.**सूरजा–चन्द्रा लागी लड़ाई,फाफाकूटण धृयालदी आई**:–(ताला, कुण्डा और चाबी)

ताला कुण्डे में फंसा हुआ होता है। मानों दोनों आपस में गुथमगुत्था होरहे हों। चाबी बीच–बचाव करके उन्हें अलग–अलग कर देती है।

४८.**बुझ मेरी बुझाउणी, काना पीछे डाहणी** :– (पैन्सिल व लेखनी)

लिखते–लिखते अचानक कोई काम आ पड़े तो लेखनी को कान के पीछे रखा जाता है। लेखनी को कान के पीछे लटकाने की यह आदत आज भी है।

४९.**चीई भाई एके पगड़ी** :– (धलान–आग पर रखने का लोहे का बना तिपाईनुमा उपकरण) इस पर तवा,पतीला आदि खाने–पकाने के उपकरण रखे जाते हैं।

५०.**सरगा आई काली बोग, तेसे मारै सेभै लोग** :– (रात)

रात काली होती है और रात को सब लोग नींद में अचेत होते हैं अर्थात सो जाते हैं।

५१.**उथळै तौंगै तंग तौड़ा,हेरना शोभ्ल रखाणा कौड़ा** :–(डोडा)

Digitised by
Tharah Kardu

प्राकृतिक रूप से उगे पेड़ पर 'डोडा' नामक एक फल लगता है। वह देखनू में बड़ा सुन्दर लगता है परन्तु उसमें कड़वाहट अधिक होती है। यह ऊनी कपड़े धोने के लिए उपयोग में लाया जाता है।

५२.मारा बौडी डींग,घौरिव का चारा शींग :– (फिल्ल–स्नेल) ;दंपसद्ध

यह जीव अपने सींगों को ऊपर उठा कर सीधी चलती है जैसे कोई स्वाभिमानी पुरुष चलता है। परन्तु इसे यदि छोटा सा भी भय अनुभव होने लगे तो यह अपने सींगों को सिकोड़ कर छुपा लेती है और निर्जीव सी बनी रहती है। इ

tharahkardu.in

छूम्बे, लामण, भौंरू, दोहे

"नाळा चारी भेड़ा—बौकरी, धारा लाए लामणू—दोहे,
छेके फीरी घौराबै लोभिया, झूरी नी रौहे दाही रै कोए"

१."काटी दै परमेसरा मोह—माया रा फान्दा,
छूटा लोड़ी सदा—सदा बै मौरने जीणे रा धान्धा।"
२."देऊ—नारायणा तेरा उजळा मुखा,
नाड़ी भाळी दे ओकती, काटी छाती रै दुःखा"
३."डूघै नाळै रा सोलंग—गौहर, धारा पान्धा ली कांठी,
महीने री लागी गिनती,ध्याड़ी री पन्द्रह सोठी।"
४."ध्याड़ा उड़िए बादली निकती रेहा,
ध्याड़ काटी म्हीने री, महीना वौर्षा ज़ेहा।"
५."बिझी गौणिऐं तारा निकता हीरू,
सोठ आई रीझै री झूरी री, फेर चाउड़ी फिरू।"
६."धारा री काईली चूटी नाठी जलाड़ै,
नई धीने चिट्ठी कागदा, नाइं गौला रै फ्याड़ै।"
९."माहूं कोहळा,भौउरू घेरी रा चिट्ठा,
ठारा जाति रा खाऊ टुकरा, कासा जाति रा मीठा।"
१०."बुरा नी सूंचणा, बुरै एजा सा रोई,
गोपी शोट मेरी छातिए, तौभै की बधकी होई।"
११."ऊझे गौहरै जोड़ी सिंहां रै जोधै,
आशू भौर्हे आखड़ू, हीकड़ू भौहूं क्रोधै।"
१३."खोड़ खाए भूजी, हाथड़ू धोउणै दूधै,
आसै चाले घौरा बै, तुसै न औळ बूझै।"
१४."घीआ—घिआउळी, बींडू रींगदी माखी,
जौखे लागा लालचा, तौखे नी टौलदी आखी।"

Digitised by
Tharah Kardu

१५. "छूटा पाणिएं,टीपू–टीपू रै ढाळै,
बाता भीगे बातणू, बौणा फुआल–गुआळै।"
१६. "घाटिए गौहिए,छूटा पाणी रा छाला,
मेरी भीगी सिरा री पागड़ी, तेरा लूंगी दशाला।"
१७. "कोल्हा री कोइला, घेरी–फेरिए रोई,
तुसा बै झूरदी देश–दुनियां,आसा बै नी झूरदा कोई।"
१८. "घाह लौऊ घाहणिएं, जोड़ी खौरशू डाळै,
केती दिन काटणे निहाळदै–भाळदै,बौणा बूटा रै हाळै।"
१९. "निम्बू–गाम्भरू हाथे–हाथे नचाऊ,
जैबै मुकी वासना, बौहदी नदी बहाऊ।"
२०. "नीम्बू गाम्भरू खेती–खेती री बागा,
आसै नी पूछदै, तुसा की भरौहरा लागा।"
२१. "लामिए मण्डिए, पौधरी पौड़ी सकेता,
दाणे–पाणी रा रीज़का,कीबै ती एज़णा एता।"
२२. "ठाण्डेआ पाणिया, घुपू–घुपूऐ पीणा,
औखै छूटणा सौभी'न',चौकी नी कौसिऐ नीणा।"
२३. "गैणी गूड़ा गुड़कू,खाटळै दौड़ी घोड़ी,
तेरी तैंई शोभली झूरिऐ, लोहै री शांगळ चोड़ी।"
२४.ज़ोथिए दाईऐ, केरू आसरा तेरा,
लोका रै देशा'न' जाइया, जीऊ दुआसिला मेरा।"
२५. "ज़ोथ लागी चानणी, लागी देहूरे नासे,
माण्हू पछियाण्हिया कौलै बचने,फूल पछियाण्हिया वासै।"
२६. "धारा पान्थली बूटिऐ,ऊटै पौडदे लाहे,
घोरी मिलुये फेरिए, राजी लोड़ी दैवे डाहे।"
२७. "धारा पान्थली बूटिऐ, लामे मारे झलारै,
औहूं केर आपणै हाथडू,पार बै तौरना म्हारै।"
२८. "बेढ़े हेठै जाईरू, बेढ़े पान्थै बजूरी,
ज़ोघा खूखदी पोलड़ी,दिल्लै लोड़ी गोमदी झूरी।"

tharahkardu.in

२९."ज़ोथ लागी चानणी, प्याशा फिरू रखाळी रै नाळे,
आधी शाती बादळै, आधी कूई रै डाळै।"

३०."सान्हा–सान्हिऐं, मागा सजीउटी तेला,
मूर्ख मांगा नीन्द्र, चतर जीउआ री खेला।"

३१."बीझिऐ गैणिऐ, बादली मारू गरूडू,
थारै नाठै जानी रै बैरी, म्हारै छाती रै जूडू।"

३२."मांहू कोहळा, भौंउरू गाची रा चीठा,
कीता लोड़ी गोंठी–पालै रा,कीता जभानी रा मीठा।"

३३."कुंगुए धोई कोठड़ी, केसरे धोई पटारी,
साथिऐ धोऐ कापड़े, केरी नाशणी त्यारी।"

३४."शिल चिफळी,पीशू गूमा रा लूणा,
डाळा–पाचा री झूरिऐ, केतरै दिना बै हूणा।"

३५."काळेआ बादळा, जोता पोहूँ ना नाशे,
तेथ म्हारै साथा रै सौघणु, तीना नी शौगसे गाशै।"

३६."बीझ सौरगा, नाश जलोड़ी रै हींउआ,
घार शाता वौसणा,सिंघा मण्डयाळा री सींउआं।"

३७."एक नी चीणनी, जोता हेठली भूंई,
काती लागा डींहदा, शाढ़े पौड़ा लुम्बरू धूंई"

३८."ऊझे गौहरा जोड़ी मनाळे रै बच्चे,
लोका देई तू बोलणे, म्हारे सी जीउडू सच्चे।"

३९."बिझिए गैणिए जगमगदी तारै,
लोक दे बोलणे सौंघ नी छाडनी म्हारै।"

४०."शाढ़ै बाठे जगैन्द्रे, शौईरै बाठी सलीली,
छेके–छेके चल भेड़िए, काण्डे मूका लोसर खिली।"

४१."शाढ़े खाईया, गूटी शेटी शडोगी,
तुसै हौन्दै घौर गृहस्थी, आसै सी चौलदै जोगी।"

४२."शाढी खाठए, गूटी पाउणी गौहे,
बारुही मिलु मैं वौर्षा, रीत डाहणी सौहे।"

Digitised by
Tharah Kardu

४३."गाड टौपी गाहणे,नौदी टपाई दरेई,
चार दिन दै नाशणे, रीति मूकै बौदळ देई,
४४."मेरी तेरी परीतड़ी,वारा–पारा'न' हुई,
हाऊँ सा बागा रा भौंउरा, तू सा तालरू कूई।"
४५."छेड़ केरी छापरै, गौटी शोटी दुआरै,
झूरी सूती कि विहुंदी, शेळै'न' पोषकै मारै।"
४६."छोटेआ छापरा, लामी घिरदी चोई,
भीतरे शूण्हियां झूरी चींजदी, बागा नी हेरनी होई।"
४७."रूपै री कण्ठिए, पातकू लाउणा मीना,
ध्याड़ न्हीसी काटुई, किहां काटणा महीना।"
४८."धारा पान्धे देहुरा, देऊ नचाउणा लाऊ,
दिले गोमदा गाभरू म्हारा, लोड़ी पोगळे आऊ।"
४९. "धारा पान्धे देहुरा, देहुरे पान्धे धौजा,
शाहुरै नी वौसणा, पेउकै रौहिया मौज़ा।"
५०.ध्याड़ा उड़िया, छाएं नाठी घौरा रै घेरे,
व्याली रा केरी जतन, औज एणा पाहुणे तेरे।
५१."चाम्बे री कौळिए, धूम सुहाउणी वासा,
दुई कौळी दै चुंघणें, सौदा नी एज़णा आसा।"
५२."बाता बताणुआ, तेरी फैहना ऊटी,
पीछे केरे नजरा, सिरा सी कलगी चूटी।"
५३."डुघी डिभरी, धीने माछिए घेरे,
बांई आखी रै सानकू, लामे जुटू रै फेरे।"
५४."मेरी तेरी भलिए संगता, जूरे बाजा री जाडी, (जोडी)??
शाढ़े लाई शाउणे, बीह हेरी भौदरे चोड़ी।"
५५."मेरी तेरी भलिए संगता, सीया–रामा री जोड़ी,
दु:ख–सुख भोगू केतरा, झूरी नी ओमरा चोड़ी।"
५६."चौहणी कोठिए, फेर–फिरदी तीरी,
बेशी रौहणा पेउके, हाओ लाणा चौऊ बज़ीरी।"

tharahkardu.in

५७."चौहणी कोठिए, शाणा घौडू शणेशै,
थारी झूरी चौलदी–फिरदी, म्हारी लोके रै देशै।"
५८.डुघी डिभरी, पाणी भौरना टिबै??(डिब्बे)
लोक–लोके री शोहरी, झूरी एबड़ी किब्बे।"
५९."घाह भरिआळका, बान्हे दोहरे काशै,
कूरी नी कूम्बरा, बाता नी बांजिए नाशे।"
६०."थाळू धोइए, थाळू केरी रणूणा,
म्हारे नी बछिआणुए, थाळू धोउंदै कूणा।"
६१."थोड़े झूले चाउड़ी, बोहू झूलदै खोळी,
जैबै लागा दिल दुआसिदा, तैबै चौकी साधु री झोळी।"
६२."कुळू मोंझै बजौरा, मण्डी मौंझै पंजेई,
पापी दुःख नी मुकदै, गंगा तीर्थ न्हैई।"
६३."कुळू मोंझै बजौरा, मण्डी मौंझै टकोली,
मौंझ बौता केरी रौहणा–वौसणा,हुक्का–तमाकू बै होली।"
६४."दान्द छीदरै, लाणी तुंगा री बीड़ी,
एन्दै माण्हू री केरनी आशा, जान्दै माण्हू री हीड़ी।" ,
६५."ठावे बाजी नूयती, झीड़ी रणकी घाण्डी,
थारी काकड़ी छुरछुरान्दी, म्हारी काकड़ी ठाण्डी।"
६६."लौगा रा कोदरा, सूती–बेशिया खाणा,
जौदी मुकला कौदरा, धारा लुम्बरू लाणा।"
६७."नौंउएं घौरै री चाउड़ी, बीड़गू बाजी बशूरी,
फूटी लोड़ी बांसरी, चूटी लोड़ी दूरकी झूरी।"
६८."देशा–देशा 'न'घटिया, गाडा पारला देशा,
हान्डी–हान्डिया खौडा जांघडू, कोए नी बोलदै बेशा।"
६९."धारा लामणा लान्दिए, मीठे तेरे जभाने,
घेर–फेर दे राम्बड़ा, शुणु लोड़ी छौजू रै काने।"
७०."धारा लामणा लान्दिए, लामण लाए झरौरै,
किता होली ऊमरा ढौळदी, किता जाळी दिला रै खौरै।"

Digitised by
Tharah Kardu

७१."खोड़ा री शणिए, लागा बाशदा काओ,
जासा माण्हू री चाहना, सौहे लोड़ी पाहुणा आओ।"
७२.उछटे काण्डे'न', रींगी काळी मनाळी,
बुरा लागा लागदा, काण्डा ती शेटणा ढाळी।"
७३."कातु–गांघड़ी, खाऊ गौहरी रीछै,
भोळे माण्हू लागै मौरदै, बुरै लागै रौंहदै पीछै।"
७४."धोगी लागी दिआउळ, आख लागी कराणे,
बाझी झूरी रै माण्हू, बाझी कुंजी रै शाणे।"
७५."खोडा खडौणे, टींडा टडीहरी नोटी,
म्हारी होआ थी दौरदा, कासा ऊपर शोटी।"
७६."एजदी जुआनिएं डाळ–बूट मरोड़ी,
नाशदी जुआनिएं, लोहै री शांगळ चोड़ी।"
७७."माहूं–नागा रै बाजगी, देवा छमांहू रै रागी,
शोभली रीति रा फुलणू, दौसा री नजरा लागी।"
७८."कोदरा पौंकू डूंडुआ, काउणी पौकी झलारा,
चित्तमन सा होरती, जीऊ झराउणा थारा।"
७९."ऊँधै मौगरू, ऊझै मौगरू गौही,
रीझै रै लोभी री सोठणी,धौरा नी बौणा री रौही।"
८०."कान्ही गूठी री मूंन्दड़ी,गूमे नाठी मळाई,
छेके फिर धौरा बै लोभिया, जुआनी सा ढौळदी आई।"
८१."काळेआ कागा, किबै लागा कगांदा,
राजा बेठा डांडदा, जौंऊ बेठा माणश खान्दा।"
८२."देऊ चम्भुआ, तेरा ऊम्बळा भाणा,
शाह लाऊ चोड़ना, हीका लाऊ पात्थर पाणा।"
८३."बड़ी झूरी नी केरनी, झूरिए लागा झरेआ,
झूरी शोटै धरनी, शाह डाहे पात्थर जेहा।"
८४."सोठी–सोठिया, सोठ केरी भतेरी,
हाथ खोए रांगणी, मुंह खोऊ चितरी हेरी।"

tharahkardu.in

८५."पीणी पीछे पीणसु, चौकी पीछे मलाणा,
छाड़ी देणी दूरै री नौकरी, एबै घौरै बै जाणा।"
८६."हाथी बै लाणी आंगशी, घोड़े बै पाणा लगामा,
लान्ही आखी रै दे सानकू, चौतरा माण्हू रै कामा।"
८७."ढिकळी आई हौळकी, हुई मंगळै वारै,
कि सोठा सौंघणू, कि सोठा पेउकी म्हारै।"
८८."नाई जाणु आपणा, नाई बछाणू बगाना,
दाह—झूरी नी जौसरै दिलै, सौ माण्हू पौशू समाना।"
८९."शाढ़ी खाइया, गूटी डाहणी गौहे,
रीझै लाउंदै सौंघणू, देशे नी मुलखे रौहै।"
९०."फिरनू बैहन, जौआ लागी जळाई,
बागे निकळ दौशिए,पींउळी पोलड़ी लाई।"
९१."नीउळ नीचडा,नेसर लांगा फरोंदा,
कूज़ा कूडा नीचडी, हार नी डाण्डी रा होन्दा।"
९२."चाम्बे री कौळिए, धूम धमाउणी वासा,
दुई कौळी दे चुंघणे, सौ नी एजणा आसा।"
९३."कुपुआ चिड़ुआ, बाशे भूजा खोड़ा री शाःणी,
देश शूणे परजा, बेढ़े लोड़ी शुणू राजे री राणी।"
९४."शहरै री घुघतिऐ, गौहरा किजीबै आई,
भाता खाणे री खाखिऐ, काटू नी बोलदी खाई।"
९५."धारा री काइली, झूड़की पौड़ला ओशा,
किता दे टोकी नाईंदा? कि दै पाका भरोसा।"
९६."कुपुआ चिड़ुआ, बाठा भौर बशाहे,
भौर बौसे आपणा, दौरदा महारी भी डाहे।"
९७."गाड टौपणी गाहणें, किश्ती टौपणी नदी,
रोहे लोड़ी जिउंदै, मिली जाले कदी न कदी।"
९८."उझे गौहरै, कुपु—घुघती बाठे,
जिन्दै माण्हू रौहा सी मिलदै, मूएं जाणे कौखा बै नाठे।"

Digitised by
Tharah Kardu

९९. "जाणे कौखा बै जा सी, मूएं माण्हू री रूहा,
नाई हेरिदै ठुरदै—नाशदै, नाई मिला तिरा री छूहा।"

१००. "गाड़ लांघिए, पोलड़ी बिसरी भ्याळी,
खादळी दीणा बौहणे, निम्बळी लेणी निहाळी।"

१०१. "धारा कळाहिला, दवदारा री बूटी,
ज़ौहे डाळी ढाकणी, सोहे लागी नाशदी चूटी।"

१०२. "कूई रा कोकलू, मांझे पींदळी खोपी,
झीण लागा ती सौभी री, तेरी से दर्द नोखी।"

१०३. "खाड़े बेठे लाहुळै, ढालपुर बैरागी,
कुळू रै देश छाड़िए, कोन्थे नी नाशणी लागी।"

१०४. "नौंआ खुलू कालज, जागे—जागे स्कूला,
हासदे—खेलदे म्हारे गाभरू, जैण्डे डोल्हरू फूला।"

१०५. "बाग लागे बगीचड़ू, भान्ति—भान्ति रै मेवे,
घौर बौणे बांगले, ढेरी लाई ढौवे री सेवे।"

१०६. "खाड़े बेठे लाहुळे, ढालपुर सराज़ी,
एक लाए बाग—बगीचड़ू, दूजी सब्जी भाजी।"

१०७. "सांउईं सेरीए, खौडे काटणे बागे,
राज हुआ आपणा, भाग सौभी रै जागे।"

१०८. "थाचे चौरदा गोरढ़, पाटे चौरदा बीणा,
दुई खुशी रै सौदे, ऋण नी कासी रा दीणा।"

१०९. "पाटुआ गोरला, घेरे आऊ कि फेरे,
रीति बै झूरा सा तौभै, शोभले सी देश भतेरै।"

११०. "देऊ मण्ढारू देहुरै, देवी मण्ढारी बघीरी,
आधी राती रै पौहरै, ठाण्डी लोड़ी बागर फिरी।"

१११. "घुमकू लागी जातरा, सौहा—सौहा री कूणी,
एखा नाठे नाची खेलिए, एखा विपदा दूणी।"

११२. "सांवी चिपणी, सूने—रुपे री नाळी,
जेठ—शाढ़ महीने शौंकी, पोश—माघ पराळी।"

tharahkardu.in

११३. "देऊ नारायणा, तेरे सूने रै मुखा,
भौला केरे संसारा रा, काटे सौभी रै दुःखा।"

११४. "कान्ही गूठी री मूंदड़ी, जेठी गूठी री रौंची,
माण्हू नी धीज़दा कासि'न', दैव केरला पौंची।"

११५. "पीणी पीछे पिणसू, चौकी पीछे मलाणा,
खाए इन्हे घौरा रै झांजटे, फुआल ती जोता बै जाणा।"

११६. "फुआला मेरे भाउआ, तेरी बाकरी टूरी,
म्हारू काण्डे नी बाकरी आणनी, म्हारी सा जोगणी बुरी।"

११७. "शिवजी री आरती, ठाकर—द्वाले री पूजा,
मना—मना रै सौदे, देऊ—देवते सी आपे बूझा।"

११८. "सूने रै बाळूआ, कुकड़ू लाउणा माचू,
थोड़े आए देऊऐ रे देउळू, बोहू झूरी रै जाचू।"

११९. "सूने रै बाळूआ, कुकड़ू भौरना मोती,
कजशली झूरीए, मोहरे न लागसे दोती।"

१२०. "भेड़ा रै थाचड़ू, फेर—फिरदै आगी रै घिआने,
नाईं मिली ध्याड़ी—दपौहरै, नाईं राचकै ध्याने।"

१२१. "रुपा धोउणा निम्बू रै पाणिए, सूने बै लाउणी बानी,
सदा नी रौंहदै शाउण—भद्र, सदा नी भर जुआनी।"

१२२. "देवी हिड़मा, कुळू रै राजै री दादी,
राज धिना कुळू—मकड़सा, ऊझी नग्गरा गादी।"

१२३. "ढौगा नी नाशणा, ढौगा रा पाथरू काळा,
कि चूटा जांघड़ू—बाहडू, किता दान्दा री माळा।"

१२४. "धुईएं—धुईएं देश केरू निहारा,
पाखलै माण्हूआं, घौर पौऊ मौंझला म्हारा।"

१२५. "देऊ मण्ढारिया, चीड़ू गरोझण बाठा,
नवौसा झूरी रै पेउकै, महारा लोड़ी पोगळ नाठा।"

१२६. "म्हारे देशा री लेटड़ी, कुजी—कुई री डाळी,
ओउशै लागी भीगदी, धूपै लागी फिरदी काळी।"

Digitised by
Tharah Kardu

१२५. "देऊ मण्ढारिया, चीड़ू गरोझण बाठा,
नवौसा झूरी रै पेउकै, महारा लोड़ी पोगळ नाठा।"
१२६. "म्हारे देशा री बेटड़ी, कुजी–कुई री डाळी,
ओउशै लागी भीगदी, धूपै लागी फिरदी काळी।"
१२७. "भगवती री आरती, ठाकर–द्वाले री पूजा,
वासा बै बाहणी तुलसी–बाभरी, शोभा बै लाहुळी कूजा।"
१२८. "चीणी रै चाउळा, सोले होले कि पोले,
गौला रै हालरू, रीति रै केढड़े होले।"
१२९. "हुई दपौहरी वेला, एजा दपौहरी खान्दै,
बुरा मते मनदै, म्हारे गरीबा सी एतरे छान्दै।"
१३०. "थारै घौरे रै आंगणे, खिली कूजे री डाळी,
एकी नाते री लागी भानजी, दूजे नाते री साळी।"
१३१. "शुपा–कुणी री जोगणी, खण्डा–धरा रा खेड़ा,
तौ लाऊं भरौहरै, आपू चारनू भेड़ा।"
१३२. "कुपुआ चिड़ुआ, नाठा लारजी मेकै,
बोहू झूरी नी डाहणी, झूरी शोभली एकै।"
१३३. "शिमला री सड़का, चौला ग्रेजा री मिसी,
सूना–रुपा डांगुआ, छाती डांगुई न्हीसी।"
१३४. "पाटुआ अरजा, घेरे आऊ कि फेरे,
जागा–जागा केरी नौकरी, देश नी भाळे भतेरे।"
१३५. "चीटे दान्दडू, लाणी तुंगा री बीड़ी,
एन्दे माण्हू री आशा, जान्दे माण्हू री हीड़ी।"
१३६. "पोषे लागा हींउआं री डीहणा, भद्रे घिरदी धूईं,
झूरी लागी चोड़दी छेउड़ी, पोषे लोड़ी कि भद्रे मूईं।"
१३७. "धारा पान्धे खोखण, डूघे नाळा'न' रेरी,
तैभै धीनी डीगणे, जैबै लामा चौरदी हेरी।"
१३८. "लारा–लप्पै नी लाउंदी, राम्बड़े घौरा री जाई,
फौळी–फूली लोड़ी वक्ता पान्धे, हुई लोड़ी साई–बधाइ।"

tharahkardu.in

१३९. "रुढू ढौगा री छाइएं, लारजी लागला धूपा,
शोभली झूरी रै तोला बराबर, रति भर नी रुपा।"

१४० "शालु छौली रै कुकड़ू, शुके होले कि सीने,
शौजा–काती दे निभणे, गौला होली मग्घर म्हीने।"

Digitised by
Tharah Kardu

संस्कृत–शब्दों से

निस्सृत

लोक–वाणी के शब्द

एवं

'लोक–वाणी कुल्लू में

संस्कृत के

तत्सम् एवं तद्भव शब्द'

tharahkardu.in

देवनागरी—अक्षर "अ,आ" से आरम्भिक शब्द

क्रम०	संस्कृत	भीतरी—सराज की लोक—वाणी	शब्दार्थ—हिन्दी
१	अंश	अंश	भाग
२	अक्षर	आखर	अक्षर
३	अक्षरोहिणी	छौहणी	अक्षरोहिणी
४	अखण्ड	अखण्ड	लगातार
५	अग्नि	आग	आग
६	अग्ने	आगे	आगे
७	अंग	अंग	अंग
८	अङ्गार	डार,नार	कोईला
९	अङ्गुलि	उंगळी	उंगली
१०	अङ्गुष्ठ	गूंठा	अंगूठा
११	अजगर	सराळ	बड़ा—सांप
१२	अञ्जलि	आंदळी	चुल्लू
१३	अधीन	धीन	अधीन
१४	अण्ड	अण्डा	अण्डा
१५	अति	अत्ती	अति
१६	अद्य	आज़	आज
१७	अनादर	अनादर	अपमान
१८	अन्त	अन्त	अन्त
१९	अन्तर	अन्तर	अन्तर,फर्क
२०	अन्धः	अन्धा	अन्धा
२१	अन्न	आन	अनाज
२२	अभिमान	अभुमान	घमण्ड
२३	अमावस्या	आउंस,	अमावस्या
२४	अक्षि	आखी,आछी	आंख
२३	अमावस्या	आउंस,	अमावस्या
२४	अक्षि	आखी,आछी	आंख
२५	अरिष्ट	रिष्टा	अशुभ
२६	अर्गल	आगल	द्वार बन्द करनेका लठ

Digitised by
Tharah Kardu

२७	अर्ध्य	अर्घा	अर्ध्य
२८	अर्ध	आधा	आधा
२९	अलस:	आळस,ळीस	सुस्ती
३०	अवस्था	अवस्थ	अवस्था,उम्र
३१	अशुभ	अशुभ बुरा	बुरा
३२	अश्रु	आशू	आंसू
३३	असुर	असुर	असुर
३४	अस्ति	आस्ती	है
३५	अहंकार	हंकार	घमण्ड
३६	अस्थी	अस्थू	हड्डी
३७	अमृतम्	अमृत	अमृत
३८	अङ्गणम्	आङगण	आंगन
३९	अरिष्ट:,रिष्ट:	रीठा	रीठा
४०	अम्लिका	इमली	इमली
४१	आ:	आ:	आह
४२	आचार्य	गुरू	आचार्य
४३	आत्मन्	आत्मा	आत्मा
४४	आनन्द	आनन्द	आनन्द
४५	आम्र	आम	आम
४६	आलस्य	आळस ळीस	सुस्ती
४७	आलि	आली	सखी
४८	आशा	आशा	आस
४९	आश्रय	आसरा	सहारा
५०	आशाढ़	शाढ़	अशाढ़
५१	अमथ	कपथ	अजीर्ण
५२	अक्षोट:	खोड़	अखरोट

tharahkardu.in

आरम्भिक—शब्द "इ ई"

१	इक्षु	ईछ	गन्ना
२	इच्छा	इच्छया	इच्छा
३	इन्द्र	इन्द्र	इन्द्र
४	इन्द्रिय:	इन्द्री	कामसूत्र के अंग
५	इष्ट	इष्ट	चहेता
६	ईर्ष्या	रीश	जलन, डाह।
७	ईर्ष्यालु	रिशु	रीस करने वाला।
८	ईश्वर	ईशर	ईश्वर।

"उ, ऊ"

१	उग्र	उग्र	भयानक
२	उज्ज्वल	उजळा	उजला
३	उत्तम	उत्तम	बढ़िया
४	उत्तर	उत्तर	जवाब, उत्तर—दिशा
५	उत्साह	उतसाह	हौसला
६	उत्सुक	उत्सुक	उतावला
७	उपवास	पुआस	व्रत
८	उपाध्याय	पुआधा, पाधा	उपाध्याय
९	उष्ट्र	ऊँट	ऊँट
१०	ऊपरी	ऊपर	ऊपर
११	उलूक:	ऊलू	उल्लू
१२	उदुखलम्	ऊखळ	ओखली
१३	ऊर्णा	ऊना, ऊनऊन	
१४	ऊदूसलम	ऊखळ	ओखली
१५	उपद्रव	उपद्रव	गड़बड़

Digitised by
Tharah Kardu

'ऋ' शब्द

१	ऋक्ष	रीछ,भालू	भालू
२	ऋषि	रिषी,रिखी	ऋषि
३	ऋणम्	रीण,धुआर	ऋण
४	ऋणी	रीणी	ऋणी

"ए"

१	एकः	एक	एक
२	एकाग्र	एकाग्र,एक ध्यान,	एकाग्र
३	एकान्त	इकन्त	अकेला
४	एणः	ऐण	गौऊ के थन
५	एळा	इलाइची	इलाइची

"ओ"

१	ओंकार	ओंकार	ओंकार
२	ओष्ठ	ओठ	होंट
३	औषधि	आखती	दवाई

'क'

४	कंसः	कांसा	कांसा
५	कङ्कण काङण		कंकण
६	कङ्काल	कंगाळ	कंकाल
७	कच्छप	कछुआ	कछवा
८	कटु	कड़वा	कड़वा
९	कुटुम्बी	कुटुम्भी	परिवार वाला
१०	कठिन	कठण	कठिन
११	कठोरम्	कठोर	सख्त
१२	कण्टक	काण्डा	कांटा
१३	कण्ठ	कण्ठ	गला
१४	कथा	कथ, कथा	कहानी

tharahkardu.in

११	कठोरम्	कठोर	सख्त
१२	कण्टक	काण्डा	कांटा
१३	कण्ठ	कण्ठ	गला
१४	कथा	कथ, कथा	कहानी
१५	कनिष्ठ	कान्हा	छोटा
१६	कर्पास	कपास	कपास
१७	कर्पूर	कपूर	काफूर???
१८	कलश	कळश	घड़ा
१९	कला	कौला,कल्या	कलाकृति,कारीगिरी
२०	कल्याण	कल्याण	भलाई।
२१	कष्ट	कष्ट	दुःख
२२	काष्ठ	काठ	लकड़ी
२३	काक	कागा	कौआ
२४	कार्तिक	काती	कातक
२५	काल	काळ	समय
२६	कालकूट	काळकूट	विष
२७	कालिका काली,	कालका	देवी का नाम
२८	किम्	क्यों, क्या	क्या
२९	कूकर	कूकर	कुत्ता
३०	कुक्षि	कुच्छ,कुच्छी	कमर
३१	कुम्कुम	कुंगु	कुमकुम
३२	कुम्भकारकुम्हार,	खमार	कुम्हार
३३	कुल	कुळ	वंश, परिवार
३४	कुष्ट	कोढ़	कोढ़
३५	केश	केश	बाल
३६	केसर	केसर	केसर
३७	कोकिल	कोयल	कोयल
३८	कोष	कोष	खज़ाना

Digitised by
Tharah Kardu

३९	कोष्ठ	कोठा	अन्न का भण्डार
४०	कलङ्क	कळंक	धब्बा, दोष।
४१	कच्छम्	कछुआ	कछुआ
४२	कमल	कौंळ	कमल
४३	कपोत	कौंतर	कबूतर
४४	कुक्कट	कुक्कड़,	कुखड़ मुर्गा
४५	कन्या	कन्यां	लड़की
४६	कुट्टिनी	फाफाकूटण	चतुर नारी
४७	कर्ण	कान	कान
४८	कुण्डलम्	कुण्डळ	कुण्डल
४९	कोद्रव:	कोंदरा	कोदों
५०	कदलीवन	काज़ळी—वौण	केले का वन
५१	कपिला	कपली	गौऊ का एक वर्ग
५२	कम्पन	कामण	कांपना
५३	कर	कौर	लगान
५४	कर्पूर	कपूर	काफूर
५५	कस्तूरी	कस्तूरी	कस्तूरी
५६	कुण्डी	कुण्डी	कमण्डलू, कड़ाही

'ख'

१	खण्ड	खण्ड	भाग, टुकड़ा
२	खरजूर	खजूर	खजूर
३	खानि	खान	खान
४	खारि	खार	बीस भार

'ग'

१	गङ्गा	गांगा	गंगा नदी
२	गगन	गैंण	आसमान, आकाश
३	गण	गौण	गिरोह, समूह
४	गरुड़	गरड, गरल	गरुड़

tharahkardu.in

५	गर्धव, गर्दभ,	गाधा	गधा
६	गर्भ	गर्भ	गर्भ
७	गलकम्वल	काम्वळ	गाय बैल के गले लटकता चमड़ा।
८	गायत्री	गायत्री	गायत्री
९	गीतम्	गीत	गीत
१०	गुगलम्	गूगळ	गुग्गुल
११	गुडम्	गुड़	गुड़
१२	गुणम्	गुण	गुण
१३	गुरू	गुरू	गुरू
१४	गृध्र	गीध	गिद्ध
१५	गूढ	गूढ	गहरा
१६	गृह	ग्रीह	घर
१७	गोत्र	गोत्त, गोत	गोत
१८	गोल	गोळ	गोल
१९	ग्रह	ग्रौह	ग्रह
२०	ग्राम	गांव, ग्रांओं	गावों
२१	ग्रास	ग्राह	कौर
२२	गैरिकम्	गेरू	गेरू
२३	गोधुम्	गेहूं	गन्दम
२४	गर्भिणी	गुरभण, गब्भण	गर्भवती
२५	गलः	गौळ	गला
२६	गन्धिका	गन्धक	गन्धक
२७	गण्ढः	गांठा	प्याज
२८	गेन्दुकः	हीन्दु	गेन्द

'घ'

१	घटः	घड़ा	घड़ा
२	घर्म	घाम	गर्मी

Digitised by
Tharah Kardu

३	घास	घाह	घास
४	घृतम	घी,घीऊ	घी
५	घोर	घणा	गहरा
६	घोष	घोष	शब्दों का प्रसारण
७	घण्टा	घांटा, घाण्डी	घण्टा,घण्टी
८	घोटक:,घोट:	घोड़ा	घोड़ा

'च'

९	चञ्चलम् चंचल		चंचल
१०	चन्दनम्	चानण	चन्दन
११	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चान्द
१२	चमर	चौंरी	चंवर
१३	चरण	चरण	पैर
१४	चर्मकार	चमार	चंमार
१५	चाण्डाल	चण्टाळ	चाण्डाल
१६	चूर्ध	चूर्ण, चूरा	चूर्ण,चूरा
१७	चूडा	जूड़ा	जूड़ा
१८	चौर:	चोर	चोर
१९	चणक:	चौणे	चना
२०	चञ्चु	चूंज़	चौंच
२१	चकोरक:	चाकर,चकोर	चकोर
२२	चोल:	चोळा, चोळी	चोली
२३	चालनी	चालणी	छाननी
२४	च	त,ता	और

'छ'

१	छिद्र	छिण्डा	सुराख
२	छल	छोळ	छल
३	छत्र	छत्र	छत्र

tharahkardu.in

'ज'

१	जगत	जगत	संसार
२	जटा	जौटा	लम्बे बाल
३	जनता	जनता	प्रजा
४	जन्म	ज़ाल्म	जन्म
५	जल	ज़ल	पानी
६	जाति	ज़ात	ज़ात
७	जाया	जाई	कन्या
८	जय	ज़य	जय
९	जप, जाप	ज़प, पाठ	जप—पाठ
१०	जागरण	ज़ागरा	जागरण
११	जाल:	जाळ	जाला
१२	जिव्हा	जीभ	जुबान
१३	जीर्ण	नजीरण	जर्जर, क्षीण
१४	ज्योतिष	जोत्श	ज्योतिष
१५	जार:	ज़ार	ज़ार
१६	जामाता	जुआई	जवाई
१७	जङ्घा	जांघा	टांगें
१८	जानु	जान्हू	घुटने
१९	ज्वर:	ज़ौर	बुखार

'झ'

१	झिल्लिका	झिल्ली	झिल्ली

'ट'

१	टङ्क:	टांक	टांक

'ड'

१	डमरू	डमरू	डमरू

Digitised by
Tharah Kardu

'त'

१	तपः	तप, तौप	तप
२	तदा	तौदा, तादी	तब
३	तन्त्र	तन्त्र	तन्त्र
४	तरङ्ग	त्रंग	तरंग
५	ताम्र	चाम्बा	ताम्बा
६	ताव	ताल	तोल, हिम्मत
७	तिथि	तीथ	तिथि
८	तिलक	तिल्क	तिलक
९	तीक्ष्ण	तीछा	तेज़
१०	तितिरः	तीतर	तीतर
११	तालुः	ताळू	तालू
१२	तैलम	तेल	तेल
१३	तुला	तूल	तराजू
१४	तात्	दाद	वृद्धजनों हेतु सम्बाधन
१५	द्रोह	द्रोह	द्रोह
१६	तुष्टः	तुट्ठा	प्रसन्न
१७	???	तुष	धान का छिलका
१८	दरिद्र	दळिद्री	निर्धन
१९	दामोदर	डमोदर	दामोदर

'द'

१	दक्षिण	दक्खण	दक्षिण
२	दण्ड	डाण्ड, डण्डा	दण्ड, डण्डा
३	दन्त	दान्द	दान्त
४	दान	दान, दाण	दान
५	दानव	दानों	दानव
६	दैत्य	दैन्त	दैत
७	दास	दास	सेवक

tharahkardu.in

८	दिनम्	दिन	दिन
९	दिवस	दियुस	मुहूर्त
१०	दधि	दही	दही
११	दक्षिणा	दच्छणा	दक्षिणा
१२	दुःख	दुःख	दुःख
१३	दुग्धम्	दूध	दूध
१४	दीपक,दीप	दीउआ, दीया	दीपक
१५	दुर्बल	दुबळा	दुबला,कमजोर
१६	दुष्ट	दुष्ट	बुरा,दूषित,खोटा
१७	दूर्वा	जूब,जूबा	एक पवित्र घास
१८	दृढ़	दृढ	पक्का
१९	दृष्टान्त	दृष्टान्त	उपमा
२०	देव,देवता	देऊ, देओ	देवता
२१	देवर,	देवर	देवर
२२	देश	देश	देश
२३	देह	देह,देही	शरीर
२४	द्वापर	दुआपर	द्वापर
२५	द्वार	दुआर	दरवाजा
२६	द्रुतम	तुर्त	तुरन्त
२७	दुर्गन्ध	दुर्गन्ध	बदबू
२८	देवदारू	देवदार,दियार	देवदार
२९	द्राक्षा	दाख	दाख
३०	दुहित्री	धोत्री,ध्याउची	दोहती
३१	द्वि	दुई	दो
३२	दैहली	डेहळी	दहलीज
३३	द्रोह	द्रोह	द्रोही

'ध'

१	धनम्	धौन	धन

Digitised by
Tharah Kardu

२	धनी	धौणी	धनवान
३	धनुष	धनुष,धणक	धनुष
४	धरणी	धौरन, धौरती	भूमि पर
५	धम	धर्म	धर्म
६	धातु	धात, धातु	धात
७	धान्यम्	धान	धान
८	धीवर	धीर,झीर	धीवर
९	धूलि	धूल, धूड़,धूड़ा,	धूल
१०	धेनु	धेणु,धीणु	धेनु
११	ध्वजा	धौजा, फलौहरी	ध्वज, झण्डा
१२	धान्यकम्	धनिया	धणियां
१३	धाना	धाणा	भुने हुए दाने
१४	धतुर:	धतुरा	धतुरा
१५	धूम्र	धूं,धूंई	धुआं

'न'

१	न	नांह,नाई	नहीं
२	नक्षत्र	नछत्र	नक्षत्र
३	नगर,नगरी	नगर,नगरी	नगर,नगरी
४	नग्न	नेंगा	नंगा
५	नदी	नदी	नदी
६	नपुंसक	नमर्द	नामर्द
७	नप्तृ	नाई	नाई
८	नर्तन	नाच	नाच
९	नव्य	नौआं	नया
१०	नष्ट	नाश	नाश
११	नासा,नसिका	नाक	नाक
१२	नाग	नाग	नाग
१३	नाट्य	नाटी	नाटी

tharahkardu.in

१४	नाड़ी	नाड़ी	नस
१५	नारायण	नरायण,नराण,	नारायण
१६	नारी	नारी, नार —	नारी
१७	निकट	नेड़	निकट
१८	नित्य	नित्या, नित	सदा
१९	निद्रा	निन्द्रा, नींज,	नीन्द
२०	निन्दा	निन्दिया	निन्दा
२१	निमित	नमित	उद्देश्य
२२	नियम	नीम	नियम
२३	निरन्तर	निरन्तर	लगातार
२४	निर्भर	निर्भर	निर्भर
२५	नि:शङ्क	नशंग	निधड़क
२६	निष्ठा	निष्ठा	ईमान,विश्वास
२७	निश्चय	नींहचा	सन्तोष
२८	नीला	नीला	नीला
२९	नूतन	नौंआं	नया
३०	नैपाली	नर्पाली	नेपाली
३१	ननान्दा	ननद	ननद

'प'

१	पक्ष	पंख,पासा	पांख, तरफ
२	पक्षी	पंछी	परींदा
३	पट्ट	पाट	स्लेट
४	पन्डित	पन्डत	पंडित
५	पति	पति	स्वामी
६	पदवी	पदवी	औहदा
७	पद्धति	पधती	तरीका
८	पत्र	पत्रा	चिट्ठी
९	पर्वत	पर्वत	पहाड़

Digitised by
Tharah Kardu

१०	परिक्रमा	परकर्मा	परिक्रमा
११	पवन	पौण	हवा
१२	पवित्र	पवित्र	साफ
१३	पश्चाताप	पश्चाताप	पछतावा
१४	पश्चिम	पच्छम	पश्चिम
१५	पाखण्ड	पखण्ड	पाखण्ड
१६	पाताल	पताळ	पाताल
१७	पिण्ड	पिण्ड	पिण्ड
१८	पिशाच	पशाच	पिशाच
१९	पुत्र	पुत्र	बेटा
२०	पुण्यम्	पून	पुण्य
२१	पुरुष	पुरख	पुरुष
२२	पुरोहित	प्रोहत	पुरोहित
२३	पूजा	पूज़ा,पूज़	पूजा
२४	पर्व	पर्व	पर्व,त्योहार
२५	पृथ्वी	प्रीथौ	पृथ्वी
२६	प्रजा	पौरजा	प्रजा
२७	प्रत्यक्ष	प्रतछ	स्पष्ट
२८	प्रथा	प्रथा	रिवाज
२९	प्रधान	प्रधान	प्रधान
३०	प्रलय	परलै	प्रलय
३१	प्रश्न	प्रशण	प्रश्न
३२	प्रसन्न	प्रसन्न	खुश
३३	प्रहर	पौहर	पहर
३४	प्राण	प्राण	प्राण
३५	प्रेत	प्रेत	प्रेत
३६	प्रेम	प्रेम	प्रेम
३७	प्रौढ़	प्रौढ़ा	पक्की उमर
३८	पाश	पाशी	फन्दा

tharahkardu.in

३९	प्लुष्ट	प्लुषून्दा	जला हुआ
४०	प्रकाश	पियाशा	रौशनी
४१	पानीयम्	पानी	पानी
४२	पिपासा	प्यास	प्यास
४३	पात्रम्	पाच	पत्रा
४४	पुत्री	पुत्री	बेटी
४५	पौत्री	पोत्री, पोची	पोती
४६	प्रपौत्री	प्रपौत्री	प्रपोती
४७	पौत्र	पोत्रा, पोचा	पोता
४८	पृष्ठम्	पीठ	पीठ
४९	प्रकट:	प्रगटा	प्रकट, ज़ाहिर
५०	प्रस्थ:	पाथा	अन्न नापने का उपकरण
५१	परश्व:	परशी	आने वाला तीसरा दिन
५२	परहथ:	फरज़	बीता हुआ ,, ,,
५३	पवन	पौण	हवा
५४	पारावार	पारला—उवारला,	नदी के दो तट
५५	प्रतिपदा	प्रतिपदा	पक्ष की प्रथम तिथि
५६	प्रमाण	प्रमाण	सबूत

'फ'

१	फलम्	फौळ	फल
२	फाल्गुन	फागुण	फाल्गुन
३	फुल्ल	फूल	फूल

Digitised by
Tharah Kardu

'ब'

१	बन्धनम्	बान्हण	बन्धन
२	बलम्	बौल	बल, जोर
३	बलात्कार	बलात्कार	बलात्कार
४	बहु	बौहू	बहुत
५	बाधा	बाधा	अड़चन
६	बाहु	बाह, बाही	भुजा, बाजू
७	बिन्दु	बिन्दु, बिन्दी	बिन्दु
८	बीजम्	बेजा	बीज
९	बिल्व	बिलो	बिलो (फल)
१०	बुद्धि	बुध	बुद्धि
११	बृहस्पति	ब्रेस्त	वीरवार
१२	बिडाल:	बराळा	बिल्ला
१३	बहू, बधू	बौहू	बहू
१४	बलीवर्द	बौळद	बैल

'भ'

१	भक्त	भगत	भक्त
२	भगिनी	बहण, भीण	बहिन
३	भट्ट	भाट	ब्राह्मण
४	भय	भौया	भय
५	भयंकर	भ्यांकर	डरावना
६	भालुक	भालू	रीछ
७	भाग	भाग	भाग, हिस्सा
८	भाग्य	भाग	भाग्य
९	भाण्ड	भाण्ड, हेसी	हेसी
१०	भिक्षा	भिच्छा	भिक्षा
११	भूत	भूत	भूत
१२	भूमि	भूमि	भूमि

tharahkardu.in

१३	भूर्ज	भूज	भोजपत्र
१४	भोजन	भेजण	खाना
१५	भृकुटि	भ्रावंत	भृकुटि
१६	भ्रम	भर्म	भ्रान्ति,वहम,संशय
१७	भ्रमर	भौंरा	भेवर
१८	भ्रष्ट	भ्रिष्ठ	भ्रष्ट,दूषित
१९	भस्म	भौस,	राख
२०	भिति	भीत	दिवार
२१	भ्रातृज	भतीजा	भतीजा
२२	भङ्गा	भाँग	भाँग—बूटी
२३	भाण्डम्	भाण्डा	वर्तन
२४	भार:	भार	एक राशि विशेष
२५	भे:	हो:	गूर की पुकार

'म'

२६	मकर	मगर(मांछ)	मकर
२७	मक्षिका	म्हाखी, मिहांछी	मक्खी
२८	मणि	मौणी	मणि
२९	मण्डप	मड्प	मण्डप,मञ्च
३०	मण्डूक:	मण्डूका, मैंडका	मेंडक
३१	मत्स्य	माछ,माछी	मछल७६ी
३२	मनुष्य	माणश,माण्हू	मनुष्य
३३	मानव	माण्हू	,,
३४	मन्त्र	मन्त्र	मन्त्र
३५	मन्दिर	मन्दर	मन्दिर
३६	मस्तक	माथा	माथा,सिर
३७	मांस	मांस	मांस
३८	मातुल	मामा—मामी	मामा के घर की रिश्तेदारी
३९	माता	मां,माता	माता

Digitised by
Tharah Kardu

४०	मरीचम्	मिर्च	मिर्च
४१	मात्रा	मात्रा	मिकदार, संख्या
४२	माया	माया	धन
४३	मित्र	मित्र	साला, बहनोई
४४	मुकुट	मुक्ट	मुकुट
४५	मुण्ड	मूण्ड	सिर
४६	मुहूर्त	म्हूरत	मुहूर्त
४७	मूढ़	मूढ़	मूर्ख
४८	मूत्र	मूच	पेशाब
४९	मूर्छा	मूरछा	मूर्छा
५०	मूर्ति	मूर्त	मूर्ति
५१	मूल	मूळ	असली
५२	मूल्य	मूल	कीमत
५३	मूशा	मूशा	चूहा
५४	मोक्ष	मोच्छ	मुक्ति
५५	मिष्ट	मीठा	मीठा
५६	मठः	मठ	मठ
५७	मूङ्गः	मूंग	मूंग
५८	महिशः	महींशा	भैंसा
५९	माषः—मसूरः	माह, मसुर	माश—मसुर
६०	मानुषा	माणश, मौणश	मनुष्य
६१	मूसलः	मूसळ	मूसल
६२	मन्दोदरी	डमोदरी	रावण की राणी
६३	मृग	मृघ	मृग
६४	मुष्टि	मूठ	मुठ्ठी
६५	मंगल	मंगल	भला, कल्याण
६६	मूषकः	मूषा	चूहा

tharahkardu.in

'य'

१	यजमान	जमान, जजमान	यजमान
२	यम	जौंऊ	यमराज
३	यव	ज़ौ	जौ
४	यात्रा	जात्रा, जाचा	यात्रा
५	युग	जुग	युग
६	युद्ध	जुद्ध, जोध	लड़ाई
७	योगी	जोगी	योगी, जोगी
८	यौवन	जोवन	जोवन, जवानी
९	यति	जति	ब्रह्मचारी

'र'

१	रक्त	रक्त, रक्ता	लहु
२	रत्न	रतन	रत्न
३	रथ	रौथ	रथ
४	रस	रौस	रस
५	राक्षस	राक्स	राक्षस
६	रात्रि	राच	रात
७	राशि	राश	राश, ढेर
८	रुचि	रुचि, रुचणा	पसन्द
९	रुप्य:	रपौई	रुपया
१०	राष	रोष	क्रोध
११	रेखा	रेख	रेखा
१२	रिक्तम्	रीता	खाली
१३	रीति	रीत	रिवाज
१४	रक्षांसि	राक्स	राक्षस
१५	रंग	रंग	रंग
१६	रुक्ष	रूखा	रूखा

Digitised by
Tharah Kardu

'ल'

१	लक्ष	लाख	लाख
२	लक्षण	लच्छण	लक्षण
३	लक्ष्मी	लछमी	लक्ष्मी
४	लग्न	लग्न	लग्न
५	लज्जा	लज्या, लाज	लाज
६	लवण	लूण	नमक
७	लशन	ल्हेश्न	लहसुन
८	लाक्षा	लाख	लाख
९	लाभ	लाभ	फायदा
१०	लालसा	लाळच	लालच
११	लिक्षा	लीछा	जूं के अण्डे
१२	लीला	लीला	लीला
१३	लोक	लोग, लोक	लोग, स्थान
१४	लौह	लोहा	लोहा
१५	लाला	लाळा	लार
१६	लवनम्	लौणा, लूणना	घास आदिकाटना १७
	लाञ्छनम्	लांछन	दोष
१८	लवङ्ग	लौंग	लौंग

'व'

१	वंश	वंश	कुल
२	वचन	वचन	वचन
३	वसन्त	वसन्त	वसन्त—ऋतु
४	वस्तु	वस्तु	चीज
५	वाद्य	वाजा	वाजा
६	वानर	वान्दर	बन्दर
७	वार्ता	भारथा	बातचीत
८	वालुक	वाळू	रेत

tharahkardu.in

९	वास	वास	बसना
१०	वास्तु	वास्तु	घर का नाप—नकशा
११	विप्र	विप्र	विप्र
१२	विघ्न	विघ्न	बाधा
१३	विना	विणा,वण्ही,विण्ही	बगैर
१४	विपत्ति	विपता,वीथा	विपति
१५	विभूति	वभूति	राख
१६	विरोध	ब्रोध	विरोध
१७	विश्वास	वशाह	विश्वास
१८	विषम्	विष	विष,ज़हर
१९	वृतान्त	वृतान्त	हाल—चाल
२०	वृथा	वृथा	व्यर्थ
२१	वृन्द	वरिन्द	समूह, झुण्ड,शरीक
२२	वृषभ	विर्ष	साण्ड
२३	वेद	वेद	वेद
२४	वेदी	वेदी	वेदी
२५	वैकुण्ठ	वैकुण्ठ	विष्णु—लोक
२६	वैद्य	वैइद,वैंद	वैद्य
२७	व्याघ्र	वराघ	वाघ
२८	व्याधि	व्याध	रोग
२९	विपाशा	व्यासा	व्यास नदी
३०	बनम्	वौण	वन
३१	विधवा	विधवा	विधवा
३२	वाणिज्यम्	वणज	व्यापार
३३	वंध्य	वांझ,वांण्ठी,	वांझ
३४	विभुक्षा	भूख	भूख
३५	व्याकुल	व्याकुल	बेचैन
३६	विस्मृतम्	विसरना,विसूदा	भूला हुआ
३७	विक्रय	विक्री	बेचना

Digitised by
Tharah Kardu

८	समस्त	सेभ	सब
९	समस्या	समस्या	समस्या
१०	समाधि	समाधी	समाधि
११	समुद्र	समुन्दर	समुन्दर
१२	सर्प	सराळ,सर्प	सांप
१३	साधु	साधु	साधु
१४	साहस	साहस,हौसला	हौसला
१५	सिंह	सींह,सींघ	सिंह
१६	सिद्धि	सिद्धि	सिद्धि
१७	सिन्दूर	सन्धूर	सिन्दूर
१८	सुन्दर	सुन्दर	सुन्दर
१९	सुमेरू	सुमीरू	समेरू
२०	सुरा	सूर	मदिरा
२१	सूकर	सुंगर	सूअर
२२	सूत	सूत्र	सूत का धागा
२३	सूर्य	सूरज	सूरज
२४	सेतु	सेऊ,सेओ	पुल
२५	सेउक	सेउक	नौकर
२६	सैन्धव:	सींधा—लूण	सेन्धा—नमक
२७	स्तोत्र	स्तोत्र	स्तोत्र
२८	स्थाली	थाळी,थाळू	थाली
२९	स्नान	शनान	नहाना
३०	स्पष्ट	स्पष्ट	साफ
३१	स्वप्न	सुपना	सुपना
३२	स्वर्ग	सर्ग, सुरगा	स्वर्ग
३३	स्वस्ति	स्वस्ति	स्वस्ति
३४	स्वादु	स्वादु	स्वादु
३५	सायम्	सांझ	सायंकाल,शाम
३६	संक्रांति	संग्रांद,साजा	संक्रांति

tharahkardu.in

३७	सर	सौर	तालाब
३८	सीमा	सींओं	हद
३९	सारस	सारस	सारस
४०	स्कन्धा	कान्ह,कान्था	कन्धा
४१	स्नुवा	न्हूश	बहू
४२	सिन्दुरम्	सिन्दूर	सिन्दूर
४३	समर्थन	समर्थन	पुष्टि
४४	साधारण	साधारण	सीधा—सादा
४५	साधु	साधु	साधु

'ह'

१	हंस	हांस	हंस
२	हरिण	हर्ण	हीरण
३	हरित	हरा	हरा
४	हरिद्रा	हलदी,हौळज	हलदी
५	हल	हौळ	हल
६	हलाहल	हलाहल	विष
७	हस्त	हाथ	हाथ
८	हस्ति	हाथी	हाथी
९	हिंसा	हिंसा	मारना,पाप
१०	हिम	हीऊँ	वर्फ
११	हेमन्त	हींऊँद	जाड़ा,शरद—ऋतु
१२	हृदय	हिरदा	दिल
१३	हृष्ट—पुष्ट	हृष्ट—पुष्ट	स्वस्थ
१४	हार:	हार	हार
१५	हिंगु	हींग	हींग
१६	ह्य:	हीज़	बीता हुआ कल
१७	हे	हं,ए	हे

Digitised by
Tharah Kardu

'क्ष'

१	क्षमा	छिमा	~~मुआफी~~
२	क्षय	क्षा,क्षाई	क्षीण ;नष्ट होना,
३	क्षार	छार, कसार	राख,भुना मीठाभोग
४	क्षीर	खीर	खीर
५	क्षुर:	छुरा	छुरा
६	क्षेत्र	खेत,खेच	खेत
७	क्षीण	छीण	दुर्बल

'त्र'

१	त्रिफल:	त्रिफळा	त्रिफला
२	त्रुटि	त्रुटि	गलती
३	त्रेता	त्रेता	त्रेता—युग
४	त्रय:	त्राए	तीन

'ज्ञ'

१	ज्ञान	ग्यान	जानकारी

बारह मास के नाम

१	चैत्र	चेत	चेत्र
२	वैशाख	वशाख,वशाह	वैसाख
३	ज्येष्ठ	जेठा	ज्येष्ठ
४	आषाढ़	शाढ़	अशाढ़
५	श्रावण	शाउण	सावन
६	भाद्रपद	भद्र	भादों
७	आश्विन	शौउज	असोज
८	कार्तिक	काती	कातक
९	मार्गशीर्ष	मक्षर,मक्षीर	मग्घर
१०	पौष	पोष	पोह
११	माघ	माघ	माघ
१२	फाल्गुन	फागण	फागुन

tharahkardu.in